यज्ञेन यज्ञं अयजन्त देवाः तानि धर्माणि प्रथमानि आसन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः
(ऋग्वेद १०.१६४.५०)

वेदामृत

(वेदसम्मत सर्वोत्तम हवनविधि की प्राचीनतम प्रक्रिया)

ईश्वर आश्रम ट्रस्ट
निशात-श्रीनगर • जम्मू • दिल्ली • मुम्बई

यज्ञेन यज्ञं अयजन्त देवाः तानि धर्माणि प्रथमानि आसन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः

(ऋग्वेद १.१६४.५०)

वेदामृत

(वेदसम्मत सर्वोत्तम हवनविधि की प्राचीनतम प्रक्रिया)

ईश्वर आश्रम ट्रस्ट
निशात-श्रीनगर • जम्मू • दिल्ली • मुम्बई

प्रकाशक :
ईश्वर आश्रम ट्रस्ट
श्रीनगर आश्रम
इश्बर, निशात, श्रीनगर (कश्मीर)

जम्मू आश्रम :
2 महेन्द्र नगर
कनाल रोड, जम्मू (तवी) - 180016
दूरभाष -0191-2555755

दिल्ली आश्रम :
आर - 5, पॉकेट - डी
सरिता विहार, नई दिल्ली - 110076
दूरभाष - 011-2695 8038

© सारे अधिकार प्रकाशक के अधीन

प्रथम संस्करण : मार्च, 2013

₹ 300/-

मुद्रक :
मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशंस
4225ए, 1 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002

दो शब्द

कश्मीरी सनातन ब्राह्मणों की पुरातन काल से चली आ रही लौगाक्षि-प्रोक्त कर्मकाण्ड विधि सनातन ब्राह्मणों के ब्राह्मणत्व की अनुपम पहचान है।

जन्म से लेकर महाप्रयाण तक के विभिन्न संस्कारों का लेखा-जोखा जिस तन्मयता से लौगाक्षि मुनि ने सनातन ब्राह्मणों के लिए निर्दिष्ट किया है वह एक जीवन्त इतिहास है। यज्ञ साधना तो इन सारे संस्कारों की आधार शिला है। यज्ञानुष्ठान ही द्विजत्व प्राप्ति से मोक्षामृतपान करने का सरलतम सोपान है। साधना के झमेलों से परे रहकर यज्ञों का विधान भी स्वर्ग प्राप्ति के लिए उन्मुक्त द्वार है। इस आदर्श को अपनाकर यज्ञों का अनुष्ठान सनातन ब्राह्मण का प्राण रहा है। कहा है कि–"किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या" अर्थात् यह यज्ञविद्या स्वर्ग स्थित कल्पलता की तरह अद्‌भुत सिद्धियों की दायिका है। वह कौनसी सिद्धि या कौनसी अभीष्ट-प्राप्ति की इच्छा है, जिसकी पूरिका यह यज्ञविद्या नहीं है। इतिहास साक्षी है कि कितने ही ब्रह्मर्षियों, महापुरुषों और गृहस्थियों ने वैदिक यज्ञविधि को अपनाकर सर्वोत्तम पराप्राप्तिपद प्राप्त किया है, क्योंकि इस यज्ञविधि का चमत्कार अपने में अनूठा है।

खेद की बात है कि अपनी जन्मभूमि से निष्कासन के पश्चात् इस साधना के प्रति हमारा उत्साह मन्द होने लगा है। इसके कई कारण हैं। सब से प्रमुख कारण इस यज्ञानुष्ठान विधि के प्रवर्तकों का अभाव है। यद्यपि इने-गिने विद्वानों का संरक्षण इस समय भी इस जोत को जलाये रखा है, फिर भी प्राचीन आदर्श ग्रन्थों का अभाव इस प्रक्रिया के मार्ग में रोड़ा अटकाये रहा है। इस ज्वलन्त समस्या पर बहुत समय से विचार करने के बाद ही

श्री ईश्वरस्वरूप स्वामी लक्ष्मणजू महाराज के द्वारा संस्थापित ईश्वर-आश्रम ट्रस्ट के अधिकारियों की यह उत्कट इच्छा रही है कि किसी-न-किसी प्रकार से यह प्रक्रिया बनी रहे। यहां यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि हमारे प्राणप्रिय सद्गुरुदेव साधना की पराकोटि पर ठहरकर भी इस यज्ञप्रक्रिया के महत्त्व से भलीभांति परिचित थे। जिस अनन्य भक्ति से वे यज्ञानुष्ठान करते थे तथा कर्मकाण्ड की बारीकियों का पालन करते थे वह अवर्णनीय है। कभी-कभार मन में यह शंका उठती थी कि ऐसे महायोगी के लिए इस प्रकार के यज्ञ के दिशा-निर्देशों का अनुपालन क्या उचित है ? पर उनके अनन्यभाव को भांप कर श्रीगीताजी का यह सन्देश शंका निवारक मन्त्र बन जाता था–

"अनन्यश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥"

इस बात को ध्यान में रखकर ईश्वर-आश्रम ट्रस्ट ने इस संपूर्ण वेद-सम्मत यज्ञ विधान के आदर्श ग्रन्थ को लोकोपकार के लिए प्रकाशित कर आज सद्गुरु महाराज की जन्म जयन्ती पर धार्मिक भावना से रंजित भक्तजनों को एक अमूल्य उपहार दिया। यह उपहार अवाच्य, अक्रेय, अक्षय्य और अदुर्भर पाथेय है जिसकी अनर्घता जन्म-जन्मान्तरों तक बनी रहेगी।

आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व काश्मीरिक सौम्यसन्त ज्योतिषाचार्य श्री केशवभट्ट जी ने सीमित साधनों के होते हुए भी कर्मकाण्ड विधि-विधानों की पुस्तकें निर्णयसागर–मुम्बई से प्रकाशित करके लोकोपकार का अश्वमेध यज्ञ रचा था। इनकी अकाट्य सद्भावना के फलस्वरूप ही कश्मीरी पंडितों तथा अन्य सनातन धर्मावलम्बियों का धार्मिक उत्साह आज तक अक्षुण्ण रहा है। सद्गुरु महाराज इन्हें सदा सायुज्य-पदवी पर विराजमान रखे।

सत्कर्म प्रायः विघ्नबहुल होते हैं, अतएव इस योगक्षेमवर्धक प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में भी अनेक बाधायें आईं। पर सद्गुरुदेव के तीव्र

आशीर्वाद के कारण ही यह सत्कार्य सम्पन्न हुआ। इस पुस्तक के दिशा-निर्देशों तथा पुस्तक में आये विधि-विधानों को समय-समय पर समझाकर जिन महानुभावों का प्रश्रय मुझे प्राप्त हुआ उनमें श्री गणेश घाट श्रीनगर वास्तव्य श्री विश्वनाथ राजदान उल्लेखनीय है। 'श्रीव्यनकाक' इस उपनाम से भी प्रसिद्ध कर्मकाण्ड भास्कर ने सांकेतिक सूत्रों को जिस बारीकी से मुझे समझाया उसके लिए मैं सदा उनका ऋणी रहूँगा। निर्वासन काल से यह ज्योतिषाचार्य दिल्ली में ही रहते हैं और दिल्ली के अतिरिक्त अन्य राज्यों में भी इस काश्मीरिक कर्मकाण्ड, जो लुप्तप्राय है, के सतत् प्रचार में कटिबद्ध है। सद्गुरु महाराज इन्हें दीर्घायु प्रदान करे और सद्गति दें। मेरी नवोदित युवापण्डितों से विनम्र प्रार्थना है कि वे इस अमूल्य पुस्तक को वांचें, विधिवत् समझें और निर्देशानुसार इसका उपयोग करके जनमानस में अभीष्ट स्थान प्राप्त करें।

मेरी विभिन्न सद्गुरु आश्रमों के कार्यकर्त्ताओं से नतमस्तक प्रार्थना है कि सद्गुरुओं के निर्वाण जयन्तियों पर इसी पुस्तक का प्रयोग करे और अपनी प्राचीन पराम्परा को बनाये रखे। स्मरणीय है कि स्वनामधन्य ईश्वरस्वरूप स्वामी लक्ष्मण जू महाराज का, अपने गुरुमण्डल के विशेष पर्वों पर, इसी यज्ञ-प्रक्रिया का भक्तिभाव से आचरण, समस्त भक्त समुदाय को नियमबद्ध रहने का नियामक है।

अश्वमेध-यज्ञ के फलभागी ईश्वर-आश्रम ट्रस्ट के सर्वेसर्वा इस आदर्श ग्रन्थ का प्रकाशन करके अनन्त काल तक सर्वसुखसम्पदा के भागीदार होंगे। इसमें दो राय नहीं।

आशा है कि विद्वज्जन इसके रसपान से अननुभूत आनन्द से आप्लावित होंगे, यदि ऐसा होगा तो हम अपने को कृतकृत्य समझेंगे।

आभार

अधोलिखित विद्वानों का मैं आभारी हूँ, इन्होंने समय समय पर अपने बहुमूल्य सुझाव देकर मुझे कृतकृत्य कियाः–

१. श्री प्राणनाथ पण्डिता भरतनगर जम्मूवासी, हमारे ईश्वर आश्रम के स्वामी जी महाराज से सत्कृत कर्मकाण्ड के विद्वान्।

२. श्री मखन लाल वांगनू। नौयडावासी, समाजसेवी, कश्मीरी कर्मकाण्ड के प्रोत्साहन के लिए दत्तचित्त विद्वान् तथा इसके प्रचार व प्रसार के लिए निरन्तर कर्मरत।

३. मेरे गुरुभाई श्री विजयकुमार कौल। इन्होंने अमूल्य सुझाव देकर इस वेदामृत को सत्यमेव अमृतमय बनाया।

४. मुद्रक मिसर्स श्री मेहरचन्द लक्ष्मणदास को हार्दिक धन्यवाद दिये विना इस वेदामृत पुस्तक का अस्तित्व सभ्यविद्वत्जग में संभव होना दुष्कार था। इन्होंने तीन बार सारी पुस्तक का प्रकाशन करके अपना अपूर्व सहयोग दिया।

आश्विन कृष्णपक्ष चतुर्थी
२०१३

जय गुरुदेव

निवेदक
प्रो० मखनलाल कुकिलू

विषयानुक्रमणिका

१.	कलश पूजा	११
२.	यजमानमानीय	४५
३.	अथग्निकुण्डपूजा	५३
४.	अथ पुरोहितपूजा	६८
५.	अथ स्रुक्स्रुवप्रतिपादनम्	६८
६.	पक्षयागविधिः	७२
७.	तत्रादौ गायत्रीब्राह्मणम्	८६
८.	ॐ अथ कूष्माण्डमन्त्रम्	९५
९.	अथ सूक्तानि ग्रहाणाम्	१०६
१०.	अथ विष्णुपंचकम्	१५१
११.	रुद्रपंचकम्	१६२
१२.	देवीपंचकम्	१८६
१३.	रक्षोघ्नमन्त्राख्यं महौषधिसूक्तम्	१९९
१४.	पक्षयाग का शेष भाग	२०१
१५.	वैश्वदेवम् (अन्नकण)	२०५
१६.	श्राद्धविधिः	२०७
१७.	गुरुपूजा	२१९
१८.	आरती	२२१
१९.	अथ उदकलशम्	२२४

इन्द्र कलश

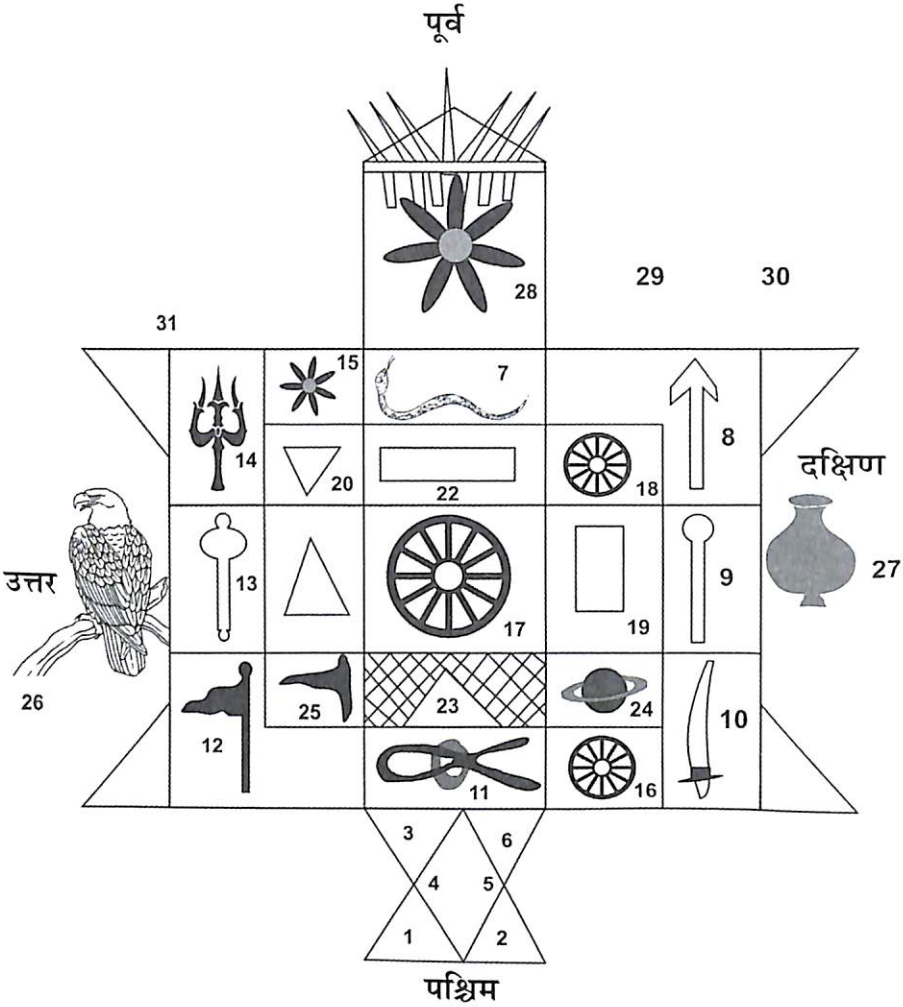

नोट :-

1-16 स्थानों पर एक-एक अखरोट रखने चाहिएं।

17-27 स्थानों पर दो-दो अखरोट रखने चाहिएं।

28 पर अखरोटों से भरा हुआ कलश का बड़ा गड्डा रखना चाहिएं।

इन्द्र कलश में दिये गए अंकों के स्थान पर इन देवताओं के स्थान :-

		अखरोट
१.	श्री गणपति	१
२.	श्री कुमार	१
३.	श्री श्रीः	१
४.	श्री सरस्वती	१
५.	श्री लक्ष्मी।	१
६.	श्री विश्व-कर्मा	१
७.	श्री इन्द्राय वज्र हस्ताय	१
८.	श्री अग्नये शक्ति हस्ताय	१
९.	श्री यमाय दण्ड हस्ताय	१
१०.	श्री नैर्ऋतये खड्ग हस्ताय	१
११.	श्री वरुणाय पाश हस्ताय	१
१२.	श्री वावये ध्वजा हस्ताय	१
१३.	श्री कुबेराय गदा हस्ताय	१
१४.	श्री ईशानाय त्रिशूल हस्ताय	१
१५.	श्री ब्राह्मणे पद्म हस्ताय	१
१६.	श्री विष्णवे चक्र हस्ताय	१
१७.	श्री अग्न्यादित्याभ्यां	२
१८.	श्री वरुण चन्द्रमोभ्यां	२
१९.	श्री कुमार भौमाभ्यां	२
२०.	विष्णु बुधाभ्यां	२
२१.	श्री इन्द्र बृहस्पतिभ्यां	२
२२.	श्री सरस्वती शकाभ्यां	२
२३.	श्री प्रजापति शनिश्चराभ्यां	२
२४.	श्री गणपति राहुभ्यां	२
२५.	श्री रुद्र केतुभ्यां	२
२६.	श्री ब्रह्म ध्रुवाभ्यां	२
२७.	श्री अनन्त अगस्ताभ्यां	२
२८.	अखरोटों और पानी से भरा कलश का बड़ा गड्डा	
२९.	यज्ञ समाग्री	
३०.	घी का जला हुआ दीपक	
३१.	जला हुआ धूप	
३२.	तेल का दीप	

अग्नि कुण्ड चित्र

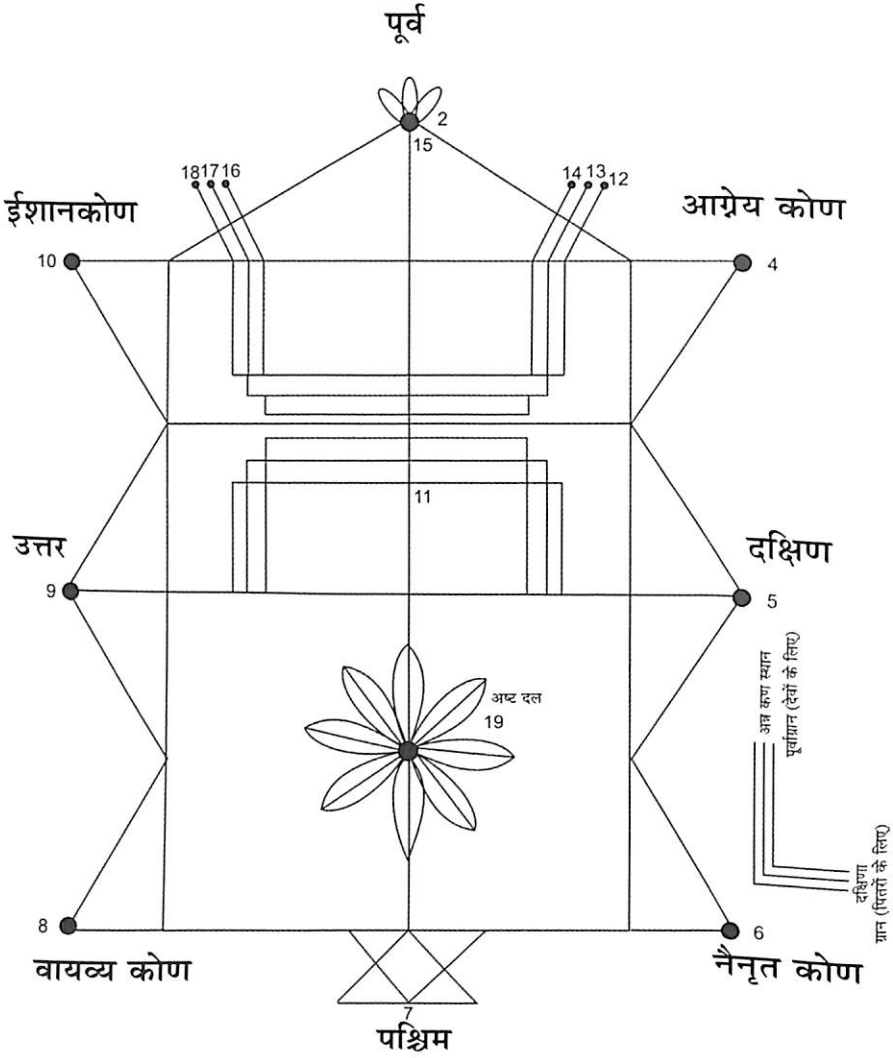
पूर्व
2
15
18 17 16
14 13 12
ईशानकोण
आग्नेय कोण
10
4
11
उत्तर
दक्षिण
9
5
अष्ट दल
19
अन्न कण स्थान
पूर्वाग्रान (देवों के लिए)
दक्षिणा
ग्रान (पितरों के लिए)
8
6
वायव्य कोण
नैनृत कोण
7
पश्चिम

सद्गुरु महाराज की निर्वाण जयन्ती पर अथवा अन्य गुरु मण्डलों के विशेष पर्वों पर किये जा रहे **'यज्ञविशेष'** के लिए आवश्यक जानकारी :–

१. 'यज्ञविशेष' के आरम्भ में सबसे पहले **'श्रीबहुरूपगर्भस्तोत्र'** का पाठ (फलश्रुति के बिना)।

२. इसके पश्चात् **'श्रीगणेशस्तवराज'** का पाठ।

कलश पूजा

अब अध्वर्यु (वेदपाठी पुरोहित) **'कलशपूजा'** विधिपूर्वक आरम्भ करे। **महागायत्री** का ध्यान करें :–

'ॐकारो यस्य मूलं क्रमपद०..... ब्रह्मयोने नमोस्तुते'। उसके पश्चात् 'ओजोऽसीति गायत्रीमावाह्या देवानामार्षम्..... '।

(१) फिर **कल्याणभद्र** का पाठ करे जो 'कल्याणभद्र स्वस्ति नो मिमीतामश्विना' से 'कल्याणं अस्तु' तक है। (कुल ७ ऋचायें)

(२) फिर **अग्निभद्र** का पाठ करे जो 'अग्निः वायु च सूर्यः च०' से लेकर 'मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।' (कुल ८ ऋचायें)

(३) फिर **कनिक्रदत्** नाम **शकुनिभद्रम्** का पाठ करे जो 'कनिक्रदत् ऋचं प्रदक्षिणात् जागत०' से लेकर 'बृहत् वदेम विदथे सुवीरा' तक है। (कुल ११ ऋचायें)

(४) फिर **इन्द्रभद्र** का पाठ करे। यह पाठ 'ऐन्द्रवायव्ये वैश्वदेवाः सारस्वताः द्यावा पृथिव्यो०' से लेकर 'देवाः सीदन्तु यज्ञियाः इहाद्य सोमपीतये' तक है। (कुल ऋचायें ११ हैं)।

(५) फिर **'आनोभद्र'** का पाठ करे। यह पाठ 'आनो दश गौतमो वैश्वदेवन्तु०' से लेकर 'अदितिः जातं अदितिः जनित्वम्' तक है। (कुल १० ऋचायें)

(६) फिर **'अशीतिभद्रं स्वस्त्ययनं'** का पाठ करे। यह पाठ 'भद्रो नो अग्निः सुहवो' से लेकर 'तन्नो मित्रो वरुणो मा महन्तां अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः' तक है। (कुल २१ ऋचायें)

।। आदौ स्वस्त्ययनम् ।।

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः।।

ॐकारो यस्य मूलं क्रमपदजठरं छन्दविस्तीर्णशाखा
ऋक्पत्रं सामपुष्पं यजुरुचितफलं स्यादथर्वा प्रतिष्ठा।
यज्ञच्छाया सुश्वेतैर्द्विजगणमधुपैर्गीयते यस्य नित्यं
शक्तिः सन्ध्या त्रिकालं दुरितभयहरः पातु नो वेदवृक्षः।।
सच्छायः स्थिरधर्ममूलवलयः पुण्यालवालान्वितो
धीविद्याकरुणाक्षमादिविलसद्विस्तीर्णशाखाश्रितः।
सन्तोषोज्ज्वलपल्लवः शुचियशःपुष्पः सदा सत्फलः
सर्वाशापरिपूरको विजयते श्रीवेदकल्पद्रुमः।।
मूलाधाराद्भुतवहकलामिश्रितं भूर्भुवः स्व-
र्ब्रह्मस्थानात्परमगहनात्तत्सवितुर्वरेण्यम्।
भर्गो देवः शशिकलमयी धीमहीत्येकरूपं
धियो यो नः पिब तदमृतं चोदयान्नः परंतत्।।
मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्यु-
क्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयांकुशकरां शूलं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।।
आयातु वरदा देवी त्र्यक्षरा ब्रह्मवादिनी।
गायत्रि! च्छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोस्तु ते।।

।। ऋचकम्।।

ओजोऽसीति गायत्रीमावाह्य देवानामार्षम्।।

ओजोऽसि सहोऽसि बलमसि भ्राजोऽसि देवानां धाम नामासि विश्वमसि विश्वायुः सर्वमसि सर्वायुरभिभूः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।। ३।।

।। कल्याणभद्रम्।।

स्वस्त्यात्रेयः पांक्त्यन्तमग्नेः पञ्चोनाश्चतस्रो गायत्र्यः
षडुष्णिहस्तिस्रोनगत्योऽन्त्याऽनुष्टुभौ बृहती च।।

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना।। १।।
स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः।। २।।
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः।। ३।।
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते ! कृधि।। ४।।
स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददता घ्नता जानता सङ्गमेमहि।। ५।।
स्वस्त्ययनं तार्क्ष्यमरिष्टनेमिं महद्भूतं वायसं देवतानाम्।
असुरघ्नमिन्द्रसखं समत्सु बृहद्यशो नावमिवारुहेम।। ६।।
अंहोमुचमाङ्गिरसं गयं च स्वस्त्यात्रेयं मनसा च तार्क्ष्यम्।
प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये स्वस्ति सम्बाधेष्वभयं नो अस्तु।। ७।।
(कल्याणमस्तु)

।। इति कल्याणभद्रम्।।

।। अथ अग्निभद्रम्।।

अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च वरुणः साम एवच।
ब्रह्म राज्ञ रथश्चैवमित्यष्टावग्निभद्रकम्।।

अग्नये समनमत्पृथिव्यै समनमद्यथाग्निः पृथिव्या समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। १।।
वायवे समनमदन्तरिक्षाय समनमद्यथा वायुरन्तरिक्षेण समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। २।।
सूर्याय समनमद्दिवे समनमद्यथा सूर्यो दिवा समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। ३।।
वरुणाय समनमदद्भ्यः समनमद्यथा वरुणोऽद्भिः समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। ४।।
साम्ने समनमदृचे समनमद्यथा सामर्चा समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। ५।।
ब्रह्मणे समनमत्क्षत्राय समनमद्यथा ब्रह्मक्षत्रेण समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। ६।।
राज्ञे समनमद्विशे समनमद्यथा राजा विशा समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। ७।।
रथाय समनमदश्वेभ्यः समनमद्यथा रथोऽश्वैः समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। ८।।

।। इति अग्निभद्रम्।।

।। अथ कनिक्रदत् सूक्तं नाम शकुनिभद्रम्।।

कनिक्रदत्तृचं प्रदक्षिणिज्जागतं मध्येऽतिशक्वर्यष्टिर्वैताभ्यामृषिरध्वरे
वाशमानं शकुन्तं तुष्टाव कुशिकस्त्वैषीरथिरिन्द्रतुल्यं
पुत्रमिच्छंस्तपस्तेपे तस्येन्द्र इव गाधीपुत्रो जज्ञे
गाधिनो विश्वामित्रः स तृतीयं मण्डलमपश्यत्।।

(कनिक्रददिति तृचं सूक्तं गृत्समदः शकुन्त इन्द्रस्त्रिष्टुप्)।।
कनिक्रदज्जनुषं प्रब्रुवाण इयर्ति वाचमरितेव नावम्।
सुमङ्गलश्च शकुने भवासि मा त्वा कचिदभिभा विश्व्या विदत्।। १।।
मा त्वा श्येन उद्वधीन्मा सुपर्णो मा त्वा विददिषुमान्वीरो अस्ता।
पित्र्यामनु प्रदिशं क्रनिक्रदत्सुमङ्गलो भद्रवादी वदेह।। २।।
अव कन्दन्दक्षिणतो गृहाणां सुमङ्गलो भद्रवादी शकुन्ते।
मा नः स्तेन ईशत माघशंसो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः।। ३।।
ॐ प्रदक्षिणिदऽभिगृणन्ति कारवो वयो वदन्त ऋतुथा शकुन्तयः।
उभे वाचौ वदति सामगा इव गायत्रं च त्रैष्टुभं चानु राजति।। ४।।
उद्गातेव शकुने साम गायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शँससि।
वृषेव वाजी शिशुमतीरपीत्या सर्वतो नः शकुने।
भद्रमा वद विश्वतो नः शकुने पुण्यमा वद।। ५।।
भद्रं वद दक्षिणतो भद्रमुत्तरतो वद।
भद्रं पुरस्तान्नो वद भद्रं पश्चात्कपिञ्जल।। ६।।
भद्रं वद पुत्रैर्भद्रं वद गृहेषु च।
भद्रमस्माकं वद भद्रं नो अभयं वद।। ७।।
भद्रमधस्तान्नो वद भद्रमुपरिष्टान्नो वद।
भद्रं भद्रन्न आवद भद्रं नः सर्वतो वद।। ८।।
असपत्नं पुरस्तान्नः शिवं दक्षिणतस्कृधि।
अभयं सततं पश्चाद्भद्रमुत्तरतो गृहे।। ९।।
योऽवनानि महयसि जिग्युषामिव दुन्दुभिः।

शकुन्तक प्रदक्षिणं शतपत्राऽभि नो वद॥ १०॥
आवदँस्त्वं शकुने भद्रमावद तूष्णीमासीनः सुमति चिकिद्धि नः।
यदुत्पतन्वदसि कर्करिर्यथा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥११॥

॥ इति कनिक्रदत् सूक्तं नाम शकुनिभद्रम्॥

॥ अथ इन्द्रभद्रम्॥

ऐन्द्रवायव्ये द्यावापृथिव्यावन्त्यस्तृचो
हविर्धाने वा तस्य तृतीयः पादो वाग्नेयोऽम्बितमा
ऽनुष्टुभं बृहती च॥

इन्द्रश्च मृळयाति नो न नः पश्चादघं नशत्।
भद्रं भवाति नः पुरः॥ १॥
इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वाभ्यो अभयं करत्।
जेता शत्रून्विचर्षणिः॥ २॥
विश्वेदेवास आगत श्रृणुता म इमं हवम्।
एदं बर्हिर्निषीदत॥ ३॥
तीव्रो वो मधुमाँ अयं शुनहोत्रेषु मत्सरः।
एतं पिवत काम्यम्॥ ४॥
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः।
विश्वे मम श्रुता हवम्॥ ५॥
अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति।
अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिमम्ब! नस्कृधि॥ ६॥
त्वे विश्वा सरस्वति श्रितायूँषि देव्याम्।
शुनहोत्रेषु मत्स्व प्रजां देवि दिदिड्ढि नः॥ ७॥
इमा ब्रह्म सरस्वति जुषस्व वाजिनीवति।
या ते मन्म गृत्समदा ऋतावरि प्रियान्देवेषु जुह्वति॥ ८॥
प्रेतां यज्ञस्य शम्भुवां युवामिदा वृणीमहे।

अग्निं च हव्यवाहनम्।। ९।।
द्यावा नः पृथिवी इमं सिध्रमद्य दिविस्पृशम्।
यज्ञं देवेषु यच्छताम्।। १०।।
आ वामुपस्थमद्रुहा देवाः सीदन्तु यज्ञियाः।
इहाद्य सोमपीतये।। ११।।

॥ इति इन्द्रभद्रम्॥

।। अथ आनोभद्रम्।।

ओ नो दश वैश्वदेवन्तु द्वि त्रिष्टुबन्तमाद्यास्तृचाः
पञ्चमी सप्तमी जगत्यः षष्ठी विराट्स्थाना।।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। १।।
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानां सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। २।।
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।। ३।।
तन्नो वातो मयोभुवातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।। ४।।
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ५।।
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। ६।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह।। ७।।
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।। ८।।

शतमिन्नु शरदो अन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥ ९॥
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ १०॥

॥ इति आनोभद्रम्॥

॥ अथ अशीतिभद्रम्॥

भद्रो नो अग्निः सुहवो विभावसुर्भद्र इन्द्रः पुरुहूतः पुरुष्टुतः।
भद्रः सूर्य उरुचक्षा उरुव्यचा भद्रश्चन्द्रमाः समिथेषु जागृविः॥ १॥
भद्रः प्रजा अजनयन्नः प्रजापतिर्भद्रः सोमः पावमानो वृषा हरिः।
भद्रस्त्वष्टा विदधद्रूपाण्यद्भुतो भद्रो नो धाता वरिवस्यतु प्रजाः॥ २॥
भद्रस्तार्क्ष्यः सुप्रजस्त्वाय नो महानरिष्टनेमिः पृतना युधा जयन्।
भद्रो वायुर्मातरिश्वा नियुत्पतिर्वेनो गयस्फान उशन्सदास्तु नः॥ ३॥
भद्रो मित्रो वरुणो रुद्र इद्बृधा भद्रोऽहिर्बुध्न्यो भुवनस्य रक्षिता।
भद्रो नो वास्तोष्पतिरस्त्वमीवहा भद्रः क्षेत्रस्य पतिर्विचर्षणिः॥ ४॥
भद्रो विभुर्विश्वकर्मा बृहस्पतिर्भद्रो द्विषस्तपनो ब्रह्मणस्पतिः।
भद्रः सुपर्णो अरुणो मरुत्सखा भद्रो नो वातो अभिवातु भेषजी॥ ५
भद्रो दधिक्रा वृषभः कनिक्रदद्भद्रः पर्जन्यो बहुधा विराजति।
भद्रः सरस्वाँ उत नः सरस्वती भद्रोर्वशी भद्र इन्द्रः पुरूरवः॥ ६॥
भद्रो नः पूषः सविता यमो भगो भद्रोऽग्रजएकपादर्यमा मनुः।
भद्रो विष्णुरुरुगायो वृषा हरिर्भद्रो विवस्वाँअभिवातु नस्त्मना॥ ७॥
भद्रा गायत्री ककुबुष्णिहा विराड्भद्रानुष्टुब्वृहती पङ्क्तिरस्तु नः।
भद्रा नस्त्रिष्टुब्जगती पुरुप्रिया भद्रातिच्छन्दा बहुधा विभूवरी॥ ८॥
भद्रा नो राकानुमतिः कुहूः सुहृद्भद्रा सिनीवाल्यदितिर्मही ध्रुवा।
भद्रा नो द्यौरन्तरिक्षं मयस्करं भद्रोशोदक्षस्तनयाय नस्तुजे॥ ९॥

भद्रो नः प्राणः सुमनाः सुवागसद्भद्रो अपानः सतनोस्सहात्मना।
भद्रं चक्षुर्भद्रमिच्छ्रोत्रमस्तु नो भद्रन्न आयुश्शरदो असच्छताम्॥ १०॥
भद्रेन्द्राग्नी नो भवतामृतावृधा भद्रा नो मित्रावरुणा धृतव्रता।
भद्राश्विना नो भवतां न वेदसा भद्रा द्यावापृथिवी विश्वशम्भुवा॥ ११॥
भद्रा न इन्द्रावरुणा रिशादसा भद्रा न इन्द्रा भवतां बृहस्पती।
भद्रेन्द्राविष्णू सवनेष्वयावृधा भद्रेन्द्रासोमायुधि दस्युहन्तमा॥ १२॥
भद्राग्राविष्णू विदथस्य प्रसाधना भद्रा नोऽग्नीन्द्रा वृषभा दिवस्पती।
भद्रा नो अग्नीवरुणा प्रचेतसा भद्राग्नीषोमा भवता नवेदसा॥ १३॥
भद्रा सूर्याचन्द्रमसा कविक्रतू भद्रा सोमा भवतां पूषणा नः।
भद्रेन्द्रावायू पृतनास्वसासही भद्रा सूर्याग्नी अजिता धनञ्जया॥ १४॥
भद्रा नः सन्तु वसवो वसुप्रजा भद्रा रुद्रावृत्रहणा पुरन्धरा।
भद्रा आदित्याः सुपसः सुनीतयो भद्रा राजानो मरुतो विरप्शिनः॥ १५॥
भद्रा न ऊमाः सुहवाः शतश्रियो विश्वेदेवा मनवश्चर्षणीधृतः।
भद्राः साध्या अभिभवः सूरचक्षसो भद्रा नः सन्त्वृभवो रत्नधातमाः॥ १६॥
भद्राः सर्वे वाजिनो वाजसातयो भद्रा ऋषयः पितरो गभस्तयः।
भद्राः भृगवोऽङ्गिरसः सुदानवो भद्रा गन्धर्वाप्सरसः सुदंससः॥ १७॥
भद्राः आपः शुचयो विश्वभृत्तमा भद्राः शिवा यक्ष्मनुदो न ओषधीः।
भद्रा गावः सुरभयो वयोवृधो भद्रा योषा उशतीर्देवपत्नयः॥ १८॥
भद्राणि सामानि सदा भवन्तु नो भद्रा अथर्वाण ऋचो यजूंषि नः।
भद्रा नक्षत्राणि शिवानि विश्वा भद्रा आशा अह्रुताः सन्तु नो हृदि॥ १९॥
संवत्सरा न ऋतवो मयोभुवो युवा आयुवाः सुसराण्युत क्षपाः।
मुहूर्ताः काष्ठाः प्रदिशो दिशश्च सदा भद्राः सन्तु द्विपदे चतुष्पदे॥ २०॥
भद्रं पश्येम प्रचरेम भद्रं भद्रं वदेम शृणुयाम भद्रम्।
तन्नो मित्रो वरुणो मा महन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ २१॥

॥ इति अशीतिभद्रं स्वस्त्ययनं समाप्तम्॥

।। अथ कलशस्थापनम्।।

अष्टदल पर पहिले ही रखे गये "कलश" पर विष्णुभद्र से पुष्पार्चन करते रहियेः–

आग्नेय्यौ द्वे देवीनामेकेन्द्राणीवरुणान्यग्नायीनां
द्यावापृथिव्यौ पार्थिवी षड्वैष्णाव्योऽतो
देवा दैवी वा गायत्री।।

।। अथ विष्णुभद्रम्।।

अभि नो देवीरवसा महः शर्मणा नृपत्नीः। अच्छिन्नपत्राः सचन्ताम्।। १।।
इहेन्द्राणीमुपह्वये वरुणानीं स्वस्तये। अग्नायीं सोमपीतये।। २।।
मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः।। ३।।
तयोरिद्घृतवत्पयो विप्रा रिहन्ति धीतिभिः। गन्धर्वस्य ध्रुवे पदे।। ४।।
स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः।। ५।।
अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्तधामभिः।। ६।।
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पांसुरे।। ७।।
त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।। ८।।
विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पृशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा।। ९।।
तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।
तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्।। १०।।

।। इति विष्णुभद्रम्।।

अब आग्नेय कोण पर रखे दो क्षेत्रपाल (मिट्टी के दो टाकू या दो कटोरी) पर बिना फूलों के चावल के दाने डालिये चावल फेंकने का मन्त्र इस प्रकार है :–

'अश्वमेधे घोराणां आर्षम् द्रष्टे नम उप द्रष्टे नमो०' से लेकर 'भूर्भुवः स्वर्वषट् स्वाहा नमः' तक।

गायत्र्यै नमः ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।। ३।। (क्षेत्रपालों पर केवल अर्घ चढ़ाना) अश्वमेधे घोराणामार्षम्।।

द्रष्ट्रे नम उप द्रष्ट्रे नमोऽनुद्रष्ट्रे नमः, ख्यात्रे नम, उपख्यात्रे नमो,ऽनुख्यात्रे नमः, शृण्वते नम, उपशृण्वते नमः, सते नमोऽसते नमो, जाताय नमो, जनिष्यमाणाय नमो, भूताय नमो, भविष्यते नमश्चक्षुषे नमः, श्रोत्राय नमो, मनसे नमो, वाचे नमो, ब्रह्मणे नमः, श्रान्तायनमस्तपसे नमः।। भूतं भव्यं भविष्यद्वषट्स्वाहा नम, ऋक्साम यजुर्वषट्स्वाहा नमो, गायत्री त्रिष्टुब्जगती वषट्स्वाहा नमः, पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर्वषट्स्वाहा, नमोऽन्नं कृषिर्वृष्टिर्वषट्स्वाहा नमः, पिता पुत्रः पौत्रो वषट्स्वाहा नमः, प्राणो व्यानोऽपानो वषट्स्वाहा नमो, भूर्भुवः स्वर्वषट् स्वाहा नमः।।

अब कलश पर फूल डालिये :–

यो विश्वचक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो हस्त उत विश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यां धमते संपतत्रैर्द्यावापृथिवी जनयन्देव एकः।।

आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामस्मिन्राष्ट्रे राजन्य एषव्यः शूरो महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुःसप्तिर्जिष्णू रथेष्ठाः पुरन्धिर्योषा सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां, निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु, फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां, योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

इषे त्वोर्जेत्वेति ब्रह्मणः सर्ववेदो ब्रह्मणः यजुः।

इषे त्वोर्जे त्वा वायवः स्थोपायवः स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे आप्यायध्वमघ्न्या देवभागं प्रजावतीनमीवा अयक्ष्मा मा वःस्तेन ईशत माघशँसः, परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि यजमानस्य पशुपा असि।।

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे। गोषदसि प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टारातिः प्रेयमगाद्धिषणा बर्हिरच्छ मनुना कृता स्वधया वितष्टा उर्वन्तरिक्षं वीहीन्द्रस्य परिपूतमसि माधो मोपरि परुस्त ऋद्धया स मा च्छेत्ता ते मा रिषत् देवबर्हिः शतवल्शं विरोह सहस्त्रवल्शा वि वयं रुहेम आदित्या रास्नासीन्द्राण्याः सन्नहनं पूषा ते ग्रन्थिं ग्रथ्नातु, स ते मा स्थादिन्द्रस्य त्वा बाहुभ्यामुद्यच्छे बृहस्पतेस्त्वा मूर्ध्ना हरामि, देवङ्गममसि तदाहरन्ति कवयः पुरस्ताद्देवेभ्यो जुष्टमिह बर्हिरासदे।। वसोः पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः।। मधुमद्घृत-वत्पिन्वमाना जीवा जीवन्तीरुप वः सदेम मातरिश्वानो घर्मोऽसि द्यौरसि पृथिव्यसि विश्वधायाः परेण धाम्ना हुतासि मा ह्वाः सा विश्वायुः सा विश्वव्यचाः सा विश्वधाया हुतस्तोको हुतो द्रप्सोऽग्नये वृहते नाकाय स्वाहा। द्यावापृथिवीभ्याम् सम्पृच्यध्वमृतावरीऊ-र्मिणार्मधुमत्तमा मान्द्रा धानस्य सातयः इन्द्रस्य त्वा भागं सोमेना-तनच्म्यदस्तमसि विष्णवे विष्णो हव्यँ रक्षस्वापो जागृत।। महि तृणामवोऽस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः दुराधर्षं वरुणस्य नहि तेषाममा चन, नाध्वसु वारणेषु ईशे रिपुरघशँसः यस्मै पुत्रासो अदितेः प्रजीवसे मर्त्याय ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्त्रम्। सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पतिः। कक्षीवन्तं य औशिजः यो रेवान्यो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः स नः सिषक्तु यस्तुरः मा नः शँसो अररुषो धूर्तिः प्राणङ्मर्त्यस्य रक्षा णो ब्रह्मणस्पते।।

नैनृत कोण (South-West)

अब कलश के नैर्ऋत कोण पर जल और विष्टर सहित पात्र (मिट्टी का या कटोरी) रखिये। इसे प्रणीत पात्र कहते हैं। उस प्रणीत पात्र में आगे दिये गये तीन मन्त्रों से तीन फूल डालना।

सं वः सृजामि हृदयं संसृष्टः मनो अस्तु वः। सं सृष्टास्तन्वः सन्तु वः सं सृष्टः प्राणो अस्तु वः।। सं य्यावः प्रियास्तन्वः सं प्रिया हृदयानि वः।

आत्मा वो अस्तु "सं प्रियः सं प्रियास्तन्वो मम।। (अब उस प्रणीतपात्र में डाले हुए विष्टर से कलशे जीवाधानम्"।। पानी के छींटे कलश पर देना)
अग्नेरायुरसि तस्य ते मनुष्या आयुष्कृतस्तेनास्मा अमुष्मा आयुर्धेहि।। १।।
इन्द्रस्य प्राणः स ते प्राणं ददातु यस्य प्राणस्तस्मै ते स्वाहा।। २।।
पितॄणां प्राणस्ते ते प्राणं ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा।। ३।।
मरुतां प्राणस्ते ते प्राणं ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा।। ४।।
विश्वेषां देवानां प्राणस्ते ते प्राणन्ददतु येषां प्राणस्तेभ्यो वः स्वाहा।। ५।।
प्रजापतेः परमेष्ठिनः प्राणः तौ ते प्राणन्दत्तां ययोः प्राणस्ताभ्यां वां स्वाहा।। ६।।
यदसर्पस्तत्सर्पिरभवो यन्नवमैस्तन्नवनीतमभवो यद्दध्नियथास्तद्-घृतमभवः।। ७।।
घृतस्य धाराममृतस्य पन्थामिन्द्रेण दत्तं प्रयतं मरुद्भिः।
तत्त्वा विष्णुरन्वपश्यत्तत्तेला गव्यैरयत्।। ८।।
पावमानेन त्वा स्तोमेन गायत्र्या वर्तन्यापाँशोर्वीर्येणोद्धराम्यसौ।। ९।।
बृहता त्वा रथन्तरेण त्रिष्टुभा वर्तन्या शुक्रस्य वीर्येणोत्सृजाम्यसौ।। १०।।
अग्नेस्त्वा मात्रया जगत्या वर्तन्या देवस्त्वा सवितोन्नयतु जीवातवे जीवनस्याया असौ।। ११।।
देवा आयुष्मन्तस्तेऽमृतेनायुष्मन्तस्तेषामयमायुषायुष्मानस्त्वसौ।। १२।।
ब्रह्मायुष्मत्तद्ब्राह्मणैरायुष्मत्तस्यायमायुषायुष्मानस्त्वसौ।। १३।।
अग्निरायुष्मान्स वनस्पतिभिरायुष्माँस्तस्यायमायुषायुष्मानस्त्वसौ।। १४।।
यज्ञ आयुष्मान्स दक्षिणाभिरायुष्माँस्तस्यायमायुषायुष्मानस्त्वसौ।। १५।।
सोम आयुष्मान्स ओषधीभिरायुष्माँस्तस्यायमायुषायुष्मानस्त्वसौ।। १६।।
ओषधय आयुष्मतीस्ता अद्भिरायुष्मतीस्तासामयमायुषायुष्मान-स्त्वसौ।। १७।।
इमममग्न आयुषे वर्चसे कृधि तिग्ममोजो वरुण सं शिशाधि। मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदष्टिर्यथा सत्।। १८।।

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव।। १९।।

अब यज्ञमण्डप की दिशाओं में राक्षसों की नकारात्मक शक्तियों के प्रभाव को मिटाने के लिए निम्न मन्त्रों से चावल सहित काले तिल के दाने अपने-अपने मन्त्रों से डालिते रहियेः–

(पहले पूर्व दिशा में) **ये देवाः पुरः सदोऽग्निनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।। १।।**

(अब दक्षिणदिशा में) **ये देवा दक्षिणात्सदो यमनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।। २।।**

(अब पश्चिम दिशा में) **ये देवाः पश्चात्सदो मरुन्नेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।।३।।**

(अब उत्तर दिशा में) **ये देवा उत्तरात्सदो मित्रावरुणनेत्रा रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।। ४।।**

(अब ऊपर दिशा में) **ये देवा उपरिषदः सोमनेत्रा अवस्वदन्तो रक्षोहणस्ते नः पान्तु ते नोऽवन्तु तेभ्यः स्वाहा।। ५।।**

(अब आग्नेय कोण में) **इदमहं रक्षोभिः समूहाम्यग्ने सन्दह रक्षः सन्दग्धं रक्षोघ्नये पुरः सदे रक्षोघ्ने स्वाहा।। ६।।**

(अब नैनृत कोण में) **यमाय दक्षिणात्सदे रक्षोघ्ने स्वाहा।।**

(अब वायवी कोण में) **मरुद्भ्यः पश्चात्सद्भ्यो रक्षोहभ्यः स्वाहा।।**

(अब ईशान कोण में) **मित्रावरुणाभ्यामुत्तरात्सद्भ्यां रक्षोहभ्यां स्वाहा।।**

(अब नीचे की ओर) **सोमायोपरिषदेवस्वदुते रक्षोघ्ने स्वाहा।।**

(अब विष्टर से प्रणीत पात्र के जल का आलोडन करना **'रथः पंचवाही दक्षिणा'** इस मन्त्र से फिर उस विष्टर के जल की छींटों से सारे पूजाद्रव्यों की अलग-अलग मन्त्रों से शुद्धि करना। पहले जल की) **आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ।। तस्मा अरं गमाम वो**

यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।। (अब पूजा के अर्घ्य की शुद्धि) **आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्ग थे।।** (अब फूलों की शुद्धि करना) **पुष्पवतीः प्रसुमतीः फलिनीरफला उत। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।** (अब तिलक की) **गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।** (अब दर्भ की) **कर्मणे वां वानस्पत्यमसि प्रत्युष्टं रक्षः प्रत्युष्टारातिः प्रियमागात् द्विषेण बहिंरच्छ मनुमा कृता सुधयावितुष्टः। उर्वन्तरिक्षं वीहि।।** (अब धूप की) **धूरसि धूर्व धूर्वन्तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्वय वयं धूर्वामस्तं च धूर्व। देवानामसि वह्नितमँ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्। विष्णोः क्रमोऽसि अह्रुतमसि हविर्धानं दृँहस्व मा ह्वार्न्मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रेक्षे उरु त्वा वाताय।। वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण च्छन्दसाङ्गिरस्वत् रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन च्छन्दसाङ्गिरस्वत् आदित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन च्छन्दसाङ्गि रस्वत् विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन च्छन्दसाङ्गिरस्वत्।। इन्द्रस्त्वा धूपयतु वरुणस्त्वा धूपयतु विष्णुस्त्वा धूपयतु।।** (अब सूर्य की ओर) **उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।** (अब रत्नदीप की) **तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृह्णामि यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञेभ्यो गृहणामि।** (अब पण्डित जी अपने ललाट पर टीका करें) **अध्वर्योऽयं यज्ञो अस्तु देवा ओषधीभ्यः पशुभ्यो मे घनाय। विश्वस्मै भूताय ध्रुवो अस्तु देवाः स पिन्वस्व घृतवद्देव यज्ञ।।** (अब पण्डित जी अपने पर अर्घफूल डालें) **इहैवैधि माप च्योष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः। इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठेह यज्ञमुदारय।** (अब पण्डित जी अपने आसन के नीचे दो दर्भकाण्ड डाले) **इममिन्द्रो अदीधरद् ध्रुवं ध्रुवेण हविषा हविः। तस्मै सोमो अधि ब्रुवत्तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः।।** (भूमि पर आसनदेना) **ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवँ**

विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामसि।। (पृथ्वी पर गन्ध फूल डाले) **मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नोभरीमभिः।।** (आकाश की ओर गन्ध फूल देना) **बडित्था पर्वतानां क्षेत्रं विभर्षि पृथिवि। प्र या भूमिं प्रवत्वति मह्ना जिनोषि महिनि।।**

(वायवी कोण में गणेश को) **निषुसीद गणपते गणेषु त्वामा. हुर्विप्रतमं कवीनाम्। न ऋते त्वत्क्रियते किञ्चनारे महामर्कं मघवञ्चित्रमर्च।।** (नैनृते कोण पर कुमार को) **कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे। अनीकमस्य न मिमज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरुतौ।।** (ईशान कोण पर श्री की) **अश्वपूर्वाँ रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्। श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्माँ देवी जुषताम्।।** (मध्ये सरस्वती को) **इयं शुष्मेभिर्बिसखा इवारुजत्सानु गिरीणां तविषेभि-र्ऊर्मिभिः पारावतघ्नीमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमाविवासेम धीतिभिः।।** मध्ये लक्ष्मी को **मध्ये लक्ष्मी की कांस्यस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।** (आग्नेय कोण में विश्वकर्मा को) **विश्वकर्मा विश्वदेवो विश्वदेवो विश्वजिद्विश्वदर्शतः। ते त्वा घृतस्य धारया श्रैष्ठ्याय समसूषत।।**

अब अष्टदल पर स्थित कलश कुम्भ पर 'ब्रह्मादेवानां पदवीः कवीनां' से लेकर 'यूयं पात स्वस्तिभिः सदानः' तक दी गई नौ ऋचाओं से गन्ध 'अर्घ्य' फूल आदि डालना।

ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणाँ स्वधितिर्वनानाँ सोमः पवित्रमत्येति रेभन्।। १।। (अब प्रधान इष्ट देवों की गन्ध पुष्पादि पूजा) **प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।। २।। यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः।। ३।। अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।। ४।। इषे**

त्वोर्जे त्वा वायवः स्थोपायवः स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणे।। ५।। अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि।। ६।। शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः।। ७।। आहं पितॄन् सु विदत्राँ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः। बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः।। ८।। वषट्ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्। वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ९।।

अब प्रधान इष्टदेवों को अर्थात् विष्णु, महादेव, गणेश, सूर्य भगवान्, और इष्ट देवी (शारिका या महाराज्ञी या ज्वाला) को अपने-अपने मन्त्रों से गन्ध अर्घ्य पुष्पादि चढ़ानाः–

विष्णु

तत् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम्।
तत् विप्रासो विपन्यवो जागृवासः समिन्धते विष्णोर्यत् परमं पदम्।।
भगवते वासुदेवाय नमः संकर्षणाय नमः प्रद्युम्नाय नमः, अनिरुद्धाय नमः
सत्याय नमः पुरुषाय नमः अच्युताय नमः, माधवाय नमः गोविन्दाय नमः,
सहस्त्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय नमः।।

शिव

यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु यो रुद्रो विश्वाभुवनानि विश्वा तस्मै रुद्राय नमो अस्तुदेवाः।। भवाय देवाय नमः, शर्वाय देवाय नमः, रुद्राय देवाय नमः, पशुपतये देवाय नमः, उग्राय देवाय नमः, भीमाय देवाय नमः, महादेवाय नमः, ईशानाय

देवाय नमः, ईश्वराय देवाय नमः, उमासहिताय शिवाय नमः, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय नमः।

गणेश

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनां उपम श्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणाः ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्।। भगवते विनायकाय नमः एकदन्ताय नमः कृष्णपिङ्गलाय नमः, गजाननाय नमः, लम्बोदराय नमः, भालचन्द्राय नमः, हेरम्बाय नमः, आखुरथाय नमः विघ्नेशाय नमः, विघ्नभक्ष्याय नमः, वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय नमः।।

सूर्य भगवान्

चित्रं देवानामुदगात् अनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्य अग्नेः। आ प्रा द्यावा पृथ्व्योरन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः सप्ताश्वाय नमः, अनश्वाय नमः एकाश्वाय नमः, नीलाश्वाय नमः, प्रत्यक्षदेवाय नमः परमार्थसाराय नमः, तेजोरूपाय नमः, प्रभासहिताय आदित्याय नमः।।

भगवती

जातवेदसे सुनवाम सोमं अरातीयतो निदहाति वेदाः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।। भगवत्यै अमायै नमः कामायै नमः, चार्वङ्ग्यै नमः, टङ्कधारिण्यै नमः, तारायै नमः, पार्वत्यै नमः, याक्षण्यै नमः श्रीशारिका भगवत्यै नमः, श्री शारदा भगवत्यै नमः, श्रीमहाराज्ञी भगवत्यै नमः, श्रीज्वाला भगवत्यै नमः, वैखरी भगवत्यै नमः, वितस्ता भगवत्यै नमः, गङ्गा भगवत्यै नमः, यमुना भगवत्यै नमः, कालिका भगवत्यै नमः, सिद्धलक्ष्म्यै नमः, महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्त्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै नमः।। यत इन्द्र भयावहे

ततो नो अभयंकृधि। मघवन् छग्धि तब तन्न ऊतिभिः विद्विषो विमृधो जहि।। अभयङ्करी देव्यै नमः क्षेमङ्करीदेव्यै नमः सर्वशत्रुघातिन्यै नमः। इह राष्ट्राधिपतये अमुक भैरवाय नमः।।

अब इन सारे पांच देवों का अलग-अलग अपने-अपने मन्त्र से दशांश जप करना। फिर नवग्रह स्थापन विधि और दशादिकवालों की पूजा

ग्रहाणां स्थापनं कुर्यात् दिक् पालानां च वै क्रमात् जातीफलैः अक्षोटेः वा पद्मबीजै तथापि वा। द्वौ द्वौ फलौ ग्रहानां वै एकं एकं दिशाभुजाम्।।

अब कलश के सामने 'नवग्रह स्थापन विधि' और बीज मन्त्रों से गन्ध आदि से इनकी पूजा

मध्ये – भास्करं –ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः। सूर्याय गन्धं नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

आग्नेये – चन्द्रमसं – ऊं चं चन्द्रमसे नमः। चन्द्रमसे गन्धं नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

दक्षिणे –भौमं –ॐ अं अङ्गारकाय नमः। अङ्गारकाय गन्धं नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

ईशाने –बुधं–ॐ सहरय ॐ बुधाय नमः। बुधाय गन्धं नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

उत्तरे – बृहस्पतिं –ॐ सूं जीवाय नमः। जीवाय गन्धं नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

पूर्वे – शुक्रं –ॐ ह्रीं भार्गवाय नमः। भार्गवाय गन्धं नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

पश्चिमे – शनिं – ॐ शं शनैश्चराय नमः। शनैश्चराय गन्धं नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

नैर्ऋते – राहुं – ॐ यूं राहवे नमः। राहवे गन्धं नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

वायव्ये – केतुं – ॐ ह्रीं केतवे नमः। केतवे गन्धं नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

अथ दश दिक्पाल पूजा

पूर्व दिशा से आरम्भ करके कलश के सामने निम्न विधि से दश दिक्पालों का स्थापन एवं गन्ध, अर्घ, पुष्पादि से अपने-अपने मंत्रों से पूजा करना :– (दश दिक् वालों के लिए)

नोट : - १ से १० तक सारे ग्रहों के मन्त्र क्रमशः नीचे दिये गये हैं। इन दस दिक्पालों के प्रतीकभूत कलश कुम्भ के सामने १० अखरोट रखना :-

(१) पूर्वे – इन्द्राय वज्रहस्ताय नमः

(२) आग्नेये – तेजाधिपतवे अग्नये शक्तिहस्ताय नमः

(३) दक्षिणे – यमाय दण्डहस्ताय नमः

(४) नैनृते – रक्षोधिपतये नैनृतये खड्गहस्ताय नमः

(५) पश्चिमे – जलाधिपतये वरुणाय पाशहस्ताय नमः

(६) वायव्ये – जीवाधिपतये वायवे ध्वजाहस्ताय नमः

(७) उत्तरे – यक्षाधिपतये कुबेराय गदाहस्ताय नमः

(८) ईशाने – सर्वाधिपतये ईशानाय त्रिशूलहस्ताय नमः

(९) ईशान पूर्वयोः मध्ये – ब्रह्मणे पद्महस्ताय नमः

(१०) नैनृत पश्चिमयोः मध्ये – विष्णवे चक्रहस्ताय नमः।

इन्द्रापर्वता वृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः। वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिरिलया मदन्ता।। १।। (२) **अग्निः समिं वाजम्भरं ददात्यग्निवीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठाम्। अग्नी रोदसी वि चरत्समञ्जन्न-ग्निर्नारीं वीरकुक्षिं पुरन्ध्रिम्।। २।।**

यमो दाधार पृथिवीं यमो द्यामुत सूर्यम्। यमाय सर्वमित्तस्थे यत्प्राणद्वायुरक्षितम्।। ३।।

यं ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशं ग्रीवास्वविचर्त्यम्। तं ते विष्याम्यायुषो नु मध्येऽथा विषितः पितुमऽद्धि प्रमुक्तः।। ४।।

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥ ५॥

वायवायाहि दर्शतेमे सोमा अरंकृताः। तेषां पाहि श्रुधी हवम्॥ ६॥

सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। साधन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाश तस्मै॥ राजाधिराजाय प्रसह्य साधने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान्कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय वै नमो नमः॥ ७॥

ईशानं त्वा शुश्रुमा वयं धनानां धनपते गोमदग्ने अश्ववद्भूरिपुष्टं हिरण्यवदन्नवद्धेहि मह्यम्॥ दुहान्ते द्यौः पृथिवी पयो जगरस्त्वा सोदको विसर्पतु। प्रजापतिनात्मानमाप्रीणेऽरिक्तो म आत्मा॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः॥ ८॥

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ ९॥

वषट्ते विष्णवास आकृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्। वर्धन्तु त्वासुष्टुतयो गिरो मो यूयं पात स्वस्तिभिः सदानः॥ १०॥

अथ कलशे पुष्पम्

अब प्रधान कुम्भ कलश पर गन्ध अर्घ्य फूल आदि। ऋचा नं० १ – 'नमो अस्तु सर्वेभ्यो ये के च पृथिव्या मधि०' से लेकर 'प्रदिशो जयेम' ऋचा नं० ४ तक डालते रहिये।

नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिव्यामधि। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ १॥ येषु वा यातुधाना ये वा वनस्पतीरनु। येऽवटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ २॥ ये वादो रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु। येऽप्सु सदांसि चक्रिरे तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ ३॥

धन्वनागा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम्। धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम।। ४।।

अब चक्र चित्र पर रखे अखरोटों पर। स्मरण रहे कि दो अखरोट प्रतीकात्मक रूप में प्रत्येक ग्रह के लिए रखना। ब्रह्मध्रुव पर तथा अनन्तागस्ल पर भी दो-दो अखरोट रखना। पहले आग्नेय कोण की ओर रखे अखरोटों पर, फिर दक्षिणे चतुष्कोण स्थित, फिर ईशान त्रिकोण स्थित, फिर उत्तर त्रिकोण स्थित, फिर पूर्व चतुष्कोण स्थित, फिर पश्चिम जाल स्थित नैर्ऋत यवाकार स्थित, वायवी ध्वजस्थित, उत्तरे पक्षिस्थित, दक्षिणे कुम्भ स्थित, देवों पर गन्ध अर्घ्य फूल आदि ऋचा नं० १ 'अग्निस्तुविश्रस्तमं तुविर्ब्रह्माणं' से लेकर ऋचा – 'उभै वर्णावृषिरुग्रः पुपोष सत्या देवेष्वा शिषो जगाम' ऋचा नं० १६ तक डालते रहिये।

मध्ये चक्राकारेक्षोटयोः अग्नि सूर्यस्थापना।

(एक-एक अखरोट रखना प्रत्येक देव के लिए)

अग्निस्तुविश्रवस्तमं तुविब्रह्माणमुत्तमम्।
अतूर्तं श्रावयत्पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे।। १।।
आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेश यन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। २।।

अग्नि कोणे चक्राकारे वरुणचन्द्रस्थापनम्।

एवा वन्दस्व वरुणं वृहन्तं नमस्या धीरममृतस्य गोपाम्।
स नः शर्म त्रिवरूथं वि यं सत्पातं नो द्यावापृथिवी उपस्थे।। १।।
या ते धामानि दिवि या पृथिव्यां या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु।
तेभिर्नो विश्वैः सुमना अहेलन्राजन्सोम प्रति हव्या गृभाय।। २।।

दक्षिणे चतुष्कोणे कुमारभौमस्थापनम्।

तँ युवं देवावश्विना कुमारं साहदेव्यम्। दीर्घायुषं कृणोतन।। १।।
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपाँ रेताँसि जिन्वति।।२।।

ईशाने त्रिकाणे विष्णुबुधस्थापनम्।

वषट्ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।
बोधास्व मे मघवन्वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम्।
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व॥१॥

उत्तरे त्रिकोणे इन्द्राबृहस्पतिस्थापनम्।

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रँ हवे हवे सुहवँ शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्रँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥१॥
बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसर्तप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥२॥

पूर्वे चतुष्कोश सरस्वतीशुक्रस्थापनम्।

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।
सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात्॥१॥
अन्नात्परिस्त्रुतो रसँ ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानँ शुक्रमन्धस
इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥२॥

पश्चिमे जालान्तरे प्रजापतिशन्नैश्चरस्थापनम्।

प्रजापते न हि त्वदन्य एता विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ १२॥
शंनो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शँयोरभि स्त्रवन्तु नः॥ २॥

नैर्ऋते यवाकारे गणपतिराहुस्थापनम्।

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कवं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वनूतिभिः सीद सादनम्॥१॥

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता।। २।।

वायवे ध्वजाकारे रुद्रकेतुस्थापनम्।

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं देवयजं रोदस्योः।
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृण्वध्वम्।। १।।
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।। २।।

उत्तरे पक्षिरूपे ब्रह्मध्रुवस्थापनम्।

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून्।
आसन्निषून्हृत्स्वसो मयो भून्य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात्।।१।।
ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे।
ध्रुवं विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामयम्।। २।।

यहाँ दो अखरोट अनन्त और अगस्त्य रखकर उनकी पूजा इस मन्त्र से करना

दक्षिणे कुम्भरूपे अनन्तागस्त्यस्थापनम्।

आदित्यं गर्भं पयसा समञ्जन्सहस्त्रस्य प्रतिमाँ विश्वरूपम्।
परिवृङ्धि हरसा माभिसंस्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः।। १।।
अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्रजामपत्यं बलमिच्छुमानः।
उभौ वर्णावृषिरुग्रः पुपोष सत्या देवेष्वाशिषो जगाम।। २।।

वास्तुष्पतिस्थापनम् एक अखरोट प्रतीकात्मक रूप में
कलश कुम्भ के सामने रखना। **कलशे पुष्पाणि।**

अब प्रधान कलश कुम्भ पर गन्ध आदि 'अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाणि' इस ऋचा से लेकर 'यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।' तक डालते रहिये।

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्याविशन्।
सखा सुशेव एधि नः।। १।।
वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः।

यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। २।।
वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो।
अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रति नो जुषस्व।। ३।।
वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या।
पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ४।।

क्षेत्रपालयोरक्षतम्।

क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि।
गामश्वं पोषयित्वा स नो मृलाती दृशे।। १।।
क्षेत्रत्य पते मधुमन्तमूर्मिं धेनुरिव पयो अस्मासु धुक्ष्व।
मधुश्चुतं घृतमिव सु पूतमृतस्य नः पतयो मृलयन्तु।। २।।
मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवन्त्वन्तरिक्षम्।
क्षेत्रस्य पतिर्मधुमानो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम।। ३।।
भूतो भूतेषु चरति प्रविष्टः स भूतनामधिपतिर्बभूव।
तस्य मृत्युश्चरति राजसूयं स राजा राज्यमनुमन्यतामिदम्।।४।।
उर्वीरोधसी वरिवः कृणोतु क्षेत्रस्य पत्नीरधिवोचतं नः।
तौ मे द्यावापृथिवी नाथितो जोहवीमि तेनो मुञ्चतमंहसः।। ५।।
यो ह वै देवान्साध्यान्वेद सिध्यत्यस्मादेमिमावलोकाः।
देवाः साध्याः सिद्धं ह्यस्यै सिद्धमस्मै
सिद्धममुष्यै य एवं वेद सिद्धचत्यस्मै।। ६।।

कलशे सर्वदेवस्थापनम्।

यो विश्वचक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो हस्त उत विश्वतस्पात्।
संवाहुभ्यां नमते संयजत्रैर्धावापृथिवी जनयन्देव एकः।। १।।
यस्य व्रतमुप तिष्ठन्त आपो यस्य व्रते पशवो यन्ति सर्वे।
यस्य व्रते पुष्टिपति र्निविष्टस्तं सरस्वतन्तमवसेजोहवीमि।। २।।
गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्त्राक्षरा परमे व्योमन्।। ३।।

दिव्यं सुपर्णं वायसं बृहन्तमपां गर्भं दर्शतमोषधीनाम्।
अभीपतो वृष्टिभिस्तपर्यन्तं सरस्वन्तमवसे जोहवीमि।। ४।।
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।
सरस्वतीं सुकृतो आह्वयन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं धात्।। ५।।
सरस्वत्यभि नो नेषि वस्योमापस्फरीः पयसा मा न आ धक्।
जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत्क्षेत्राण्यरणानि गन्म।। ६।।
पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः।। ७।।
चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्।
यज्ञं दधे सरस्वती।। ८।।
महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना।
धियो विश्वा वि राजति।। ९।।
जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।। १०।।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।११।।
यत इन्द्र भयावहे ततो नो अभयं कृधि।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिर्विद्विषो विमृधो जहि।।१२।।
ये देवा दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ।
अप्सुपदो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्।।१३।।
स सुष्टुभास ऋक्वतागणेन बलं रुरोज बलिगं रवेण।
बृहस्पतिरुस्त्रिया हव्यसूदः कनिक्रद्वावशतीरुदा जत्।।१४।।
एवा पित्रे विश्वेदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।
बृहस्पते सुप्रजा वीरयन्तो वयं स्याम पतयो रयणीम्।। १५।।
ये के च ज्मा महिनो अहिमा या दिवो जज्ञिरे अपां सदस्थे।
ते अस्मभ्यमिषये विश्वमायुः क्षप उस्त्रा वरिवस्यन्तु देवाः।।१६।।

रक्षोहणं वाजिनमाजिघर्मि मित्रं प्रतिष्टमुपयामि शर्म।
शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा सरिषः पातु नक्तम्॥१७॥
प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणीहि विश्वतः प्रति।
यातुधानस्य रक्षसो बलं वीरुज वीर्यम्॥१८॥
अन्विदनुमते त्वं मन्यासै शं च नस्कृधि।
इषं तोकाय नो दधः प्राण आयूंषि तारिषः॥१९॥
यत्ते नाम सुहवं सु प्रणीतेऽनुमतेऽनुमतं सदा नु।
तेन त्वं सुमतिर्देव्यस्मे इषं पिन्व विश्ववारां सुवीराम्॥२०॥
राकामहं सुहवां सुष्टुतीं हुवे शृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना।
सीव्यत्वपः सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम्॥२१॥
यास्ते राके सु मतयः सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वसूनि।
ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रपोषं सुभगे रराणा॥२२॥
सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा।
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देव दिदिड्ढि नः॥२३॥
या सुबाहुः स्वंगुरिः सुषुमा बहुसूवरी।
तस्यै विश्पत्न्यै हविः सिनीवाल्यै जुहोतन॥२४॥
या गुंगूर्या सिनीवाली या राका या सरस्वती।
इन्द्राणीमह्व ऊतये वरुणानीं स्वस्तये॥२५॥
इन्द्राणीमासु नारिषु सुपत्नीमहमश्रवम्।
नह्यस्या अपरं च न जरसा भरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥२६॥
नाहमिन्द्राणी रारण सख्युर्वृषाकपेर्ऋते।
यस्येदमप्यँ हविः प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः॥२७॥
कुहूमहँ सुकृतं विद्मनापसमस्मिन्यज्ञे सुहवां जोहवीमि।
या नो ददाति श्रवणं पितॄणां तस्यै ते देवि हविषा विधेम॥२८॥
कुहूर्देवानाममृतस्य पत्नी हव्या नो अस्य हविषः शृणोतु।
स्वसा देवानां महयन्त्यस्मे रायस्पोषं चिकितुषे दधातु॥२९॥

धाता ददातु नो रयिमीशानो जगतस्पतिः।
स नः पूर्णेन वावनत्॥३०॥
प्रजापतीरमयतु प्रजा इह धाता दधातु सुमनस्यमानः।
संवत्सर ऋतुभिश्चाक्लृपानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु॥ ३१॥

उपहोमदेवाः देवासुराणामार्षम्।

तव श्रिये व्यजिहीत पर्वतो गवां गोत्रमुदसृजो यदङ्गिरः।
इन्द्रेण युजा तमसा परिवृतं बृहस्पते निरपामौब्जो अर्णवम्॥१॥
बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसर्तप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥२॥
बृहस्पतिः समजयद्वसूनि महो ब्रजान्गोमतो देव एषः।
अपः सिषासन्त्स्वरप्रतीतो बृहस्पतिर्हन्त्यमित्रमर्कैः॥ ३॥
यमो दाधार पृथिवीं यमो द्यामुत सूर्यम्।
यमाय सर्वमित्तस्थे यत्प्राणद्वायुरक्षितम्॥४॥
यथा पञ्च यथा षडचथा पञ्च दशर्षयः।
यमं यो विद्यात्स ब्रूयाद्यथैकर्षिर्विजानते॥५॥
त्रिकद्रुकेभिः पतति षडुर्वीरेकमिद्वृहत्।
गायत्री त्रिष्टुप्छन्दाँसि सर्वा ता यम आहिता॥६॥
मृळा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते।
यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु॥७॥
अश्याम ते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तव रुद्र मीढ्वः।
सुम्ना यन्निद्विशो अस्माकमा चरारिष्टवीरा जुहवाम ते हविः॥८॥
त्वेषं वयँ रुद्रं यज्ञसाधनङ्कुं कविमवसे नि ह्वयामहे।
आरे अस्मद्दैव्यं हेळो अस्यतु सुमतिमिद्वयमस्या वृणीमहे॥९॥
अव ते हेळो वरुण नमोभिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः।
क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनाँसि शिश्रथः कृतानि॥१०॥
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।

अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥११॥
इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय।
त्वामवस्युराचके॥१२॥
तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः॥१३॥
महाव्याहृतयः प्रजापतेः॥१४॥
ॐ भूर्लोकाय नमः॥१५॥
ॐ भुवोलोकाय नमः॥१६॥
ॐ स्वर्लोकाय नमः॥१७॥
ॐ भूर्भुवः स्वर्लोकाय नमः॥१८॥
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।
अपां रेताँसि जिन्वति॥ १९॥
उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह मादयध्यै।
उभा दाताराविषां रयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम्॥२०॥
अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः।
यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशे विशे॥२१॥
अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः।
तं जानन्नग्न आरोह ततो नो वर्धया रयिम्॥ २२॥

स्तोमोदेवानाम्।

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये।
आरे अस्मे च शृण्वते॥१॥
अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः।
पयः सहस्रसामृषिम्॥ २॥

अरुणेः।

कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे।
उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते॥१॥

परि ते दूळभो रथोऽस्माँ अश्नोतु विश्वतः।
येन रक्षसि दाशुषः॥ २॥

कलशे पुष्पाणि।

यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ।
ताभ्यामेनं परि देहि राजन्स्वस्ति चास्मा अनमीवं च धेहि॥ १॥
यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि।
तत्र हव्यानि गन्तय॥२॥
मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्।
ग्राहिर्जग्राह यदि वैतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम्॥ ३॥
अङ्गादङ्गाल्लोम्नो लोम्नो जातं पर्वणि पर्वणि।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते॥ ४॥

कलशे पुष्पत्रयम्।

ॐ भूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ॥ ३॥

कलशे पुष्पद्वयम्।

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव चक्षुराततम्॥१॥
तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते।
विष्णोर्यत्परमं पदम्॥ २॥

कलशे पुष्पम्।

यो रुद्रो अग्नौ या अप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु।
यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः नमः॥

कलशे पुष्पत्रयम्।

ऐन्द्राग्नं वर्म बहुलं यदुग्रं विश्वे देवा नाति विध्यन्ति शूराः।
तन्नस्त्रायतां तन्वः सर्वतो महदायुष्मन्तो जरामुपगच्छेम जीवाः॥

अब नैवेद्य रखिये कलश तथा कलश देवों को। नैवेद्य में सारी यज्ञ सामग्री थोड़ी-थोड़ी रखना। 'अमृतेशमुद्रया अमृती०' से 'नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः'

अथ नैवेद्यम्।।

अमृतेशमुद्रयाऽमृतीकृत्याऽमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्या-माददे।। महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्व-कर्मणे द्वार्देवताभ्यः।। प्रजापतये, ब्रह्मणे, कलशदेवताभ्यः, ब्रह्मविष्णु-महेश्वरदेवताभ्यः, चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय (मार्गशीर्षे) **रुक्मिणीसहिताय कृष्णाय, श्रीसहिताय केशवाय।** (पौषे) **प्रियासहिताय, अनन्ताय, वागीश्वरीसहिताय नारायणाय** (माघे) **प्रीतिसहिताय अच्युताय, कान्तासहिताय माधवाय** (फाल्गुणो) **शक्तिसहिताय चक्रिणे, क्रियासहिताय गोविन्दाय।** चैत्रे। **सिद्धि सहिताय वैकुण्ठाय, मतिसहिताय विष्णवे।** वैशाखे। **शोभासहिताय जनार्दनाय, विभूतिसहिताय मधुसूदनाय।** ज्येष्ठे। **महिमासहिताय उपेन्द्राय, इच्छासहिताय त्रिविक्रमाय।** आषाढे। **लक्ष्मीसहिताय यज्ञपुरुषाय, धृतिसहिताय वामनाय।** श्रावणे। **कान्तिसहिताय वासुदेवाय, रति सहिताय श्रीधराय।** भाद्रपदे। **प्राप्तिसहिताय हरये, मायासहिताय हृषीकेशाय।** आश्वियुजे। **प्राकाम्यासहिताय योगीश्वराय, धीसहिताय पद्मनाभाय।** कार्तिके। **लघिमासहिताय पुण्डरीकाक्षाय, गरिमासहिताय दामोदराय।** मलिम्लुचे। **सत्यभामासहिताय नरकारये, निष्कलासहिताय महामार्तण्डाय।। दुर्गायै त्र्यम्बकाय, वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वात्ता- दिभ्यः पितृगणयागदेवताभ्यः।। भगवते वासुदेवाय, सङ्कर्षणाय, प्रद्युम्नाय, अनिरुद्धाय, सत्याय, पुरुषाय, अच्युताय, माधवाय, गोविन्दाय, सहस्त्रनाम्ने विष्णवे, लक्ष्मी-सहिताय नारायणाय।। भगवते भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय**

देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, भीमाय देवाय, महादेवाय देवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय।। भगवते विनायकाय, एकदन्ताय, कृष्णपिङ्गलाय, गजाननाय, लम्बोदराय, भालचन्द्राय, हेरम्बाय, आखुरथाय, विघ्नेशाय, विघ्नभक्ष्याय, वल्लभासहिताय श्रीमहा-गणेशाय।। भगवते क्लींकांकुमाराय, षण्मुखाय, मयूरवाहनाय, पार्वती नन्दनाय, सेनाधिपतये कुमाराय।। भगवते ह्रांह्रींसः सूर्याय, सप्ताश्वाय, अनश्वाय, एकाश्वाय, नीलाश्वाय, प्रत्यक्षदेवाय, परमार्थसाराय, तेजोरूपाय, प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै, अमायै, कामायै, चार्वङ्ग्यै, टङ्कधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै, श्रीशारिकाभगवत्यै, श्रीशारदाभगवत्यै, श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै, श्रीज्वालाभगवत्यै, व्रीडाभगवत्यै, वैखरीभगवत्यै, वितस्ताभगवत्यै, गङ्गाभगवत्यै, यमुनाभगवत्यै, कालिकाभगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दर्यै, सहस्त्रनाम्न्यै दैव्यै भवान्यै।। अभयङ्करी-देव्यै, क्षेमङ्करीभवान्यै, सर्वशत्रुघातिन्यै, इह राष्ट्राधिपतये, अमुक-भैरवाय।। **इन्द्राय वज्रहस्ताय** सुराधिपतये शचीसहिताय। **अग्नये शक्तिहस्ताय** तेजोधिपतये स्वाहासहिताय। **यमाय दण्डहस्ताय** प्रेताधि-पतये यामीसहिताय। **नैर्ऋतये खड्गहस्ताय** रक्षोधिपतये दितिसहिताय। जलाधिपतये **वरुणाय पाशहस्ताय** वारुणीसहिताय। **वायवे ध्वजहस्ताय** जीवाधिपतये प्राणशक्तिसहिताय **कुबेराय गदाहस्ताय** यक्षाधिपतये यक्षिणीसहिताय। **ईशानाय त्रिशूलहस्ताय** सर्वाधिपतये उमासहिताय। **ब्रह्मणे पद्महस्ताय** वेदाधिपतये गायत्रीसहिताय। **विष्णवे चक्रहस्ताय** त्रैलाक्याधिपतये लक्ष्मीसहिताय। **अनन्तादिभ्यः अष्टाभ्यः कुलनाग-देवताभ्यः।। अग्न्यादित्याभ्यां, वरुणचन्द्रमोभ्यां, कुमारभौमाभ्यां, विष्णुबुधाभ्यां, इन्द्राबृहस्पतिभ्यां, सरस्वतीशुक्राभ्यां, प्रजापति-शनैश्चराभ्यां, गणपतिराहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता-**

गस्त्याभ्यां।। ब्रह्मणे, कूर्माय, ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्ये, कमलायै, शिख्यादिभ्यः पञ्चचत्वारिंशद्वास्तोष्पतियागदेवताभ्यः।। ब्राह्मचादिभ्यो मातृभ्यः, गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः, ललितादिभ्यो मातृभ्यः, दुर्गाक्षेत्रगणेश्वरदेवताभ्यः, राकादेवताभ्यः, त्रिकादेवताभ्यः, सिनी-वालीदेवताभ्यः, यामीदेवताभ्यः, कुहूदेवताभ्यः, रौद्रीदेवताभ्यः, ऐन्द्रीदेवताभ्यः, वारुणीदेवताभ्यः, बार्हस्पत्यदेवताभ्यः, ॐभूर्देवताभ्यः, ॐभुवर्देवताभ्यः, ॐस्वर्देवताभ्यः, ॐभूर्भुवः स्वर्देवताभ्यः, अखण्ड-ब्रह्माण्ड-देवताभ्यः। धूर्भ्यः, उपधूर्भ्यः महागायत्र्यै, सावित्र्यै, सरस्वत्यै, हेरुकादिभ्यो वटुकादिभ्यः आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थं श्रीमत् श्रीगुरोः ईश्वरस्वरूपस्य लक्ष्मणदेव स्वामिन् गौतमस्य सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिके कन्यार्कगत श्राद्धे गणपतिग्रहमण्डलदेवताभ्यः कलशयागदेवताभ्यः तण्डुल दधिमधु-मात्रामधुपर्कं ॐनमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।। (कलशे पुष्पं।)

उसके पश्चात् इन मन्त्रों से कलश पर फिर फूल डालिये :–

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जात पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। १।।
य प्राणतो निमिषितश्च राजा पतिर्विश्वस्य जगतो बभूव।
ईशे यो अस्य द्विपदः चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। २।।
य ओजोदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य च्छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ३।।
येन द्यौः उग्रा पृथिवी दृढा येन सुस्तम्भितं येन नाकम्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ४।।
य इमे द्यावापृथिवी तस्तभाने आधारयत् रोदसी रेजमाने।
यस्मिन्नधि विततः सूर एति कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ५।।
यस्येमे विश्वे गिरयो महित्वा समुद्रं यस्य रसया सहाहुः।
दिशो यस्य प्रदिशः पञ्चदेवी कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ६।।

आपो ह यन्महती विश्वमायुर्गर्भं दधाना जनयन्तीऽग्निम्।
ततो देवानां निरवर्ततासुः एकः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ७।।
आनः प्रजां जनयतु प्रजापतिर्धाता दधातु सुमनस्यमानः।
संवत्सर ऋतुभिः चाक्लृपानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिः दधातु।। ८।।

आगस्त्यस्यच।

वेनस्तत्पश्यद्भुवनस्य विद्वान्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।
यस्मिन्निदं सञ्च विचैति सर्वं स ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासु।।१।।
प्रतद्वोचेदऽमृतन्नु विद्वान्गन्धर्वो नाम निहितङ्गुहासत्।
त्रीणि पदानि निहिता गुहासु यस्तानि वेद स पितुष्पिताऽसत्।।२।।
सतो बन्धुर्जनिता संविधाता नामानि वेद भवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमाऽनशानास्तृतीये धामन्नऽभ्यैरयन्त।।३।।
परीत्य भूतानि परीत्य लोकान्परीत्य सर्वान्प्रदिशो दिशश्च।
प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्यात्मनात्मानमुप संविवेश।।४।।
परिद्यावापृथिवी विततते सद्य इत्वा परिलोकान्परिदिशः परिस्वः।
ऋतस्य तन्तुं विततं विधृत्य तदपश्यत्तदभवत्तदासीत्।।५।।
सदसस्पतिमऽद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिंमेधामयासिषम्।।६।।
तेजोऽसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि।
प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजवं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृह्णामि यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञियेभ्यो गृह्णामि।।७।।
यस्मादऽन्यो न परोऽस्ति जातो य आविवेश भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया संविदानस्त्रीणि ज्योतिंषि सचते स षोडशी।। ८।।
अर्चन्तस्त्वा हवामहेऽर्चन्तः समिधीमहि।
अग्ने अर्चत ऊतये।। ९।।
अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्णुमर्चत।।१०।।

(इति कलश ऋचकं समाप्तम्।)

अथ यजमानमानीय।।

(यजमान यज्ञोपवीत धारण करें)

ॐ गायत्र्यै नमः ॐ भूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयादोम्।। ॐ सावित्र्यैनमः ॐभूर्भुवः०।।
ॐ सरस्वत्यैनमः ॐभूर्भुवः०।।
यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेजः।।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेन उपनह्यामि।।

(आदो तर्पणम्।)

अस्य श्रीआसनशोधनमन्त्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं च्छन्दः कूर्मो देवतायै नमः हृदि आसनशोधने विनियोगाय नमः सर्वांगेषु।।

(अञ्जलिं धृत्वा पृथिवीं प्रार्थयेत्।)

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

(दर्भकाण्डद्वयं पृथिव्या आसनम्।)

ध्रुवा द्यौः, ध्रुवा पृथिवी, ध्रुवासः पर्वता इमे।
ध्रुवं विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामसि।।
प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै आसनं नमः।।
प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः।

(गन्धलेपं निवार्येत्।)

प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै अर्घोनमः पुष्पं नमः।।

(स्वेष्टदेवताक्रमेण नमस्कारं कुर्यात्।)

शुक्लाम्बरधरं विष्णु शशिवर्णं चतुर्भुजम्।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।।
अभिप्रेतार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्वाविघ्नच्छिदे तस्मै श्रीगणाधिपतये नमः।।
बिभ्रद्दक्षिणहस्तपद्मयुगले दन्ताक्षसूत्रे शुभे।
वामे मोदकपूर्णपात्रपरशू नागोपवीती त्रिदृक्।
श्रीमान्सिंहयुगासनः श्रुतियुगे शङ्खौ वहन्मौलिमान्।
दिश्यादीश्वरपुत्र एष भगवांल्लम्बोदरः शर्म नः।।
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि गणेशस्य महात्मनः।।
यः पठेत्तु शिवोक्तानि स लभेत्सिद्धिमुत्तमाम्।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि।
त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुः साक्षान्महेश्वरः।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
श्रीगुरवे नमः परमगुरवे नमः परमेष्ठिने गुरवे नमः
परमाचार्याय नमः आद्यसिद्धेभ्यो नमः।।
न्यास करे :- दर्भ तीलियां लेकर
अ नाभौ, उ हृदि, म शिरसि।।
भूः पादयोः भुवः हृदि, स्वः शिरसि।।
भूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, भुवः तर्जनीभ्यां नमः, स्वः मध्यमाभ्यां नमः,
महः अनामिकाभ्यां नमः, जनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः,
तपः सत्यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।

भूः पादयोः, भुवः जान्वोः, स्वः गुह्ये, महः नाभौ, जनः हृदि, तपः कण्ठे, सत्यं शिरसि।।
भूः हृदयाय नमः, भुवः शिरसे स्वाहा, स्वः शिखायै वषट्, महः कवचाय हुँ, जनः नेत्राभ्यां वौषट्, तपः सत्यं अस्त्राय फट्।।
तत्सवितुरङ्गुष्ठाभ्यां नमः। धीमहि अनामिकाभ्यां नमः धियोयोनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।
तत् पादयोः। सवितुर्जान्वोः। वरेण्यं कटचाम्। भर्गो नाभौ। देवस्य हृदये। धीमहि कण्ठे। धियो नासिकायाम्। यश्चक्षुषोः। नः ललाटे। प्रचोदयाच्छिरसि।। तत्सवितुर्हृदयाय नमः। वरेण्यं शिरसे स्वाहा। भर्गो देवस्य शिखायै वषट्। धीमहि कवचाय हुम्। धियो योनः नेत्राभ्यां वौषट्। प्रचोदयादस्त्राय फट्।। आपः स्तनयोः। ज्योतिर्नेत्रयोः। रसो मुखे। अमृतं ललाटे। ब्रह्मभूर्भुवः स्वरों शिरसि।।
ॐ तद्विष्णोः परमं पदं हृदयाय नमः। सदा पश्यन्ति सूरयः शिरसे स्वाहा। दिवीव चक्षुराततं शिखायै वषट्। तद्विप्रासो विपण्यवो कवचाय हुम्। जागृवांसः समिन्धते नेत्राभ्यां वौषट्। विष्णोर्यत्परमं पदं अस्त्राय फट्।।
ॐ यो रुद्रो अग्नौ हृदयाय नमः। यो अप्सु य ओषधीषु शिरसे स्वाहा। यो वनस्पतिषु शिखायै वषट्। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश कवचाय हुम्। तस्मै रुद्राय नेत्राभ्यां वौषट्। नमो अस्तु देवा अस्त्राय फट्।।
ॐगणानान्त्वा गणपतिं हवामहे हृदयाय नमः। कविङ्कवीनां शिरसे स्वाहा। उपमश्रवस्तमं शिखायै वषट्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां कवचाय हुम्। ब्राह्मणस्पत आ नः शृण्वंनेत्राभ्यां वौषट्। ऊतिभिः सीदसादनमस्त्राय फट्।।
ॐ चित्रं पादयोः। देवानां जङ्घयोः। उदगाज्जान्वोः। अनीकं ऊर्वोः। चक्षुःशिश्ने। मित्रस्य गुह्ये। वरुणस्य नाभौ। अग्नेर्हृदि। आप्रा द्यावापृथिवी कण्ठे। अन्तरिक्षं बाह्वोः। सूर्य मुखे। आत्मा नासिकायां।

जगतः नेत्रयोः। तस्थुषः ललाटे। च शिरसि।।

ॐजात शिखायां। वेदसे ललाटे। सुनवाम कर्णयोः। सोमं नासिकायाम्। अराती चक्षुषोः। यत ओष्ठयोः। नि दन्तेषु। दहाति तालुनि। वेदो जिह्वायाम्। स ग्रीवायाम्। नः बाह्वोः। पर्षत् हृदि। अति स्तनयोः। दुः कुक्षौ। गाणि नाभौ। विश्वा पृष्ठे। नाव पाण्योः। इव वृष्णयोः। सिन्धुं शिश्ने। दुः कट्याम्। इत ऊर्वोः। अति जङ्घयोः। अग्निः पादयोः।।

(तिलान्विकीर्य। अङ्गुलियों से दर्भकाण्ड छोड़ के, दिशायों को तिल फैंकना।)

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

(प्राणायामं कुर्यात्।)

ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम्
ॐतत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयादोम्।
आपो ज्योती रसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।।१।२।३।।

अपने को जल की छींटे देना

तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति।
मा नः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाऽणो ब्रह्मणस्पते।।

(अनामिका के उपरे पर्वपर पवित्र धारण करें।)

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्त्रधारम्।
अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुलाभवन्तीः।।

(यजमान को तिलक लगायें।)

ओषधयः सम्वदन्ति सोमेन सह राज्ञा यस्मै करोति ब्राह्मणस्त्वं राजन्पारयामसि।। मन्त्रार्था सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव। आयुरारोग्यमैश्वर्यमेतत्त्रितयमस्तु ते जीव त्वं शरदश्शतम्।।

(पवित्र निकाल कर यजमान अपने आप को तिलक लगायें।)

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पञ्चभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः।।

(गन्धलेपं निवारयेत्। पवित्र धारण करके अपने आप को अक्षतफूल चढ़ाना।)

(स्वशिरसि) अर्घोनमः पुष्पं नमः।।

(फिर रक्षाबन्धन। मंत्र इस प्रकार है)

यदा बंधनम् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदाय आयुष्मत् जरदष्टिः यथासत्।।

(गन्धादिकम्। प्रथमं दीपे।)

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोऽयं परिकल्पितः।। अर्घो नमः पुष्पं नमः।।

(धूपे।)

वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः। आधारः सर्वदेवानां धूपोऽयं परिकल्पितः।। अर्घो नमः पुष्पं नमः।।

सूर्ये (निर्माल्य में)

नमो धर्मनिधानाय नमः सुकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमोनमः।। अर्घो नमः पुष्पं नमः।।

(विष्टर अक्षत सहित अर्घपात्रे संकल्पं कुर्यात्।)

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुर्भ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनश्च। न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिस्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।। आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै दीपधूपसङ्कल्पात्सिद्धिरस्तु धूपो नमः दीपो नमः।। ॐतत्सद्ब्रह्माऽद्यतावत्तिथावऽद्य अश्विनमासस्य कृष्णपक्षस्य चतुर्थ्यां* अमुकवासरान्वितायां भगवते वासुदेवाय सङ्कर्षणाय प्रद्युम्नाय

* यहाँ अपने-अपने गुरुपर्वों के निर्वाण दिवसों की तिथि वार आदि का नाम लेना इसी प्रकार से जहाँ-जहाँ इसकी आवश्यकता पड़े वहां भी अपने गुरु परमगुरु व परमेष्ठि गुरु का नाम गोत्र सहित लेना।

अनिरुद्धाय सत्याय पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय सहस्त्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय।। भवायदेवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय भीमायदेवाय महादेवाय ईशानायदेवाय ईश्वरायदेवाय उमासहितायशिवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय।। विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिङ्गलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचद्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभा-सहिताय श्रीमहागणेशाय।। क्लींकांकुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय।। ह्रांह्रींसःसूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय तेजोरूपाय परमार्थसाराय भास्कराय प्रभासहिताय आदित्याय।। अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्यै श्रीशारदाभगवत्यै श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै श्रीज्वालाभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै यमुना-मगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्त्रनाम्न्यै देव्यै मवान्यै विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यः।। अभयङ्करीदेव्यै क्षेमङ्करीभवान्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इहराष्ट्राधिपतये अमुकभैरवाय श्रीमहागायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरुकादिभ्यः वटुकादिभ्यः श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वर-स्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपर- पाक्षिके कन्यार्कगतश्राद्धे दीपधूपसङ्कल्पात्सिद्धिरस्तु धूपो नमः दीपो नमः।।

(अपसव्येन। बाहे जञू करके तिलयुक्त जल से

अपने पितरों का यथाक्रम सगोत्र नाम लेना।)

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे। नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः।।३।। देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एवच। नमः स्वधा च स्वाहा च नित्यमेव भवन्त्विह।।

ॐतत्सद्ब्रह्माऽद्यतावत्तिथावऽद्य अश्विनमासस्य कृष्णपक्षस्य चतुर्थ्यां अमुकवासरान्वितायां पित्रे पितामहाय प्रपितामहाय वृद्धप्रपितामहाय। मात्रे पितामह्यै प्रपितामह्यै वृद्धप्रपितामह्यै। मातामहाय प्रमातामहाय

वृद्धप्रमातामहाय। मातामह्यै प्रमातामह्यै वृद्धप्रमातामह्यै। समस्त-मातापितृभ्यो द्वादशदैवतेभ्यः पितृभ्यः दीपःस्वधा धूपः स्वधा।।

(सव्येन। दाहे जञू करके गुरुमहाराज, परमगुरुमहराज और परमेष्ठी गुरुमहाराज को तिलयुक्त जल से धूप दीप करना)

ॐतत्सद्ब्रह्माऽद्यतावत्तिथावऽद्य अश्विनमासस्य कृष्णपक्षस्य चतुर्थ्यां अमुकवासरान्वितायां श्रीमद्श्रीगुरवे श्रीईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्ते दीपो नम धूपो नमः।

ॐतत्सद्ब्रह्माऽद्यतावत्तिथावऽद्य अश्विनमासस्य कृष्णपक्षस्य चतुर्थ्यां अमुकवासरान्वितायां परमगुरवे श्रीमहताबकाकाय शर्मणगोष्यवा-त्स्यायनाय दीपो नमः धूपो नमः।।

ॐतत्सद्ब्रह्माऽद्यतावत्तिथावऽद्य अश्विनमासस्य कृष्णपक्षस्य चतुर्थ्यां अमुकवासरान्वितायां परमेष्ठिनेगुरवे शैवाचार्य रामदेवस्वामिने भूतउपमन्यवे दीपो नमः धूपो नमः।।

(अपसव्येन। बाहे जञू करके गुरुपिता सम्बन्धी पितरों के लिए धूप दीप)

ॐतत्सद्ब्रह्माऽद्यतावत्तिथावऽद्य अश्विनमासस्य कृष्णपक्षस्य चतुर्थ्यां अमुकवासरान्वितायां आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीमद्श्रीगुरुपित्रे नारायणस्वामिने गौतमाय दीपः स्वधा धूपः०।।

श्रीमद्श्रीगुरुपितामहाय तोतस्वामिने गौतमाय दीपः स्वधा०।।

श्रीमद्श्रीगुरुप्रपितामहाय भवानी-स्वामिने गौतमाय दीपः०।।

श्रीमद्श्रीगुरुवृद्धप्रपितामहाय निधानस्वामिने गौतमाय दीपः०।।

श्रीमद्श्रीगुरुमात्रे कतिजीत्युच्यमान-अरिणी-देव्यै-गौतम्यै दीपः०।।

श्रीमद्श्रीगुरुपितामह्यै माली-त्युच्यमान-हारीदेव्यै-गौतम्यै दीपः०।।

श्रीमद्श्रीगुरुप्रपितामह्यै मीरीत्युच्यमान-श्रुमालीदेव्यै-गौतम्यै दीपः०।

श्रीमद्श्रीगुरुवृद्धप्रपितामह्यै मेद्येत्युच्यमान-भाग्यवानीदेव्यै-गौतम्यै

दीपः स्वधा धूपः स्वधा।।

श्रीमद्श्रीगुरुमातामहाय नानदत्त-आत्रेयाय दीपः०।।

श्रीमद्श्रीगुरुप्रमातामहाय व्यद्र-दत्त-आत्रेयाय दीपः०।।

श्रीमद्श्रीगुरुवृद्धप्रमातामहाय साहिब-दत्त-आत्रेयाय दीपः०।।

श्रीमद्श्रीगुरुपक्षान्तर्गतेभ्यःसमस्त-माता-पितृभ्यः दीपः स्वधा धूपः स्वधा।।

फिर –

तत् विष्णो परमं पदे सदा पश्यन्ति सूरयः। तत् विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत् परमं पदम्।। पढ़कर कलश पर पुष्प डालिये फिर समस्त पूजित कलश देवताभ्यो नमो नमः कहकर साष्टांग प्रणाम करें और कहें - **स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धा श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पति-र्दधातु।।**

।। अथाग्निकुण्डपूजा।।

अब अग्निकुण्ड की पूजा

विधिपूर्वक बनाये गये अग्निकुण्ड पर अश्मचूर्ण (चूना) से ज्वालाचित्र बनाके अग्निकुण्ड के पूर्व में निर्मित पीठ पर ज्वालालिंग (पात्र में एक कन्द तथा श्रीफल को सजाकर) स्थापित करे। अग्निकुण्ड के सामने पश्चिम में निर्मित पीठ पर पुष्पासन पर श्रीगणपति का प्रतीकात्मक अखरोट को स्थापित करे।

अब अग्निकुण्ड के नैर्ऋत कोण (South-west side) पर प्रणीत पात्र नामक एक पात्र (मिट्टी का या कटोरी) रखे। उसमें तिल चावल फूल पानी डालिये। एक विष्टर भी उसमें रखे। उसी विष्टर से जब पण्डित जी आदेश दें, अग्निकुण्ड का जलाभिषेक करे।

प्रणीतं नैर्ऋते स्थाप्यं स विष्णुः नात्र संशयः।।

पात्रं तिलाक्षतैर्मिश्रं कुसुमोदकविष्टरैः।
अग्नेः च ईशान दिग्भागे प्रणीतं अभिधीयते।।
सं व्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तुवः।।
संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः।।
संय्यावः प्रियास्तन्वः सम्प्रिया हृदयानि वः।
आत्मा वो अस्त सं प्रियः संप्रियास्तन्वो मम।।

इन तीन मन्त्रों से उस प्रणीत पात्र में तीन फूल डालिये।

दो दर्भकाण्ड जली हुई अग्नि के दाहिने तरफ यह मन्त्र पढ़कर छोड़ना

निर्दग्धं रक्षो निर्दग्धारातिरपाग्ने।
अग्निमामादञ्जहि निष्क्रव्यादे सेधा देवयजनं वह।।

अब प्राणायाम करे।

अब अग्नि को प्रणीत पात्र में से नौ छींटें देना–

ऋतं त्वा सत्येन समूह्यामि।। १।।

सत्यं त्वर्तेन परिसमूह्यामि।। २।।

ऋतसत्याभ्यां त्वा परिसमूह्यामि।। ३।।

ऋतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि।। ४।।

सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि।। ५।।

ऋतसत्याभ्यां त्वा पर्युक्षामि।। ६।।

ऋतं त्वा सत्येव परिषिञ्चामि।। ७।।

सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि।। ८।।

ऋतसत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि।। ९।।

नौ छींटें देने के बाद अब अग्नि के चारों दिशाओं में दर्भकाण्ड छोड़ना–यज्ञस्व सन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै स्तृणामि पुरस्तात्, (पूर्व की ओर) दक्षिणतः (दक्षिण की ओर) उत्तरतः (उत्तर की ओर) पश्चात् इति स्तरैः (पश्चिम की ओर)

आदौ पञ्च, पुनस्त्रीणि, त्रीणि पञ्च तथैव च।

अध्वर्युः प्राङ्मुखो भूत्वा दद्यात् षोडश वै स्तरान्।।

अर्थात् पूर्व की ओर पांच दर्भकाण्ड, दक्षिण की ओर तीन, उत्तर की ओर भी तीन दर्भकाण्ड और पश्चिम की ओर पांच दर्भकाण्ड छोड़े। कुल सोलह दर्भकाण्ड छोड़े।

फिर नीचे दिये मन्त्र से स्रुव में घी डालिये : – इदं हविः प्रजननं मेऽस्तु दशवीरं सर्धगणं स्वस्तये। आत्मासनि प्रजासनि पशुसनि अभयसनि लोकसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोतु अन्नं पयो रेतो अस्मासु दत्त।।

फिर उसी घी से अग्नि में दो आहुतियां डाले :-

सूर्याय स्वाहा प्रजापतये स्वाहा फिर प्रणीतपात्र में से अग्नि में नौ छीटे डालना ऋतं त्वा सत्येन विमुंचामि सत्यं त्वर्तेन विमुंचामि ऋत सत्याभ्यां त्वा विमुंचामि। तीन तीन बार। फिर दर्भ की तीलियाँ जो अग्नि के इर्द गिर्द

छोड़ी है उन्हें उठाकर अग्नि में डालिये यह पढ़कर –

यस्स्य सन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै नयामि नयामि नयामि।

फिर पुनः अग्निं परिसमूह्यामि, पर्युक्षामि और परिषिंचामि तीन-तीन बार छीटें देना (कुल नौ छीटें देना)॥

अब यज्ञ की वेदी को यजमान स्पर्श करे और यह पढ़े–

(वेदिमुपस्पृश्य।)

आगच्छ वरदे ज्ञानमुद्रे यज्ञैर्विभूषिते।
वेदि वेदमयैर्मन्त्रैः संस्कृते ते नमो नमः॥१॥
त्वामाश्रित्य स्थिता देवा घृताहुतिं पिबन्ति ये।
ते देवास्तुष्टिमायान्तु मा विघ्नं यज्ञकर्मणि॥२॥
पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तिराक्षे पयोधाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥३॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे।
आदित्यमणे नमः। अनुमतिमणे नमः। सरस्वतिमणे नमः।

(अथाञ्जलिः) फिर हाथ जोड़ना

संमुखातिष्ठ वेदि त्वं यथा स्थास्यन्ति देवताः।
स्थानभूता शिवादीनां शक्तीनां सुरपूजिते।
ब्रह्माज्ञयाद्य मे यज्ञं सफलीकर्तुमर्हसि॥

फिर स्रुकस्रुव नामक दो तांवे (वुमुनहुरों की) यथा निर्दिष्ट पूजा 'उत्तरतः संस्तीर्णे, पात्राणि द्वन्द्वं प्रयुनक्ति, दर्भोपयामं शूर्पस्रुचं, दर्भ-कृष्णाजिनं, उलूखल मुसलं दर्भपात्रे चरुमेक्षणं, दर्भाज्यधानौ, स्रुक स्रुवौ आधार समिधौ व्रीहीन् यवान् वा उपसाद्य, पाणौ प्रक्षाल्य, सशूर्पां स्रुचं आदाय, अग्नौ प्रतिताम्य, चतुर्भिः मुष्टिभिः स्रुचं पूरयित्वा, सावित्रादिना वै यथादैवतं निर्वपति।

अब गणपति प्रतीकभूत अखरोट को (वेदीके सामने) और श्रीफल और मीठा कन्द वेदी के पूर्व भाग में ज्वालालिङ्ग को स्थापित कर उसे

'सव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तुवः संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः संय्यावः प्रियास्तन्वः सम्प्रिया हृदयानिवः॥ आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियास्तन्वो मम॥' इस मन्त्र से तीन फूल पात्र में डाले।

'अश्विनोः प्राणस्तौते प्राणन्दत्ता०' से 'तेन जीव' तक सारा मन्त्र पढ़कर गणेश प्रतीकात्मक अखरोट और ज्वालालिंग का जीवाधान करे। फिर 'गायत्र्यै नमः ३' से यथानिर्दिष्ट वेद पुस्तकानुसार आसन, अर्चा, आवाहन, पाद्य, अर्घ्य, गन्ध, अर्घ, और फूल वस्त्र दक्षिणा नैवेद्य डालते रहिये– 'महागणपतये गन्धादि दक्षिणा नैवेद्यान्तम्॥'

(गणपतयेऽक्षोटं ज्वालालिङ्गे श्रीफलकन्दौ च संस्थाप्य॥)

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव।
मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव।
बृहस्पतेः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव।
बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणन्दत्तान्तेन जीव।
ॐगायत्र्यै नमः ॐभूर्भुवःस्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयादोम्॥३॥
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥३॥
ॐ वैश्वानराय विद्महे सप्तार्चिषे धीमहि। तन्नोऽग्निः प्रचोदयात्॥३॥
ॐ पावकाय विद्महे हेलालीलाय धीमहि। तन्नोऽग्निः प्रचोदयात्॥३॥
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥३॥
ॐ सुभगायै विद्महे काममालिन्यै धीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्॥३॥
ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य अश्विनसामस्य कृष्णपक्षस्य चतुर्थ्यां अमुक वासरान्वितायां, महागणपतेः, कुमारस्य श्रियः सरस्वत्याः लक्ष्म्याः विश्वकर्मणः द्वारदेवतानां। भगवतो विनायकस्य एकदन्तस्य कृष्णपिङ्गलस्य गजाननस्य लम्बोदरस्य भालचन्द्रस्य हेरम्बस्य आखुरथस्य विघ्नेशस्य विघ्नभक्ष्यस्य वल्लभासहिस्य श्री महागणेशस्य आदित्यमणेः अनुमतिमणेः सरस्वतिमणेः (पूर्वे)

देवमुखस्य (आग्नेये) सप्तजिह्वस्य (दक्षिणे) वैश्वानरस्य (नैर्ऋते) जातवेदसः (पश्चिमे) अग्नेः (वायवे) हुताशनस्य (उत्तरे) हुतवहस्य (ईशाने) कृष्णावर्त्मनः (मध्ये) अग्नेः सहस्राक्षस्य शतमूर्धः शतं ते प्राणः शतं ते व्यानः शतं ते तेजः सहस्रमुखस्य (ऊर्ध्वे) ब्रह्म-विष्णुमहेश्वरदेवतानां काल्याः, कराल्याः, मनोजवायाः, सुलोहितायाः, धूम्रायाः, विस्फुलिंगिन्याः, सुमनसायाः विश्वचर्याः ब्रह्माण्डव्यापिन्याः ज्वाला- लिङ्गतेजसः धूम्रवर्णायाः नीलवर्णायाः कपिलायाः ज्वालायाः तेजोवत्याः हव्यवाहायाः कव्यवाहायाः रौद्र्याः संहारिण्याः तापिन्याः, पाचिन्याः। भवस्य देवस्य शर्वस्य देवस्य रुद्रस्य देवस्य पशुपति देवस्य उग्रस्य देवस्य भीमस्य देवस्य महादेवस्य ईशानस्य देवस्य ईश्वरस्य देवस्य उमासहितस्य शिवस्य पार्वतीसहितस्य परमेश्वरस्य षड्त्रिंशत्तत्वानां सप्तजिह्वासहितस्य पावकस्य ब्रह्माण्डव्यापक-तेजोमयपरमशिवज्वाला-लिङ्गदेवतानां।। (बड़े तीन गोलों वाले वुमुनहुर के मूल में) (स्रुवमूले) सोमस्य शुक्रस्य अग्नेः। (स्रुवमध्ये) महेश्वरस्य। (स्रुवमूर्ध्नि) ब्रह्मणः। दो गोलों वाले स्रुक-बुमुनहुर के (स्रुकमूले) अपाम्, (मध्ये) भास्करस्य (रन्ध्रद्वये) गौर्याः दुर्गायाः कात्यायन्या मह्याः स्रुक्स्रुवदेवतानां आत्मनोवाङ्मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थं श्रीमद्श्रीगुरोः ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिन- गौतमस्य सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्ते अग्निकुण्डपूजनं, ज्वाला-लिङ्गपूजनं स्रुक्स्रुवपूजनमर्चामहं करिष्ये। ॐ कुरुष्व। इसी प्रकार पुनः कुमारस्य श्रियः सरस्वत्याः लक्ष्म्याः विश्वकर्मणः द्वारदेवतानां। भगवतो विनायकस्य एकदन्तस्य कृष्णपिङ्गलस्य गजाननस्य लम्बोदरस्य भालचन्द्रस्य हेरम्बस्य आखुरथस्य विघ्नेशस्य विघ्नभक्ष्यस्य वल्लभासहिस्य श्री महागणेशस्य आदित्यमणेः अनुमतिमणेः सरस्वतिमणेः (पूर्वे) देवमुखस्य (आग्नेये) सप्तजिह्वस्य (दक्षिणे) वैश्वानरस्य (नैर्ऋते) जातवेदसः (पश्चिमे) अग्नेः (वायवे)

हुताशनस्य (उत्तरे) हुतवहस्य (ईशाने) कृष्णवर्त्मनः (मध्ये) अग्नेः सहस्राक्षस्य शतमूर्ध्नः शतं ते प्राणः शतं ते व्यानः शतं ते तेजः सहस्रमुखस्य (ऊर्ध्वे) ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवतानां काल्याः, कराल्याः, मनोजवायाः, सुलोहितायाः, धूम्रायाः, विस्फुलिंगिन्याः, सुमनसायाः विश्वचर्याः ब्रह्माण्डव्यापिन्याः ज्वाला-लिङ्गतेजसः धूम्रवर्णायाः नीलवर्णायाः कपिलायाः ज्वालायाः तेजोवत्याः हव्यवाहायाः कव्यवाहायाः रौद्र्याः संहारिण्याः तापिन्याः, पाचिन्याः। भवस्य देवस्य शर्वस्य देवस्य रुद्रस्य देवस्य पशुपति देवस्य उग्रस्य देवस्य भीमस्य देवस्य महादेवस्य ईशानस्य देवस्य ईश्वरस्य देवस्य उमासहितस्य शिवस्य पार्वतीसहितस्य परमेश्वरस्य षड्त्रिंशत्तत्वानां सप्तजिह्वा-सहितस्य पावकस्य ब्रह्माण्डव्यापकतेजोमयपरमशिवज्वालालिङ्ग-देवतानां।। (बड़े तीन गोलों वाले वुमुनहुर के मूल में) (स्रुवमूले) सोमस्य शुक्रस्य अग्नेः। (स्रुवमध्ये) महेश्वरस्य। (स्रुवमूर्ध्नि) ब्रह्मणः। दो गोलों वाले स्रुक-बुमुनहुर के (स्रुकमूले) अपाम्, (मध्ये) भास्करस्य (रन्ध्रद्वये) गौर्याः दुर्गायाः कात्यायन्या मह्याः स्रुक्स्रुवदेवतानां आत्मनोवाङ्मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थं श्रीमद्श्रीगुरोः ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिनगौतमस्य सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्ते आसनं परिकल्पयामि नमः फूलों को छोड़ो।

महागणपते कुमारस्य श्रियाः सरस्वत्याः लक्ष्म्याः, विश्वकर्मणः द्वारदेवतानाम् भगवतः विनायकस्य एकदन्तस्य कृष्णपिङ्गलस्य गजाननस्य लम्बोदरस्य भालचन्द्रस्य हेरम्बस्य आखुरथस्य विघ्नेशस्य विघ्नभक्ष्यस्य वल्लभासहितस्य श्री महागणेशस्य आदित्यमणेः अनुमतिमणेः सरस्वतिमणेः (पूर्वे) देवमुखास्य (आग्नेये) सप्तजिह्वस्य (दक्षिणे) वैश्वनरस्य (नैर्ऋते) जातवेदस्य (पश्चिमे) अग्नेः (वायव्ये) हुताशनस्य (उत्तरे) हुतवाहस्य (ईशाने) कृष्णवर्त्मनः (मध्ये) अग्नेसहस्राक्षस्य शतं ते प्राणः शतं ते व्यानाः शतं ते तेजः सहस्रमुखस्य

(ऊर्ध्वे) ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः। काल्याः कराल्याः मनोजवायाः सुलोहितायाः धूम्रायाः स्फुलिंगिन्याः सुमनसायाः विश्वचर्याः ब्रह्माण्डव्यापिन्याः सुलोहितायाः ज्वालालिङ्गतेजसः धूम्रवर्णायाः नीलवर्णायाः कपिलायाः विस्फुलिंगिन्याः ज्वालायाः तेजोवत्याः हव्यवाहनायाः कव्यवाहनायाः रौद्र्याः संहारिण्याः तापिन्याः पाचिन्याः भवस्यदेवस्य शर्वस्यदेवस्य रुद्रस्यदेवस्य पशुपतेदेवस्य उग्रस्यदेवस्य भीमस्यदेवस्य महदेवस्य ईशानदेवस्य ईश्वरदेवस्य उमासहितशिवस्य पार्वतीसहितपरमेश्वरस्य षड्त्रिंशत्तत्वानां सप्त-जिह्वासहितस्य पावकस्य ब्रह्माण्डव्यापकतेजोमयपरमशिव-ज्वालालिङ्गदेवतानाम्।। (स्रुवमूले) सोमास्य शुक्रस्य अग्नेः (स्रुवमध्ये) महेश्वरस्य (स्रुवमूर्ध्नि) ब्रह्मणः। (स्रुक्मूले) अपाम। (मध्ये) भास्करस्य। रन्ध्रद्वये। गौर्याः दुर्गायाः कात्यायन्याः मह्याः स्रुक्स्रुवदेवतानां आत्मनोवाङ्मनः कायोपार्जित-पापनिवारणार्थं श्रीमद्श्रीगुरोः ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेवस्य स्वामिन-गौतमस्य सांवित्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिके कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्ते अग्निकुण्डं ज्वालालिङ्गं स्रुक्स्रुवंपूजयामि। ॐ पूजय।।

एवमावाहनम्।

विनायकं एकदन्तं कृष्णपिङ्गलं गजाननं लम्बोदरं भालचन्द्रं हेरम्बं आखुरथं विघ्नेशं विघ्नभक्ष्यं वल्लभासहितं महागणेशम्। भवं देवं शर्वं देवं रुद्रं देवं पशुपति देवं उग्रं देवं भीमं देवं महादेवं ईशानं देवं ईश्वरं देवं उमासहितं शिवं पार्वतीसहितं परमेश्वरं षड्त्रिंशत्तत्वानां आदित्यमणेः अनुमतिमणेः सरस्वतिमणेः (पूर्वे) देवमुखं (आग्नेये) सप्तजिह्वं (दक्षिणे) वैश्वानरं (नैर्ऋते) जातवेदसं (पश्चिमे) अग्निं (वायव्ये) हुताशनं (उत्तरे) हुतवाहनं (ईशाने) कृष्णवर्त्मानं (मध्ये) अग्निं सहस्त्राक्षं शतमूर्धानं शतं ते प्राणः शतंते व्यानः शतं ते तेजः सहस्त्रमुखं (ऊर्ध्वे) ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताः। कालीं करालीं मनोजवां

सुलोहितां धूम्रां स्फुलिंगिनीं सुमनसां विश्वचरीं ब्रह्माण्डव्यापिनीं ज्वालालिङ्गतेजसं धूम्रवर्णां कपिलां ज्वालां तेजोवतीं हव्यवाहनां कव्यवाहनां रौद्रीं संहारिणीं तापिनीं पाचिनीं सप्तजिह्वासहितं पावकं ब्रह्माण्डव्यापकतेजोमयपरमशिवज्वालालिङ्गदेवताः सोमं शुक्रं अग्निं महेश्वरं ब्रह्माणम्। अपः भास्करं गौरीं दुर्गां कात्यायनीं महीं स्त्रुक्स्त्रुवदेवताः आत्मनोवाङ्मनःकायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीमद्श्रीगुरोः ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणस्वामिनगौतमस्य सांवत्सरिकेश्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं अग्निकुण्ड ज्वालालिङ्ग स्त्रुक्स्त्रुवं च आवहयिष्यामि। ॐ आवाहय।।

(अक्षत कन्दों से फैंक के, नया अक्षत और हाथ में रख के निम्नलिखित मन्त्रों से देवों का आवाहन करें।)

(उत्तरे गणेशाय)

आवाहयाभ्यहं देवं गणेशं सुरपूजितम्।
सदैव विघ्न हर्तारं सर्वकाम फलप्रदम्।।१।।
रक्तवर्णो महातेजा रक्तस्त्रग्दामभूषितः।
बलि पुष्पं चरुश्चैव धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।२।।
निषुसीद गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम्।
न ऋते त्वत्क्रियते किञ्चनारे महामर्कं मघवञ्चित्रमर्च।।३।।

(नैर्ऋते कुमाराय)

आवाहयाम्यहं देवं कुमारं षण्मुखं प्रभुम्।
मयूरासनमारूढं भक्तानामभयङ्करम्।।१।।
शुक्लवर्णो महातेजा रक्तस्त्रग्दामभूषितः।
बलिः पुष्पं चरुश्चैव धूपोऽयं प्रतिगृह्याताम्।।२।।
कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे।
अनीकमस्य न मिमज्जनासः पुरा पश्यन्ति निहितमरुतौ।।३।।

(ईशाने श्रियै)

आवाहयाम्यहं देवीं श्रियं लक्ष्मीं सरस्वतीम्।
तथा च विश्वकर्माणमन्याश्च द्वारदेवताः॥१॥
नानावर्णधरा देवीः रक्तस्त्रग्दामभूषिताः।
बलिः पुष्पं चरुश्चैव धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥२॥
आगच्छागच्छ देवेशि श्रीरोदार्णवसमुद्भवे।
लोकानामुपकारार्थं सन्निधिं कुरु सर्वदा॥१॥
रक्तवर्णामहातेजा रक्तस्त्रग्दामभूषिताः।
बलिः पुष्पं चरुश्चैव धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥२॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्! ॥३॥

(मध्ये सरस्वत्यै)

आवाहयाम्यहं देवीं वागीशीं वाक्प्रदायिनीम्।
हंसस्थां सुरदितिजैः पूजितां विघ्नहारिणीम्॥१॥
शुक्लवर्णामहातेजा रक्तस्त्रग्दामभूषिता।
बलिः पुष्पं चरुश्चैव धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥२॥
इयं शुष्मेभिर्बिसखा इवारुजत्सानु गिरीणां तविषेभिरूर्मिभिः।
पारावतघ्नीमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमा विवासेम धीतिभिः॥३॥

(मध्ये लक्ष्म्यै च)

आवाहयाम्यहं देवीं लक्ष्मीं त्रैलोक्यपूजिताम्।
भक्तं मोहाकुलमार्तं पश्यन्तीं स्निग्धचक्षुषा॥१॥
रक्तवर्णामहातेजा रक्तस्त्रग्दामभूषिता।
बलिः पुष्पं चरुश्चैव धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥२॥
कांस्यस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥३॥

(आग्नेये विश्वकर्मणे)

आवाहयाम्यहं देवं विश्वकर्माणमीश्वरम्।
सर्वासां देवतानां च सदाशिल्पप्रवर्तकम्॥१॥
शुक्लवर्णोमहातेजा रक्तस्त्रग्दामभूषितः।
बलिः पुष्पं चरुश्चैव धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥२॥
ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगणाम्।
श्येनो गृध्राणां स्वदितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्॥३॥

(अथ ब्रह्मकलशे।)

आवाहयाम्यहं देवं ईश्वरं पार्वतीपतिम्।
वृषभासनमारूढं नागाभरणभूषितम्॥१॥
शुक्लवर्णोमहातेजा रक्तस्त्रग्दामभूषितः।
बलिः पुष्पं चरुश्चैव धूपोऽयं प्रतिगृह्याताम्॥२॥
योरुद्रो अग्नौ योऽप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु।
यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः॥३॥

आवाहयाम्यहं विष्णुं गदाशङ्खाब्जचक्रिणम्।
अतसीपुष्पसङ्काशं पीतवाससमच्युतम्॥१॥
पीतवर्णोमहोतेजा रक्तस्त्रग्दामभूषितः।
बलिः पुष्पं चरुश्चैव धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥२॥
प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वऽधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥३॥

आवाहयाम्यहं दुर्गां शङ्खचापशरान्विताम्।
त्रिशूलहस्तां वरदां त्रिनेत्रां चारुहासिनीम्॥१॥
रक्तवर्णामहातेजा रक्तस्त्रग्दामभूषिताः।
बलिः पुष्पं चरुश्चैव धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥२॥
जातवेदसेसुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदऽति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥३॥

अथ अग्निकुण्डे

अग्निं स्वाहासमेतं दितिजसुरनुतं रक्तवर्णं त्रिनेत्रं
कण्ठे हारं भुजाभ्यां वरमभयमथो दक्षिणाभ्यां वहन्तम्।
वामाभ्यामक्षमालाममृतकलशकं रम्यहासं सुवेषं।
नानालङ्कारयुक्तं मृगवरसहितं त्वाह्वये होमकाले।।

(ज्वालालिङ्गे)

आवाहयामि वृषभासनमीश्वरं
तं गौरीपतिं सकलभीतिहरं सुरेशम्।
चर्माम्बरं दशभुजं च त्रिशूलहस्तं
व्यालैर्विभूषिततनुं मखरक्षणार्थम्।।
आवाहयामि दहनं धृतवेदमुद्रं
साक्षस्त्रजं शुकगतिं निजदक्षहस्ते।
वामेऽग्निकुण्डसहितं च तथा सशक्तिं
त्र्यक्षंत्रिलोचनधरं मखरक्षणार्थम्।।
आवाहयाम्यहं देवं देवदेवं हुताशनम्।
जगतोऽस्य समुत्पत्तिस्थितिसंहारकारकम्।।
देवमूर्तिं तु दातारं सर्वदेवमुखं प्रभुम्।
पिङ्गेक्षणं पिङ्गजटं धूमकेतुं विभावसुम्।।
शुकयानगतं देवं सर्वाभरणभूषितम्।
सर्वदा वरदातारं जठरस्थं च देहिनाम्।।
तेजोमूर्तिदुराधर्षं सप्तजिह्वं महाबलम्।
सप्तर्षिसप्तहोतारं समित्सप्तकमच्युतम्।
विष्णुजांशकनिर्देशं भानुं वै जातवेदसम्।
पावकं पुष्टिदं सौम्यं भक्तानां भूतिवर्धनम्।
याजकं यजमानं च पुष्ट्या विभज्य सर्वशः।
इदमर्घ्यमिदं पाद्यं धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

(स्रुवस्रुचोरावाहनम्।)

आवाहम्यहं देवं स्रुवं च विधिपूजितम्।
स्वाहाकार स्वधाकार वषट्कारसमन्वितम्।।
अथादित्यादि सोमादि देवस्थितिप्रदाविमौ।
आवाहयामि स्रुक्स्रुवौ यज्ञसाफल्यहेतवे।।
भगवन्पुण्डरीकाक्ष भक्तानुग्रहकारक।
अस्मद्दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो।।३।।
ॐ भूर्भुवस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयादोम्।।३।।

यवान्विकीर्य प्राणायामं कुयात्।।

पाद्यार्थमुदकं नमः।

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शँ योरभिस्त्रवन्तु नः।।

लाजाश्च कुंकुमं चैव सर्वौषिधि समन्वितम्।
दर्भांकुरं जलं चैव पंचागं पाद्यलक्षणम्।।

भगवतः पाद्यं पाद्यम्।।

भगवते विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिङ्गलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभा-सहिताय महागणेशाय। भवाय देवाय शर्वाय देवाय रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्राय देवाय भीमाय देवाय ईशानाय देवाय ईश्वराय देवाय महादेवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय (पूर्वे) देवमुखाय (आग्नेये) सप्तजिह्वाय (दक्षिणे) वैश्वानराय (नैर्ऋते) जातवेदसे (पश्चिमे) अग्नये (वायव्ये) हुताशनाय (उत्तरे) हुतवाहनाय (ईशाने) कृष्णवर्त्मने (मध्ये) अग्नये सहस्राक्षाय शतमूर्ध्ने शतं ते प्राणाः शतं ते व्यानाः शतं ते तेजः (ऊर्ध्वे) ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः काल्यै कराल्यै मनोजवायै सुलोहितायै धूम्रायै स्फुलिङ्गिन्यै सुमनसायै विश्व चर्यै ब्रह्माण्डव्यापिन्यै ज्वालालिङ्गतेजसे धूम्रवर्णायै नीलवर्णायै कपिलायै

विस्फुलिङ्गिन्यै ज्वालायै तेजोवत्यै हव्यवाहनायै कव्यवाहनायै रौद्र्यै संहारिण्यै तापिन्यै पाचिन्यै। सप्तजिह्वासहिताय पावकाय ब्रह्माण्डव्यापकतेजोमयपरमशिवज्वालालिङ्गदेवताभ्यः। सोमाय शुक्राय अग्नये महेश्वराय ब्रह्मणे। अद्भ्यः भास्कराय गौर्यै दुर्गायै कात्यायन्यै मह्यै स्रुक्स्रुवदेवताभ्यः श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणस्वामिन- गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं पाद्यं नमः।। पाद्यशेषं निवारयेत्।।

पुनः। शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शँ योरभिस्त्रवन्तु नः।।

आपः क्षीरं कुशाग्राणि घृतं च दधि तण्डुलाः।

यवाः सिद्धार्थकाश्चैवमर्घ्यमष्टांगमुच्यते।।

भगवन् विनायक एकदन्त कृष्णपिंगल गजानन लम्बोदर भालचन्द्र हेरम्ब आखुरथ विघ्नेश विघ्नभक्ष वल्लभासहित महागणेश।। भगवन् भव देव शर्व देव रुद्र देव उग्र देव भीम देव ईशान देव ईश्वर देव महादेव पार्वतीसहित परमेश्वर (पूर्वे) देवमुख (आग्नेये) हुताशन (उत्तरे) हुतवाहन (ईशाने) कृष्णवर्त्मन् (मध्ये) अग्ने सहस्राक्ष शत-मूर्धन् शतं ते प्राणाः शतंते व्यानाः शतं ते तेजः (ऊर्ध्वे) ब्रह्म-विष्णुमहेश्वर- देवताः कालि करालि मनोजवे सुलोहिते धूम्रे स्फुलिङ्गिनि सुमनसे विश्वचरि ब्रह्माण्डव्यापिनी ज्वालालिङ्गितेजः धूम्र-वर्णे नीलवर्णे कपिले विस्फुलिङ्गिदेवताः सोम शुक्र अग्ने महेश्वर ब्रह्मन् आपः भास्कर गौरि दुर्गे कात्यायनि महि स्रुक्स्रुवदेवताः श्रीमद्श्रीगुरोः ईश्वरस्वरूप लक्ष्मण-स्वामिन-गौतम, सांवत्सारिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं इदं वोऽर्घ्यं नमः।।

स्रुवस्रुचोः अर्घ पुष्पम्।

सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति।
सादन्यं वितथ्य सभेयं पितृश्रवणं यो ददाश तस्मै। सोमाय नमः।
अन्नात्परिस्रुतो रसँ ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु। शुक्राय नमः।।

अग्निः सप्तिं वाजम्भरं ददात्यग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठम्।
अग्नी रोदसी विचरत्समञ्जन्नग्निर्नारीं वीरकुक्षिं पुरन्धिम्। अग्नये नमः॥

इति स्रुवमूले॥

ईशानं त्वा शुश्रुमा मयं धनानां धनपते गोमदग्ने
अश्ववद्भूरिपुष्टं हिरण्यवद्धन्नवद्धेहि मह्यम्। महेश्वराय नमः॥

इति मध्ये।

ब्रह्मादेवानां पदवीः भेषजं वरूथं तन्वो मम ज्योक् च सूर्यं दृशे।
अद्भ्यो नमः॥ वरुणाय नमः॥
चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावावृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।
भास्कराय नमः। इति मध्ये॥
रन्ध्रद्वये—इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं शचीपतिं काटे निवाड ऋषिरह्वदूतये।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन॥
इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमूतये मारुतं शर्धो अदितिं हवामहे।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन॥
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।
सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्ते सरस्वती दाशुषेवार्यान्दात्।
मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्।
पिपृतान्नो भरीमभिः। गौर्यै नमः। दुर्गायै नमः। कात्यायन्यै नमः।
महौ नमः। स्रुक्स्रुवदेवताभ्यः अर्घो नमः। पुष्पं नमः॥
एताभ्योऽग्निकुण्डज्वालालिङ्ग स्रुक्स्रुवदेवताभ्यो धूपो नमः दीपो नमः॥
एताभ्योऽग्निकुण्डज्वालालिङ्ग स्रुक्स्रुवदेवताभ्यो वासो नमः॥
एताभ्योऽग्निकुण्डज्वालालिङ्ग स्रुक्स्रुवदेवताभ्यो
दक्षिणायै तिलहिरण्यरजतनिष्कर्णं ददानि।
एता देवताः सदक्षिणान्नेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु॥

ततः नैवेद्यम्।।

सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्ये विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्म-विष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय आश्वियुजे प्राकाम्यासहिताय योगीश्वराय। धीसहिताय पद्मनाभाय।। दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगण-यागदेवताभ्यः। भगवते वासुदेवाय सङ्कर्षणाय प्रद्युम्नाय अनि-रुद्धाय सत्याय पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय सहस्त्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। भवाय देवाय शर्वाय देवाय रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्राय देवाय भीमाय देवाय ईशानाय देवाय ईश्वराय देवाय महादेवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय (पूर्वे) देवमुखाय (आग्नेये) सप्तजिह्वाय (दक्षिणे) वैश्वानराय (नैर्ऋते) जातवेदसे (पश्चिमे) अग्नये (वायव्ये) हुताशनाय (उत्तरे) हुतवाहनाय (ईशाने) कृष्णवर्त्मने (मध्ये) अग्नये सहस्त्राक्षाय शतमूर्ध्ने शतं ते प्राणाः शततं व्यानाः शतं ते तेजः (ऊर्ध्वे) ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः। काल्यै कराल्ये मनोजवाये सुलोहितायै धूम्रायै स्फुलिङ्गिन्यै सुमनसायै विश्व चर्यै ब्रह्माण्डव्यापिन्यै ज्वालाङ्गितेसे धूम्रवर्णायै नील-वर्णायै कपिलायै विस्फुलिङ्गिन्ये ज्वालायै तेजोवत्यै हव्यवाहनायै कव्यवाहनायै रौद्र्यै संहारिण्यै तापिन्यै पाचिन्यै। सप्तजिह्वासहिताय पावकाय ब्रह्माण्डव्यापकतेजोमयपरमशिवज्वालालिङ्गदेवताभ्यः सोमाय शुक्राय अग्नये महेश्वराय ब्रह्मणे। अद्भ्यः भास्कराय गौर्यै दुर्गायै कात्यायन्यै मह्यै स्त्रुक्स्त्रुवदेवताभ्यः श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मण-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सारिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगतश्राद्धनिमित्तं ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामिनमः।।

अथ पुरोहितपूजा।।

शतक्रतोर्यथा जीवो विष्णोर्ब्रह्मा यथा पुरः।
अध्वर्योभूत्तथा मे त्वं भव ब्रह्मन् नमोऽस्तु ते।।
बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसर्त प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।
आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथैव भव यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यवर ज्ञानद!।।
यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोके द्विजोत्तमः।
तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन् ब्रह्मन्सन्निहितो भव।।

फिर आसन, अर्चा आवाहन, पाद्य, अर्घ्य, गन्ध, पुष्प, वस्त्र, दक्षिणा और नैवेद्य तक सम्पूर्ण पूजा करे।

अथ स्रुक्स्रुवप्रतिपादनम्।

फिर यजमान संकल्प करके 'आत्मनो० यज्ञ साफल्यार्थे सर्वात्मक विष्णु प्रीत्यर्थं ब्राह्मणाय स्रुक स्रुवौ' (दो बड़े पीतल) के बनाये चमचे (वुमुनहुर इति कश्मीरी भाषा में) 'प्रतिपादयामि' तीन बार पढ़े और ब्राह्मण भी 'प्रतिगृह्णामि' यह तीन बार पढ़े। दोनो हाथों में इन्हें पकड़कर हिलाते हुए ब्राह्मण पढ़े।

'त्रातारं इन्द्रं अवितारं' से लेकर 'पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्ति' तक पढ़े।

सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसविष्णुर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् आदधे।। आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थं यज्ञसाफल्यद्वारा सर्वात्मकविष्णुप्रीत्यर्थ ब्राह्मणाय स्रुक्स्रुवौ प्रतिपादयामि।। ३।।
प्रतिगृह्णामि प्रतिगृह्णामि प्रतिगृह्णामि।।३।।
त्रातारमिन्द्रं अवितारं इन्द्रं हवे हवे सुहवं शूरं इन्द्रम्।

ह्वयामि शक्रं पुरहूतं इन्द्रं स्वस्तिनो मधवा धातु इन्द्रः।।२।।
इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं शची पतिं काटे निबाढ ऋषिराह्वदूतये।
रथं न दुर्गात् वसवः सदानवो विश्वस्मात् नो अहंसोनिष्पि पर्तन।।
चित्तिः स्त्रुक्चित्तमाज्यं वाग्वेदिराधीतं बर्हिः।
केतोरग्निर्विज्ञातमग्निर्वाचस्पतिर्होता मन उपवक्ता
प्राणो हविः सामाध्वर्युरिन्द्रं गच्छ नमः।। ४।।
कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सवा कया शचिष्टया वृता।। ५।।
अन्नात्परि स्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रम्।
ऋतेन सत्यं इन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।। ६।।
ब्रह्मा देवानां पदवी कवीनां ऋषिः विप्राणां महिषो मृगाणम्।
श्येनो गृधाणां स्वधितिः वनानां सोमः पवित्रं अत्येति रेभन्।।७।।
प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वऽधिक्षयन्ति भुवनानि विश्वा।। ८।।
यो रुद्रो अग्नौ योऽप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु।
यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः।। ९।।

ततोऽञ्जलिनाभ्यर्थना।

पृथिवी शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिद्यौःशान्तिर्दिशः शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिः त्वयाहं शान्त्या सर्व शान्त्या मह्यं द्विपदे चतुष्पदे शातिं करोमि शान्तिर्नो अस्तु शान्तिरसीति शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

ततोग्निं पुष्पं दत्त्वा।

सप्तहस्तश्चतुश्शृङ्गः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः। त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः।। १।। यावद्धोमं तथाकर्म करिष्ये त्वदनुज्ञया। तावत्कालमिहातिष्ठ वह्ने विघ्नं निवारय।। २।। अब यजमान उठकर आग्नेय कोण में (South-east) खड़ा होकर शर्करा को हाथों में रखकर अपने श्वास बल से 'ॐ हुं हुत भुजे स्वाहा अग्ने शकेमते' यह मन्त्र तीन

बार पढ़कर प्रत्येक बार सामग्री यज्ञ में डालते रहे। ततोग्निकोणे धमयेत् **ॐ हुं हुतभुजे स्वाहा॥ ३॥ अग्ने शकेमते मन्त्रः।** अब समित् (यज्ञ के लिए लकड़ी का शुद्धि मन्त्र) 'ॐ भूर्भुवः स्वः०' इस मन्त्र से समिधा को शुद्ध करके लावे। फिर उस समिधा को घी और दूध से नीचे दिये मन्त्र से स्पर्श करे–'घृतवती भुवनानामयि०' से लेकर 'प्रदिशः सन्तु मह्यम्' तक॥ अथ समित्पूजा। **ॐ भूर्भुवः स्व मन्त्रेण समिद्धमानयेद्बुधः। घृतवती पयः पृथिवी इति घृतदुग्धेन संस्पृशेत्॥** अब दो दर्भकाण्ड यज्ञ की अग्नि से जलाकर यज्ञ के ऊपर से घुमानी चाहिए–'येन देवा ज्योतिषोर्ध्वा उदारयम्' से लेकर 'यजमानाय स्वस्ति' तक॥ दर्भकाण्डद्वयं प्रज्वाल्या-वर्तनीयम्। **येन देवा ज्योतिषोर्ध्वा उदारय येनादित्या वसवो येन रुद्राः। येनाङ्गिरसो महिमानमानशुस्तेनैत्वं यजमानाय स्वस्ति इति॥** अब अग्नि के सामने हाथ जोड़े और यह मन्त्र पढ़े–**पृथिवी समित्तामग्निं समिन्धे तामहं समिन्धे सा मा समिद्धा सुसमिद्धा तेजसा वर्चसा यशसा ब्रह्मवर्चसेन समिन्ध्यात् अन्तरिक्षं समित्तां वायुं समिन्धे तामहं समिन्धे सा मा समिद्धा सुसमिद्धा तेजसा वर्चसा यशसा ब्रह्मवर्चसेन समिन्ध्यात् द्यौः समित्तां सूर्यं समिन्धे तामहं समिन्धे ओषधीनां पते! सोम हव्यकव्येष्वऽयुक्तिताम्। यथा तथा गतां सम्यक् दूरीकुरु नमोऽस्तुते॥** अब 'हव्यै कव्यै ····· वह्निप्रियायै' तक पढ़कर अग्नि की आसन, पूजा आवाहन, पाद्य अर्घ्य, गन्ध, पुष्प, दक्षिणा आदि दे – 'हव्यं प्रणीहि हव्यं शृणीहि०' इस मन्त्र से प्रणाम करे। ततः पूजा। **हव्यै कव्यै कुरुकुल्यायै सिन्धव्यै सिंह्यै अमृतवर्धिन्यै अमृतरूपिण्यै पावकवर्धिन्यै वह्निप्रियायै पाद्यं नमः इदं वो अर्घ्यं, गन्धं नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः, धूपो नमः, दीपो नमः, वासो नमः, दक्षिणातिल हिरण्य रजत निष्कर्णं ददानि आपन्नोऽसि शरण्योऽसि०** नैवेद्यान्त-मर्चयित्वा प्रणमेत्। **हव्यं प्रणीहि हव्यं शृणीहि हव्यं श्रपय हव्यं पाचय हव्यमसि हव्यत्वा हव्यं वहसिहव्यं सीद सुगमं प्रयासि॥**

(अब अध्वर्यु की वेद पुस्तक की पूजा)–

'सरस्वतीं देवयन्तो० वार्यंधात् लक्ष्म्यै मेधायै' से 'अमृतेश्वर्यै' तक पूरा मन्त्र पढ़कर गन्ध आदि से वस्त्र दक्षिणा और नैवेद्य तक पूरी पूजा करे। ततः पुस्तकपूजा। **सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे मायमाने। सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात्।। लक्ष्म्यै मेधायै धरायै धृत्यै तुष्ट्यै पुष्ट्यै वागीश्वर्यै वाग्देवतायै गायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै अमृतेश्वर्यै गन्धंनमः अर्घो नमः पुष्पं नमः दीपो नमः, धूपो नमः वासो नमः दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निष्कर्णं ददाति नैवेद्यं नमः।** सारी यज्ञ सामग्री में से थोड़ा-थोड़ा उठाके एक पात्र में रखकर पुस्तक के सामने रखना।

गन्धादि नैवेद्यान्तं कृत्वा।। अग्निभद्रं पठेत्।

अग्नये समनमत्पृथिव्यै समनमद्यथाग्निः पृथिव्या
समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।।१।।
वायवे समनमदन्तरिक्षाय समनमद्यथा वायुरन्तरिक्षेण
समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। २।।
सूर्याय समनमद्दिवे समनमद्यथा सूर्यो दिवा
समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। ३।।
वरुणाय समनमदद्भ्यः समनमद्यथा वरुणोऽद्भिः
समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।।४।।
साम्ने समनमदृचे समनमद्यथा सामर्चा
समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। ५।।
ब्रह्मणे समनमत्क्षत्राय समनमद्यथा ब्रह्मक्षत्रेण
समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। ६।।
राज्ञे समनमद्विशे समनमद्यथा राजा विशा
समनमदेवं मह्यं भद्राः संनतयः संनमन्तु।। ७।।
रथाय समनमदश्वेभ्यः समनमद्यथा रथोऽश्वैः
समनमदेवं मह्यं भद्राः संमनतयः संनमन्तु।। ८।।

पक्षयाग विधिः

(सामग्री-घी और सारी हवन की सामग्री)

आज्यहोम उपरोक्त सामग्री से

अन्नहोम –इस होम के लिए एक किलो चावल का पतीला घी और हवन सामग्री भी थोड़ी सी मात्रा में मिलाना। इस चावल के पतीले से दो पके चावल के छोटे आकार के पिण्ड (बतम्यट कश्मीरी भाषा में) निकालकर अलग-अलग रखना। फिर इस पतीले में सामग्री, दूध आदि मिलाना।

अब दो मुखवाले स्रुव में "विष्टुर" रखकर चार बार प्रणीत पात्र के जल से उसे भिगोकर यह पढ़िये :–

उत्तरतः संस्तीर्णे, पात्राणि द्वन्द्वं प्रयुनक्ति, दर्भोपयामं शूर्पस्रुचं दर्भकृष्णाजिनं उलूखलमुसलं, दर्भपात्रे चरुमेक्षणं दर्भाज्यधानौ स्रुक् स्रुवाधार समिधौ व्रीहीन् यवान् वा उपसाद्य अब हाथ धोले फिर स्रुक्स्रुव को उठकर नीचे मुख करके अग्निज्वाला में सेंक ले फिर चार मुट्ठियों से स्रुच को भरके "दो चावल के पहले ही अलग रखे हुए छोटे पिण्डों में से एक पिण्ड (बतम्यट) को –

सत्रावित्रणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां आददे। अग्नये अग्नीषोमाभ्यां / अग्नये इन्द्राग्निभ्यां - पर्वतन्त्रयाग देवताभ्यो जुष्टं निर्वपामि।। यह पढ़कर स्पर्श करे। इसके पश्चात् स्रुव में डाले गये विष्टुर को खोलना। फिर उसे नये सिरे से बनाना जल की अंजलि से भर लेना। फिर पढ़िये :-

विष्णोर्मनसा पूते स्थः। ताभ्यां देवो व इति, स्रुच् उदकं उत्पूय, अङ्गुष्ठ उपकनिष्ठिकाभ्यां, उत्तनाभ्यां पाणिना, उदगग्रौ दर्भौ आदाय, प्राचीनं उत्पुनाति, सकृत् मन्त्रेण द्विस्तूष्णीम्। देवो वः सवितोत्पुनातु अच्छिद्रेण, पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य

त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां आददे अग्नये अग्नीषोमाभ्यां / अग्नये इन्द्राग्निभ्यां पर्वतन्त्रयागदेवताभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि (sprinking with water) **यह पढ़कर उसी चावल के छोटे पिण्ड पर (बतभ्यट) जहां पहले छोड़ा था यह विष्टुर छोड़िये।** इस के पश्चात् इसी चावल के पिण्ड पर (बतभ्यट) जिस पर "विष्टुर" रखा है पहले उसे धोना फिर उसी में मेक्षण (मोटे दर्भ के टुकड़े को) सीधा करके घुसीटना यह पढ़कर –

पात्राणि च तूष्णीं न्यञ्चि पात्राणि, प्रयुनक्ति उत्तानानिकृत्वा प्रोक्षति, ततो व्रीहीन् अवहन्ति, त्रिः सुफलीकृतान् निस्तुषान्करोति, उत्पूय आपो अधिश्रयति, प्रक्षाल्य तण्डुलान् पवित्र अन्तर्हितान् आवपति, प्रक्षाल्य अग्रतो मेक्षणं अवदधाति।

उल्मुकेन त्रिः परिहरति पर्यग्नीकरणम् = अब चावल के पात्र को (बत बुहगुन को) तीन बार उल्मुक से (दर्भमात्रेण चोल्मुकं) अग्नि के इर्द-गिर्द करे, इस दर्भ काण्ड को अग्नि में अधजला करना और फिर चावल के पात्र के इर्द-गिर्द घुमाना अब घी के पात्र को (आज्य पात्र को) अग्नि पर रखना उसमें नया "विष्टुर" डालना और स्रुव से आलोडन करना यह पढ़कर :–

पृश्न्याः पयोसि, तस्यते क्षीयमाणस्य, पिन्वमानस्य पिन्वमानं निर्वपामि। पञ्चावान्त्वा देवताभ्यो गृह्णामीति गृहीत्वा यतीनां भृगूणां स्यूमरश्मेः सुरश्मेः पृथुरश्मेरिति। पञ्चानान्त्वां वातानां धर्त्राय गृह्णामि, पञ्चानान्त्वा सलिलानां धर्त्राय गृह्णामि, पञ्चानान्त्वा पृष्ठानां धर्त्राय गृह्णामि। पञ्चानान्त्वा दिशां धर्त्राय गृह्णामि। पञ्चानान्त्वा पञ्चजनानां धर्त्राय गृह्णामि। भूरस्माकं हव्यन्देवानां आशिषो यजमानस्य चरोस्त्वा पञ्चबिलस्य् धर्त्राय गृहणामि, धामासि प्रियन्देवानां अनाधृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृह्णामि।

अब आज्यपात्र से विष्टुर को निकालकर निर्माल्य में डालिये। आज्यपात्र को भूमि पर रखे। आज्यपात्र में अब यजमान को आयुष्य दर्शन कराना।

यह मन्त्र पढ़ते रहना:–

हविरसीति वैश्वानरमुन्नीत शुष्मं सत्यौजाः सहो नामासि सह-स्वारातिं सहस्व पृतनायतः सहस्त्रवीर्यं असि तन्मा जिन्वाज्यस्याज्यमसि हविषो हविः सत्याभिघृतमसि सत्येनत्वाभि धारयामि सत्यं वै चक्षुः।

तत्सद् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य - (मास-तिथि-वार सहित) **आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थं सद्गुरोः ईश्वरस्वरूपस्य सांवत्सरिके श्राद्धे। कन्यार्कगतके अपरपाक्षिके श्राद्धे गार्हपत्य फल प्राप्त्यर्थे अग्नये अग्नीषोमाभ्यां अग्नये इन्द्राग्निभ्यां पर्वतन्त्रयाग-देवताभ्यः अग्नये वैश्वानराय इदं आज्यं अर्पयामि नमः।।**

यह कहकर अखरोट सहित सिक्का डालिये और घी पात्र में स्वस्वरूप को तथा अग्नि की ज्योति को देखे। कहा है – **(वेदवीक्षणमंत्रेन यजमानः सपत्निकः। समग्रं दर्शयेत् शीर्षं पुत्रपौत्र प्रर्वधनम्।।)**

अब यजमान की पत्नी आयुष्य दर्शन करे :–

इदं त्वा अदब्धेन त्वा चक्षुषावपश्यामि रायस्पोपाय सुप्रजस्त्वाय सुवीर्याय अग्नये वैश्वानराय इदं आज्यं अर्पयामि नमः।।

विधि पूर्ववत्। अब उपयाम अर्थात् चौदह कुशाओं या सात कुशाओं का ग्रन्थि डालकर जो दर्भ का प्रारूप बना जाता है उस के विषय में कहा है कि – **(होमे विघ्नकराः यक्षा अन्नाज्य बलहारकाः। तदर्थममुपयामं तु धार्यं सव्येन वज्रवत्।।)**

अर्थात् यज्ञ मे बहुतेरी बाधायें डालने वाले तथा अन्न और घी की शक्ति का अपहरण करने वाले भूतप्रेत यक्ष आदि खड़े होते हैं। उनसे यज्ञ को सुरक्षित रखने के लिए सव्यभाग में वज्र की भांति उपयाम को अध्वर्यु या यजमान धारण करे।

अब अध्वर्यु निम्नलिखित विधि स्वाध्याय के पश्चात् अपनाये :–

अभ्युक्ष्य पवित्रमग्नौ अभ्यादधाति, स्त्रुक स्त्रुवौ प्रतिताप्य संमार्ज-नान्यग्नौ प्रहरत्युपयामं स्त्रुचमादाव तस्यां चतुर्गृहीतं उद्धृत्य। तेजोसि, शुक्रमसि, ज्योतिरसि धामासि। आस्तीर्णे तां निधाय, अभ्युक्ष्याधार

समिधौ, अग्नेरभितः ऊर्ध्वं आदधाति, उत्तरां प्रथमां, दक्षिणां द्वितीयां श्रृतं चरुं अभिघार्य, तं उदग् वासयति, तत्र चाभिघार्य अलंकृत्य पात्र्यां सादयति अभिघार्य बर्हिषि आसादयति, पूर्वं आज्यं अपरं स्थालीपाकं अभिघार्य। स्त्रुवं आज्यपूर्णं दक्षिणतः स्त्रुचो, बर्हिषि निदधाति, परिस्तीर्य वेदिं उदक्, तूलमासनं आस्तीर्य तत्र उपविश्य अग्निं अभ्यर्च्य। अर्थात् स्त्रुक और स्त्रुव को अग्नि पर सेक करने के पश्चात् इस ''उपयाम'' के अग्रभागों से मार्जन करे, स्त्रुव को आगे और स्त्रुच को अग्नि के बीच भाग में रखकर अग्रभागों से पात्र का मार्जन करे फिर स्त्रुव के 'दण्ड' को उपयाम के मूल भागों से आगे से प्राचीतक चारों ओर मार्जन करना फिर स्त्रुच को नीचे से प्रतीची तक यथोक्त रीति से मार्जन और सिंचन करके अग्नि पर सेकना फिर अग्नि पर संमार्जन करना, उपयाम से प्रताडित स्त्रुच को लेकर, चार बार उठाकर ''तेजोसि, शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि'' यह कहकर स्त्रुच के चार भागों पर घी डालना फिर सारी यज्ञ सामग्री से परिपूर्ण बने चावल के पात्र को (बतबुहगुन) पूरी तरह से हिलाये फिर अग्नि कुण्ड के उत्तर की ओर एक दर्भकांड डालिये दक्षिण की ओर एक डालिये। (बतबुहगुन) चावल के पात्र में घी डालिये पुष्प अर्घ्य गन्ध आदि से अलंकृत करे फिर अग्नि पर रखे। अब आज्यपूर्ण स्त्रुव को स्त्रुच के दक्षिण भाग पर रख कर अग्नि पर रखे। विस्तृत यज्ञवेदि के उत्तर में आसन पर बैठकर अब प्रज्वलित अग्नि की पूजा करे : – फूल डालिये –

ज्वालामण्डितं आकाशं साक्षमाला कमण्डलुम्।
त्रिनेत्रं पंचवक्त्रं च होमकालेतु चिन्तयेत्।।
शुकपृष्टगतं देवं शक्तिहस्तं चतुर्भुजम्।
मृगाजिनेन सन्नद्धं पुष्पवर्णं हुताशनम्।।

अब गन्ध आदि डालिये –

अग्नये वैश्वानराम शुकारूढाय, स्वाहासहिताय पावकाय त्रिनेत्राय तेजोरूपाय शक्तिहस्ताय समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

अब हाथ में उपयाम रखकर स्रुव से घी की आहुति देना –

दर्भोपयामपाणिः स्रुवेणाधारं कुमारस्य याम्यायनस्य मनसा। प्रजापतये स्वाहा।

अब और घी की आहुति देना ऊपर उठकर –

तिष्ठन् स्रुचा ऊर्ध्वो अध्वरो दिवस्पृग्हुतो यज्ञो यज्ञपतेः इन्द्रवान् बृहद्भाः स्वाहा।

अब नीचे बैठकर घी और यज्ञ सामग्री से पांच आहुतियां देना –

युक्तः पुरस्तात् वह हव्यं अग्नेऽग्ने विद्धि क्रियमाणं मयेदम्।
त्वं भिषग् भेषजस्य अस्य गोप्ता
त्वया प्रसूता गाम् अश्वं पुरुषं सनेम स्वाहा।।
हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वान्यग्ने वयुनानिविद्वान्।
सप्तास्यानि तव यानि अग्ने तेभ्यो जुहोमि सजुषस्व हव्यं स्वाहा।।
यावन्तो देवाः त्वयि जातवेदः तिर्यञ्चो घ्नन्ति पुरुषस्यकर्म।
तेभ्यः एतत् भागधेयं जुहोमि ते मे तृप्ताः कामं अनुतर्पयन्तु स्वाहा।
अग्ना अग्निश्चरति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अधिराज एषः।
स नः सूनुः सयुजायुजाच मा देवानां रीरिषत् भागधेयं मोऽस्मभ्यं रीरिषत् भागधेयं स्वाहा।।

अब हाथ से उठाकर कान में उपयाम को रखना –

यज्ञसामग्री डालते रहिये नीचे दिये मन्त्रों से : –

अर्थात् **प्रजापते नहि त्वदन्यः से** लेकर **विराट् पते अस्मै ब्रह्मणे अस्मै क्षत्राय महिं शर्म यच्छ स्वाहा** तक।

प्रजापते न हि त्वदन्य एता विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा। (आयुषः प्राणमित्येकादश नाभेर्भौवनस्यार्षम्) आयुषः प्राणं सन्तनु स्वाहा। प्राणाद्व्यानं सन्तनु स्वाहा। व्यानादपानं सन्तनु स्वाहा। अपानाच्चक्षुः सन्तनु स्वाहा। चक्षुषः क्षोत्रं सन्तनु स्वाहा। श्रोत्राद्वाचं सन्तनु स्वाहा

वाच। आत्मानं सन्तनु स्वाहा। आत्मनः पृथिवीं सन्तनु स्वाहा। पृथिव्या अन्तरिक्षं सन्तनु स्वाहा। अन्तरिक्षाद्दिवं सन्तनु स्वाहा। दिवः स्वः सन्तनु स्वाहा। (आकूतमिति त्रयोदशजया जयानां चित्राबलाकस्य सौरेः) आकूतं च स्वाहा। आकूतिश्च स्वाहा। आधीतं च स्वाहा। आधीतिश्च स्वाहा। विज्ञातं च स्वाहा। विज्ञातिश्च स्वाहा। चित्तं च स्वाहा। चित्तिश्च स्वाहा। नाम च स्वाहा। क्रतुश्च स्वाहा। दार्शश्च स्वाहा। पौर्णमासश्च स्वाहा। प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतनाज्येषु। तेभिर्वाजं वाजयन्तो जयेम तेनेमा विश्वाः पृतना अभिष्याम स्वाहा। (बृहस्पतिपुरोहिता इत्यभ्यातानान्देवानाम्)। बृहस्पतिपुरोहिता देवा देवानां देवा देवाः प्रथमजा देवा देवेषु पराक्रमध्वं स्वाहा। प्रथमा द्वितीयेषु द्वितीयास्तृतीयेषु त्रिरेकादशास्त्रयस्त्रिंशा अनु व आरभे स्वाहा। इदं शकेयं यदिदं करोमि स्वाहा। ते मानव ते मा जिन्वतास्मिन्ब्रह्मण्य-स्मिन्क्षेत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्यां देवहूत्यां स्वाहा।

(ऋताषाडिति द्वादशभिर्वहन्तैर्होमः स नो भुवनस्येति स्वाहान्तेन त्रयोदशेन)।

(राष्ट्रभृतामौपनिषदानामृषीणाम्)

ऋताषाड्ऋतधामाग्निर्गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्। तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदा नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्। तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। संहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्। तस्य मरीचयोऽप्सरस आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्।। तस्य दक्षिणा अप्सरसस्तवा नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै

स्वाहा वट्। तस्य ऋक्सामान्यप्सरस एष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वट्। तस्यापोऽप्सरस ऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा वट्। स नो भुवनस्य पते यस्य त उपरि गृहा विराट् पते अस्मै ब्रह्मणेऽस्मै क्षत्राय महि शर्म यच्छ स्वाहा।

अब स्रुच में घी डालकर एक 'कन्द' और सामग्री उठाकर तेजोसि

अग्निः वृत्राणि जङ्घन्द् द्रविणस्युविपण्यया।

समिद्रः शुक्र आहुतः स्वाहा पढ़कर यज्ञ में डालिये।

अब फिर स्रुच में घी डालकर यज्ञ सामग्री सहित एक और आहुति अग्नि के दक्षिण भाग पर डालना - यह मन्त्र पढ़कर –

त्वं सोमासि सत्पतिस्त्वं राजोत वृत्रहा

त्वं भद्रो असि क्रतुः स्वाहा।

अब तर्पण करना आज्य होम का।

अन्नहोम—अब "चरु" पके चावल के पिण्ड को 'स्रुक्' में रखके 'निषुसीद गणपते०' मन्त्र पढ़ते-पढ़ते पण्डित जी अग्नि में डाले और यजमान यज्ञसामग्री अग्नि में साथ-साथ डाले। यह पहले मन्त्र निषुसीद गणपते० के लिए अभिप्रेत विधि है। उसके पश्चात् अन्य मन्त्रों के लिए चरु और घी आहुति साथ-साथ 'स्रुव्' में डालकर शेष मन्त्रों के उच्चारण के साथ अग्नि में डालते रहिये 'स्वाहा' उच्चस्वर से बोलते हुए। अर्थात् 'कुमाराय स्वाहा' श्रियै स्वाहा, लक्ष्म्यै स्वाहा' इत्यादि दो नम्बर मन्त्र से लेकर १७३ मन्त्र तक स्वाहा का उच्चारण करते हुए यज्ञ में आहुति (चरु-घृत मिश्रित) डालते रहिये।

अब पहले दूसरा चावल का पिण्ड जो पहले अलग रखा था अब उसे उठाकर स्रुच पर डालना उसे भी तेजोसि शुक्रमसि धामासि पढ़कर फिर अग्नि में निषुसीद गणपते स्वाहा तक पढ़कर डालना। फिर महागणपतये स्वाहा से अन्त तक चलना।

निषुसीद गणपते गणेषु त्वामाहुविप्रतमं कवीनाम्।
न ऋते त्वत्क्रियते किञ्चनारे महार्मकं महाविञ्चत्रमर्चं स्वाहा।।

१. ॐ महागणपतये स्वाहा
२. ॐ कुमाराय स्वाहा
३. ॐ श्रियै स्वाहा
४. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा
५. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा
६. ॐ विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः स्वाहा
७. ॐ प्रजापतये स्वाहा
८. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
९. ॐ कलशदेवताभ्यः स्वाहा
१०. ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वर देवताभ्यः स्वाहा
११. ॐ चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय स्वाहा
१२. ॐ ऋतुपतये नारायणाय स्वाहा
१३. ॐ रुक्मिणीसहिताय कृष्णाय स्वाहा
१४. श्रीसहिताय केशवाय स्वाहा।
१५. ॐ प्रियासहिताय स्वाहा
१६. ॐ अनन्ताय स्वाहा
१७. ॐ वागीश्वरीसहिताय नारायणाय स्वाहा
१८. ॐ प्रीतिसहिताय अच्युताय स्वाहा
१९. ॐ कान्ता सहिताय माधवाय स्वाहा
२०. ॐ शक्तिसहिताय चक्रिणे स्वाहा
२१. ॐ क्रियासहिताय गोविन्दाय स्वाहा
२२. ॐ सिद्धिसहिताय वैकुण्ठाय स्वाहा
२३. ॐ मतिसहिताय विष्णवे स्वाहा
२४. ॐ शोभासहिताय जनार्दनाय स्वाहा
२५. ॐ विभूतिसहिताय मधुसूदनाय स्वाहा
२६. ॐ महिमासहिताय उपेन्द्राय स्वाहा
२७. ॐ इच्छासहिताय त्रिविक्रमाय स्वाहा

२८. ॐ लक्ष्मीसहिताय यज्ञपुरुषाय स्वाहा
२९. ॐ धृतिसहिताय वामनाय स्वाहा
३०. ॐ कान्तिसहिताय वासुदेवाय स्वाहा
३१. ॐ रति सहिताय श्रीधराय स्वाहा
३२. ॐ प्राप्तिसहिताय हरये स्वाहा
३३. ॐ मायासहिताय हृषीकेशाय स्वाहा
३४. ॐ प्राकाम्यासहिताय योगीश्वराय स्वाहा
३५. ॐ धीसहिताय पद्मनाभाय स्वाहा
३६. ॐ लघिमासहिताय पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा
३७. ॐ गरिमासहिताय दामोदराय स्वाहा
३८. ॐ शक्ति सहिताय योनीशाय स्वाहा
३९. ॐ सत्यभामासहिताय नरकारये स्वाहा
४०. ॐ निष्कलासहिताय महामार्तण्डाय स्वाहा
४१. ॐ दुर्गायै स्वाहा
४२. ॐ त्र्यम्बकाय स्वाहा
४३. ॐ वरुणाय स्वाहा
४४. ॐ यज्ञपुरुषाय स्वाहा
४५. ॐ अग्निष्वात्तादिभ्यः स्वाहा
४६. ॐ पितृगणयागदेवताभ्यः स्वाहा
४७. ॐ भगवते वासुदेवाय स्वाहा
४८. ॐ सङ्कर्षणाय स्वाहा
४९. ॐ प्रद्युम्नाय स्वाहा
५०. ॐ अनिरुद्धाय स्वाहा
५१. ॐ सत्याय स्वाहा
५२. ॐ पुरुषाय स्वाहा
५३. ॐ अच्युताय स्वाहा
५४. ॐ माधवाय स्वाहा
५५. ॐ गोविन्दाय स्वाहा
५६. ॐ सहस्त्रनाम्ने विष्णवे स्वाहा

५७. ॐ लक्ष्मीसहिताय नारायणाय स्वाहा
५८. ॐ भगवते भवाय देवाय स्वाहा
५९. ॐ शर्वाय देवाय स्वाहा
६०. ॐ रुद्राय देवाय स्वाहा
६१. ॐ पशुपतये देवाय स्वाहा
६२. ॐ उग्राय देवाय स्वाहा
६३. ॐ भीमाय देवाय स्वाहा
६४. ॐ महादेवाय देवाय स्वाहा
६५. ॐ ईशानाय देवाय स्वाहा
६६. ॐ ईश्वराय देवाय स्वाहा
६७. ॐ उमासहिताय शिवाय स्वाहा
६८. ॐ पार्वतीसहिताय परमेश्वराय स्वाहा
६९. ॐ भगवते विनायकाय स्वाहा
७०. ॐ एकदन्ताय स्वाहा
७१. ॐ कृष्णपिङ्गलाय स्वाहा
७२. ॐ गजाननाय स्वाहा
७३. ॐ लम्बोदराय स्वाहा
७४. ॐ भालचन्द्राय स्वाहा
७५. ॐ हेरम्बाय स्वाहा
७६. ॐ आखुरथाय स्वाहा
७७. ॐ विघ्नेशाय स्वाहा
७८. ॐ विघ्नभक्ष्याय स्वाहा
७९. ॐ वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय स्वाहा
८०. ॐ भगवते क्लींकांकुमाराय स्वाहा
८१. ॐ षण्मुखाय स्वाहा
८२. ॐ मयूरवाहनाय स्वाहा
८३. ॐ पार्वती नन्दनाय स्वाहा
८४. ॐ सेनाधिपतये कुमाराय स्वाहा
८५. ॐ भगवते ह्रांह्रींसः सूर्याय स्वाहा

८६. ॐ सप्ताश्वाय स्वाहा
८७. ॐ अनश्वाय स्वाहा
८८. ॐ एकाश्वाय स्वाहा
८९. ॐ नीलाश्वाय स्वाहा
९०. ॐ प्रत्यक्षदेवाय स्वाहा
९१. ॐ परमार्थसाराय स्वाहा
९२. ॐ तेजोरूपाय स्वाहा
९३. ॐ प्रभासहिताय आदित्याय स्वाहा
९४. ॐ भगवत्यै स्वाहा
९५. ॐ अमायै स्वाहा
९६. ॐ कामायै स्वाहा
९७.ॐ चार्वङ्ग्यै स्वाहा
९८. ॐ टङ्कधारिण्यै स्वाहा
९९. ॐ तारायै स्वाहा
१००. ॐ पार्वत्यै स्वाहा
१०१. ॐ यक्षिण्यै स्वाहा
१०२. ॐ श्रीशारिकाभगवत्यै स्वाहा
१०३. ॐ श्रीशारदा भगवत्यै स्वाहा
१०४. ॐ श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै स्वाहा
१०५. ॐ श्रीज्वालाभगवत्यै स्वाहा
१०६. ॐ व्रीडाभगवत्यै स्वाहा
१०७. ॐ वैखरीभगवत्यै स्वाहा
१०८. ॐ वितस्ताभगवत्यै स्वाहा
१०९. ॐ गङ्गाभगवत्यै स्वाहा
११०. ॐ यमुनाभगवत्यै स्वाहा
१११. ॐ कालिकाभगवत्यै स्वाहा
११२. ॐ सिद्धलक्ष्म्यै स्वाहा
११३. ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा
११४. ॐ महात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा

११५. ॐ सहस्त्रनाम्न्यै दैव्यै भवान्यै स्वाहा
११६. ॐ अभयङ्करीदेव्यै स्वाहा
११७. ॐ क्षेमङ्करीभवान्यै स्वाहा
११८. ॐ सर्वशत्रुघातिन्यै स्वाहा
११९. ॐ इह राष्ट्राधिपतये अमुकभैरवाय स्वाहा
१२०. ॐ इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये शचीसहिताय स्वाहा
१२१. ॐ अग्नये शक्तिहस्ताय स्वाहा
१२२. ॐ यमाय-दण्ड-हस्ताय स्वाहा
१२३. ॐ नैर्ऋतये-खड्ग-हस्ताय स्वाहा
१२४. ॐ वरुणाय-पाश-हस्ताय स्वाहा
१२५. ॐ वायवे-ध्वजा-हस्ताय स्वाहा
१२६. ॐ कुबेराय-गदा-हस्ताय स्वाहा
१२७. ॐ ईशानाय-त्रिशूल-हस्ताय स्वाहा
१२८. ॐ ब्रह्मणे-पद्म-हस्ताय स्वाहा
१२९. ॐ विष्णवे-चक्र-हस्ताय स्वाहा
१३०. ॐ अनन्तादिभ्यो-अगस्ताभ्य स्वाहा
१३१. ॐ ब्रह्म-ध्रुवाभ्यः स्वाहा
१३२. ॐ कुल-नाग-देवताभ्यः स्वाहा
१३३. ॐ अग्न्यादित्याभ्यां स्वाहा
१३४. ॐ वरूण-चन्द्रमोभ्यां स्वाहा
१३५. ॐ कुमार-भौमाभ्यां स्वाहा
१३६. ॐ विष्णु-बुधाभ्यां स्वाहा
१३७. ॐ इन्द्रा-बृहस्पतिभ्यां हस्ताय स्वाहा
१३८. ॐ सरस्वती-शुक्राभ्यां स्वाहा
१३९. ॐ प्रजापति-शनैश्चराभ्यां स्वाहा
१४०. ॐ गणपति-राहुभ्यां स्वाहा
१४१. ॐ रुद्रकेतुभ्यां स्वाहा
१४२. ॐ ब्रह्म-धुव्राभ्यां स्वाहा
१४३. ॐ अनन्ता-गस्ताभ्यां स्वाहा

१४४. ॐ ब्रह्मणे-कूर्माय स्वाहा
१४५. ॐ ध्रुवाय स्वाहा
१४६. ॐ अनंताय स्वाहा
१४७. ॐ हरये स्वाहा
१४८. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा
१४९. ॐ कमलायै स्वाहा
१५०. ॐ शिख्यादिभ्यः पंचचत्वारिंशत्वास्तोष्पति याग देवताभ्यः स्वाहा
१५१. ॐ गौर्यादिभ्यो-मातृभ्यः स्वाहा
१५२. ॐ ललितादिभ्यो-मातृभ्यः स्वाहा
१५३. ॐ दुर्गा-क्षेत्र-गणेश्वर-देवताभ्यः स्वाहा
१५४. ॐ राका-देवताभ्यः स्वाहा
१५५. ॐ त्रिका-देवताभ्यः स्वाहा
१५६. ॐ सिनी-वाली-देवताभ्यः स्वाहा
१५७. ॐ यामी-देवताभ्यः स्वाहा
१५८. ॐ रौद्री-देवताभ्यः स्वाहा
१५९. ॐ वारुणी-देवताभ्यः स्वाहा
१६०. ॐ बार्हस्पति-देवताभ्यः स्वाहा
१६१. ॐ भूः-देवताभ्यः स्वाहा
१६२. ॐ भुवो-देवताभ्यः स्वाहा
१६३. ॐ स्व देवताभ्यः स्वाहा
१६४. ॐ भूर्भुवः-स्वः-देवताभ्यः स्वाहा
१६५. ॐ अखण्ड ब्रह्माण्ड यागदेवताभ्यः स्वाहा
१६६. ॐ धूर्भ्यः स्वाहा।
१६७. ॐ उपधूर्भ्यः स्वाहा।
१६८. ॐ महागायत्र्यै स्वाहा।
१६९. ॐ सावित्र्यै स्वाहा।
१७०. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा।
१७१. ॐ हेरकादिभ्यः स्वाहा।
१७२. ॐ वटुकादिभ्यः स्वाहा।

दो आहुति देना

१७३. ॐ क्षेत्रस्य पतिना वयं
हितनेव जयामसि।
गामश्वं पोषयित्वा
स नो मृढाती दृशे स्वाहा।।

१७४. ॐ मुञ्चामि त्वा हविषा
जीवताय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मादा।
ग्राहिर्जग्राह यदि वैतदेन तस्या
इन्द्राग्नी प्रमुमुक्तमेनं स्वाहा।।

अब चरु घृत मिश्रित आहुति को यजमान के प्रधान अंगों के साथ स्पर्श करके निम्नलिखित मन्त्र से यज्ञ में डालिये :–

ॐ ऐन्द्राग्नं वर्म बहुलं यदुग्रं विश्वे देवा नाति विध्यन्ति शूराः। तन्नस्त्रायतां तन्वः सर्वतो महदायुष्मन्तो जरामुप-गच्छेम जीवाः स्वाहा।।

अन्नाज्य तर्पण :– अब पात्र में जल लेकर इस होम का संकल्प करियेः– ॐ महागणपतिः, कुमारः, श्रीः सरस्वती, लक्ष्मीः, विश्वकर्मा, द्वारदेवताः प्रजापतिः, ब्रह्म कलशदेवता, ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताः, चातुर्वेदेश्वराः, सानुचराः, ऋतुपति नारायणः, दुर्गा, त्र्यम्बकः, वरुणः, यज्ञपुरुषः, अग्निष्वात्तादयः, पितृगण-याग देवताः भगवान-वासुदेवः, लक्ष्मी-सहितः नारायणः, भवोदेवः, शर्वो-देवः, उमा-सहितः शिवः, पार्वती सहितः परमेश्वरः, विनायकः, वल्लभा सहितः श्री महागणेशः कलीं कां सेनाधिपतिः कुमारः, ह्रां ह्रीं सः सूर्याः प्रभा सहितः आदित्यः भगवती अमा, कामा, चार्वङ्गी, टंकधारिणीः, तारा, पार्वती, यक्षिणी, श्री शारिका भगवती, सर्वशत्रुघातिनी, इह राष्ट्राधिपतिः, स्थान भैरवः, नवग्रह देवताः, इन्द्रोवज्रहस्तः, अग्नि-शक्तिहस्तः, यमो- दण्डहस्तः, नैर्ऋतिः-खड्गहस्तः, वरुणः पाशहस्तः, वायुः ध्वजहस्तः, कुबेरो- गदाहस्तः, ईशानः त्रिशूल-हस्तः, ब्रह्मा-पद्महस्तः, विष्णुः, चक्रहस्तः, अनन्ता-दयोष्टौ

कुलनागदेवतः, पञ्चात्वारिंशद्वास्तोष्पति यागदेवताः, हेरुका-दयः, वटुकादयः, अन्नाज्याहुतिभिः, अन्येसर्वे-देवताः, प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु॥

नोट : यदि गणेश स्वाहाकार करना हो तो यहाँ से आरंभ करना। फिर उसका तर्पण करना। फिर अन्नाज्य का तर्पण करना।

दर्भकाण्ड दो जलाकर यव, तिल, घी,

दही, मिठास रूप पञ्चामृत हवि में लगाना।

॥ तत्रादौ गायत्रीब्राह्मणम् ॥

(विद्वान्न प्रणवं युञ्ज्याद्धोममन्त्रेषु सर्वदा।
आशीर्वादेऽभिषेके च जपेऽमुं पूर्वमुच्चरेत्॥ १॥
घृतदधितिलाश्चैव यवशर्करमिश्रिताः।
एतत्पञ्चामृतं प्रोक्तं होमे सर्वार्थसिद्धिदम्॥ २॥
ॐप्रजापतेर्भूलोकस्यानुष्टुप्। ककुभापृथ्वी ऋषिः।
विराट्छन्दः ब्रह्मा देवता। प्रणवऋषिः। गायत्री छन्दः।
परमाग्निर्वायुर्देवता। व्याहृतीनां जमदग्निभारद्वाजभृगव ऋषयः।
अग्निवायुसूर्या देवताः सूर्याद्यावाहनार्थे श्रीमहागायत्रीप्रीत्यर्थं
होमे विनियोगः॥)

ॐकारो यस्य मूलं क्रमपदजठरं छन्दविस्तीर्णशाखा
ऋक्पत्रं सामपुष्पं यजुरुचितफलं स्यादथर्वा प्रतिष्ठा।
यज्ञच्छाया सुश्वेतैर्द्विजगणमधुपैर्गीयते यस्य नित्यं
शक्तिः सन्ध्या त्रिकालं दुरितभयहरः पातु नो वेदवृक्षः॥१॥
सच्छायः स्थिरधर्ममूलवलयः पुण्यालवालान्वितो
धीविद्याकरुणाक्षमादिविलसद्विस्तीर्णशाखाश्रितः।
सन्तोषोज्ज्वलपल्लवः शुचियशःपुष्पः सदा सत्फलः
सर्वाशापरिपूरको विजयते श्रीवेदकल्पद्रुमः॥ २॥
मूलाधाराद्भुतवहकलामिश्रितं भूर्भुवः स्व-

ब्रह्मस्थानात्परमगहनात्तत्सवितुर्वरेण्यम्।
भर्गो देवः शशिकलमयी धीमहीत्येकरूपं
धियो यो नः पिब तदमृतं चोदयान्नः परंतत्॥३॥
मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्यु-
क्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयांकुशकरां शूलं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे॥४॥
आयातु वरदा देवी त्र्यक्षरा ब्रह्मवादिनी।
गायत्रि च्छन्दसां मातर्ब्रह्मयोने नमोस्तु ते॥३॥
ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा।
ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा॥
ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ महः स्वाहा।
ॐ जनः स्वाहा। ॐ तपः स्वाहा। ॐ सत्यं स्वाहा॥
ॐ अग्नये स्वाहेत्यग्निः सर्वा देवताः सौख्यं करोत्यसौ वा अग्निः प्रीणाति।
ॐ भूः स्वाहेति भूमिं वै उर्वन्तरिक्षमुर्वादींस्तेन प्रीणाति।
ॐ भुवः स्वाहेति भुवनानां पतय इत्यद्भुतं तेन प्रीणाति।
ॐ स्वः स्वाहेति आप एष इमं लोकं जयतु तेन सोमपः प्रीणाति।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहेति अग्निं सूर्यं ज्योतिष्मन्तं करोति यजमानो वृद्धचते। ॐ भूः स्वाहेति भूमिर्वै द्विपदाश्चैव चतुष्पदस्तेन वृद्धचते।
ॐ भुवः स्वाहेति अन्तरिक्षं वै वायुर्देवतास्तेन वायवः प्रीणाति।
ॐ स्वः स्वाहेति वाचो मे प्राणापानौ सम्राट्चक्षुषस्तेन प्रीणाति।
ॐ महः स्वाहेति महामनसां महांल्लोकाञ्जयति होतारं तेन प्रीणाति।
ॐ जनः स्वाहेति जनानां जनयतिर्जन्तूनामिमं लोकं तेन प्रीणाति।
ॐ तपः स्वाहेति तपो वा असावादित्यो द्वादश मासाः संवत्सरस्तेन प्रीणाति।
ॐ सत्यं स्वाहेति सत्यमिति वरुणश्चन्द्रमसौ नक्षत्राणि समार्णवस्तेन प्रीणाति।

अथोत्तरस्मै सर्वा देवतास्तेन प्रीणाति तेन सौख्यं करोति।
यजमानो वृद्धचते।
सन्तत्यै प्रजावत्या भवति अविच्छिन्नं प्रदीयते य एवं वेद।।
(इति व्याहृति ब्राह्मणं।।)

अथ तत्सवितुरिति गायत्री ब्राह्मणम्।।

प्रजापतेरार्षं अष्ठीवयश्छन्दः विश्वामित्रगायत्री
सविता ऋषिः अग्निर्वायुः सूर्यो देवताः
श्रीमहागायत्री देवी सन्तोषणार्थं होमे विनियोगः।।

प्रातःकाले कुमारी कुमुदकलिकयाजप्यमालाजपन्ती
मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा विशाला।
सन्धायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगा मुण्डमालावहन्ती
सा देवी दिव्यदेहा हरिहरनमिता पातु नो ह्यादिमुद्रा।। १।।
नीलापीतमनोहरांशुकवती वक्त्रत्रयोद्भासिता
हस्तोद्यद्वरशङ्खपङ्कजगदाधारा खगेन्द्रासना।
कारुण्यामृतवर्षणैकचतुरा वृद्धोत्पलालंकृता
भूयान्नः किल वैष्णवी ह्यभिमतावाप्त्यै सदा वन्दिता।। २।।

ॐतत्सवितुर्वरेण्यभर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।। ३।।

मध्याह्ने वृषवाहना त्रिनयना शुक्लाम्बरालेपना
खट्वाङ्गं त्रिशिखं कपालडमरू दोर्भिर्वहन्ती सदा।
शुक्ला शुक्लविभूषणा नरशिरोमालाभिरावेष्टिता
भूयाद्यौवनवत्यसौ त्रिजगतां सर्वार्तिविद्राविणी।।

ॐतत्सवितुरिति तदादित्यः सविता प्रसविता प्रजया पशुषु प्रतितिष्ठति।
वरेण्यमित्यग्निर्वै वरिवः कृणोति।
भर्गेति रश्मयः शतं सहस्त्रमयुतं च प्रतनोति।
देवस्य द्योतन परमं कामस्य।

धीमहीति धीमान्विश्वस्याप्नोति।
धियो योन इति अह्ना रात्रिः सन्ध्यामुपयंति।
प्रचोदयादिति प्रजापतिर्वा प्रजामुपसृजति।
पशुषु प्रतितिष्ठति।
तस्माद्गायत्री चतुर्विंशत्यक्षरा भवति।
सर्वस्याप्त्यै सर्वस्यावरुद्ध्यै न ब्रह्मचारिणं शतं सहस्रमयुतं
च प्रजावान्पशुमान्रयिमानायुष्मन्तं करोति।
तस्माद्गायत्री आयुरिव परमं कामं गायत्र्यमितिप्रतिष्ठति।
य एवं वेद।।
(इति तत्सवितुगायत्रीब्राह्मणं।।)

अथ ओजोऽसीति गायत्री ब्राह्मण।।

ब्रह्मणः प्रजापतेर्गायत्री सविता देवता, गायत्री छन्दः।
श्री महागायत्री देवी प्रीत्यर्थं होमे विनियोगः।।

चतुर्भुजामर्कसहस्रकोटिभां त्रिलोचनां हारकिरीटशोभिताम्।
चतुर्मुखस्याङ्कगतां महोज्ज्वलां वेदेश्वरीं पञ्चमुखीं नमाम्यहम्।।१।।

ॐ ओजोसि सहोसि बलमसि भ्राजोसि देवानान्धाम
नामासि विश्वमसि विश्वायुः सर्वमसि सर्वायुरभिभूः।।

ॐ देवाश्च वा असुराश्च संय्यत्ता आसँस्तान्गायत्र्यन्तरातिष्ठदोजो वै वीर्यमन्नाद्यं परिगृह्यसंवत्सरो वा वैनान्सोऽन्तरातिष्ठच्चतुर्विंशति गायत्र्या अक्षराणि चतुर्विंशति संवत्सरस्यार्धमासास्ते विदुर्यंतरान्वा इयमुपावत्स्यति, त इदं भविष्यन्ति इति तां, व्यह्वयन्तेदाभीत्यसुरा आह्वयन्विश्वकर्मन्निति देवास्मान्यतरांश्च नोपवर्तत। ते देवा एतद्यजुरपश्यन्नोजोऽसि सहोऽसि बलमसि भ्राजोऽसि देवानान्धाम नामासि विश्वमसि विश्वायुः सर्वमसि सर्वायुरभिभूरिति।।

स देवानुपावर्तत।

ततो देवा अभवन्परासुरा अभवन्नाग्नेय्यमष्टाकपालं निर्वपेद्भ्रातृव्यवान्वा स्पर्धमानो वा तमासाध्यैतै ऋजुरभिमृशेदोजो वै वीर्यं संवत्सर ओज एव वीर्यं भ्रातृव्यस्यवृङ्क्ते सनिर्वीर्यः पराभवति सैषा गायत्री नामेष्टिरथो आहुः क्षेत्रस्य संवर्ग इति।।

(इति ओजोसि इति गायत्री ब्राह्मणं)

अथ द्रष्टृब्राह्मणम्।

घोराणामार्षं ब्राह्मणानि प्रजापतेः यजुर्नमस्कारः। घोराणां यजुः दधीच ऋषिः गायत्री छन्दः श्री विष्णु र्देवता श्री महागायत्री प्रीत्यर्थे होमे विनियोगः।

ब्राह्मी हंसरथस्थिता मुखसरोज्योतिश्चतुर्वाङ्मयी
मुद्रापुस्तक कुण्डलाक्षवलयाधारा चतुर्भिर्भुजैः।
रक्ता रक्तविभूषणा प्रहसिता रक्ताम्बरालङ्कृता
कौमारी मम जीवितावधि सदा भूयादघध्वंसिनी।।१।।

अश्वमेधे घोराणामार्षम्।

द्रष्ट्रे नमः उपद्रष्ट्रे नमो अनु ख्यात्रेभयः उपख्यात्रे नमः अनु ख्यात्रेनमः। घोराणामार्षं ब्राह्माणानि प्रजापतेः यजुर्नमस्कारः।

द्रष्ट्रे नम उपद्रष्ट्रे नमोऽनुद्रष्ट्रे नम, इत्यग्निर्वै द्रष्टा ब्रह्मण उपद्रष्टा वायुरनुद्रष्ट्रा तेभ्य एव नमस्करोति, ख्यात्रे नम उपख्यात्रे नमोऽनुख्यात्रे नम श्रृण्वते नम उपश्रृण्वते नमः सते नमोऽसते नमो, जाताय जनिष्यमाणाय नमो, भूताय नमो, मनसे नमो, वाचे नमो, ब्रह्मणे नमः श्रान्ताय नमस्तपसे नमः।। ओं द्रष्ट्रे नम उपद्रष्ट्रे नमोऽनुद्रष्ट्रे नम इत्यग्निर्वै द्रष्टा ब्राह्मण उपद्रष्टा वायुरनुद्रष्ट्रा तेभ्य एव नमस्करोति। ख्यात्रे नम उपख्यात्रे नमोऽनुक्ख्यात्रे नम इति। संवत्सरो वै ख्याताऽदित्या उपख्याता चन्द्रमाऽनुख्याता तेभ्य एव नमस्करोति, शृण्वते नम उपशृण्वते नम इति।।

द्यावापृथिवीभ्यामेव नमस्करोति। सते नमोऽसते नम इति।

सदसद्भ्यामेव नमस्करोति। जाताय नमो जनिष्यमाणाय नम इति। यज्ञायैव दक्षिणायै च नमस्करोति। भूताय नमो भविष्यते नम इति। ऋक्सामभ्यामेव नमस्करोति। चक्षुषे नमः क्षोत्राय नम इति। यथा यजुरेकविंशतिकृत्वो नमस्करोति। पञ्चर्तवो द्वादशमासस्त्रय इमे लोका असावादित्य एकविंश एष स्वर्गो लोकः स्वर्गस्य लोकस्य समष्टयै सर्वा वा एतर्ह्येतस्मिन्देवता आशंसन्ती सामभिर्व्याहरिष्यतीत्यग्निः सर्वा देवता असावादित्योऽग्निर्यदेतैर्नमस्कारैरादित्यमुपतिष्ठते, सर्वाभिरेनैवं देवताभिः समर्धयत्यश्वं वट्कारं ये ते पन्थानः सविता पूर्व्यास इति विततता अन्तरिक्षे तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभिरक्षा चनो अधि च ब्रूहि देव इति स्वर्गस्य लोकस्य समष्टयै नमोऽग्नये पृथिवीक्षित इत्यग्निनायतनेषु निदधातीमानेवैनांल्लोकान्गमयति।।

(इति द्रष्टृब्राह्मणम्)।।

।। अथ सर्वदेवब्राह्मणम्।।

यस्या भूः पाददेशे वसति तदुपरि खं गुदे स्वर्गलोको
नाभौ मध्ये महाख्यो जन उरसि गतः कण्ठगामी तपश्च।
सत्यं मूर्ध्नीश्वराख्या त्रिगुणविरहिता निष्कला सुस्वरूपा
सा देवी विश्वरूपा वितरतु विभवं वेदमूला पराख्या।।

भूमेर्वैश्वकर्मणस्य जगती विश्वकर्मा।

यो विश्वचक्षुरुत इति, विश्वचक्षुर्वै देवानां भवति, विश्वतोमुख इति, विश्वमुखां दर्शयति, विश्वतोहस्त इति, विश्वहस्त उत्तमा भवति, उत विश्वतस्पादिति, विश्वतस्पाद्दधार, संबाहुभ्यामिति सर्वबाहुर्वै नमते नमस्कुर्याः कुर्वन्ते, संय्यजत्रैरिति सर्वस्य जित्यै, द्यावापृथिवी इति, द्यावापृथिव्योर्धारयते, जनयन्देव एकः इति।

जनमिति जनानां जनपतेर्जन्तूनामात्मा वै सर्वान्ध्यायन्ते देव एको भवति स देवः सर्वेभ्यो रक्षांसि भवति य एवं वेद।।

(इति यो विश्वब्राह्मणम्।)

अथाब्रह्मन्ब्राह्मणम्।।

प्रातःकाले कुमारी कुमुदकलिकया जप्यमालां जपन्ती
मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा विशाला।
सन्ध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगा मुण्डमालां वहन्ती
सा देवी दिव्यदेहा हरिहरनमिता पातु नो ह्यादिमुद्रा।।

आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामस्मिन्राष्ट्रे राजन्य इषव्यः शूरो महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानुड्वानाशुस्सप्ति जिष्णू रथेष्ठाः पुरन्धिर्योषा सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योर्न ओषधयः पच्यन्तां, योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चस्वी जायतामित्याह।
ब्राह्मण एव ब्रह्मवर्चसं दधाति।
तस्मात्पुरा ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामऽस्मिन्राष्ट्रे
राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्यते महारथो जायतामिति।
राजन्य एव शौर्यं महिमानं दधाति।
तस्मात्पुरा राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्यते महारथो जज्ञे।
दोग्ध्री धेनुरिति धेन्वामेव पयो दधाति।
तस्मात्पुरा धेनुर्दोग्ध्री जज्ञे, वोढानुड्वानिति।
अनुडुह्येव बलं दधाति। तस्मात्पुरानुड्वान्वोढा जज्ञे।
आशुः सप्तिरिति। अश्व एव बलं दधाति।
तस्मात्पुराऽशुरश्वोऽजायत। पुरन्धिर्योषेति।
योषित्येव ज्योतिरिव रूपं दधाति तस्माद्रूपिणी
ज्योतिः प्रिया भावुका। जिष्णू रथेष्टा इति।
राजन्य एव जैत्रं महिमानं दधाति।
तस्मात्पुरा राजन्यो जिष्णुर्जज्ञे। सभेयो युवेति।
एष वै सभेयो युवा यः प्रथमवयसि तस्मात्प्रथम
वयसि स्त्रीणां प्रियो युवा पुमान्भावुकः।

अस्य यजमानस्य वीरो जायतामित्याह वै
तत्र यजमानस्यैव प्रजायां वीर्यं दधाति।
तस्मात्पुरा राजन्यस्य वीरो जज्ञे।
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षत्विति।
निकामे निकामो वै तत्र पर्जन्यो वर्षति यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते।
फलवतीर्न ओषधयः पच्यन्तामिति।
फलवत्यो वै तत्रौषधयः पच्यन्ते।
यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते। योगक्षेमो नः कल्पतामिति।
योगक्षेमो वै तत्र कल्प्यते। यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते।
तस्माद्यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते।
क्लृप्तप्रजानां योगक्षेमो भवति य एवं वेद॥
अनेन मंत्रहोमेनात्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीमद्- श्रीगुरोः ईश्वरस्वरूप लक्ष्मण-स्वामिन-गौतमस्य सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धे यवतिलतण्डुलहोमैः महागायत्री सवित्री सरस्वती प्रीयतां प्रीता भवतु॥

इत्याब्रह्मन्ब्राह्मणम्॥

इति गायत्रीब्राह्मणं सम्पूर्णम्॥

अध्वर्योऽयं यज्ञो अस्तु देवा ओषधीभ्यः पशुभ्यो मे धनाय।
विश्वस्मै भूताय ध्रुवो अस्तु देवाः स पिन्वस्व घृतवद्देव यज्ञम्॥१॥
धनुनागा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम।
धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम॥२॥

तर्पणम्।

अनेन मन्त्रहोमेन आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं महागणपतिः कुमारः श्री सरस्वती लक्ष्मीः विश्वकर्मा द्वार्देवताः प्रजापतिः ब्रह्मा कलशदेवताः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताः चातुर्वेदेश्वराः सानुचराः ऋतुपतिर्नारायणः अग्निष्वात्तादयः पितृगणयागदेवताः।

भगवान्वासुदेवः सङ्कर्षणः प्रद्युम्नः अनिरुद्धः सत्यः पुरुष अच्युतः माधवः गोविन्दः सहस्त्रनामा विष्णुः लक्ष्मीसहितः श्रीनारायणः। भगवान्भवोदेवः शर्वोः देवः रुद्रोः देवः महादेवः पार्वतीसहितः परमेश्वरः। भगवान्विनायकः एकदन्तः कृष्णपिङ्गलः गजाननः लम्बोदरः बालचन्द्रः हेरम्बः आखुरथः विघ्नेशः विघ्नभक्षः वल्ल-भासहितः श्रीमहागणेशः। भगवान् क्लींकांकुमारः षण्मुखः मयूरवाहनः पार्वतीनन्दनः सेनाधिपतिः कुमारः। भगवान् ह्रांह्रींसः सूर्यः सप्ताश्वः अनश्वः एकाश्वः नीलाश्वः प्रत्यक्षदेवः तेजोरूपः परमार्थसारः प्रभासहितः आदित्यः। भगवती अमा कामा चार्वङ्गी टङ्कधारिणी तारा पार्वती यक्षिणी श्रीशारिकाभगवती श्रीशारदाभगवती श्रीमहाराज्ञीभगवती श्रीज्वालाभगवती व्रीडाभगवती वैखरीभगवती वितस्ताभगवती गङ्गाभगवती यमुनाभगवती सिद्धलक्ष्मीः महालक्ष्मीः महात्रिपुरसुन्दरी सहस्त्रनाम्नी देवी भवानी। अभयङ्करी देवी भवानी क्षेमङ्करी भवानी सर्वशत्रुघातिनी इहराष्ट्राधिपतिः अमुक भैरवः इन्द्रः वज्रहस्तः अग्निः शक्तिहस्तः यमः दण्डहस्तः नैऋतिः खड्गहस्तः वरुणः पाशहस्तः वायुर्ध्वजहस्तः कुबेरः गदाहस्तः ईशानः त्रिशूलहस्तः ब्रह्मा पद्महस्तः विष्णुश्चक्रहस्तः अनन्तादयः अष्टौ कुलनागदेवताः इति श्रीमद्श्रीगुरोः ईश्वरस्वरूप लक्ष्मण-स्वामिन-गौतमस्य सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं श्रीमहागायत्री सावित्री सरस्वती प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।।

।। ॐ अथ कूष्माण्डमन्त्रम्।।

कूष्मा नाम मुनीश्वरास्त्रिभुवने ख्याताः सुरूपाः शुभा,
अण्डानाममृतेश्वरा विचरतां मध्ये स्वहंसात्मकाः।
तेऽपि यत्पठनात्परात्परतरां श्रेष्ठां गतिमास्थिताः,
सोऽयं नो विदधातु सौख्यनिचयं पापारिनाशं सदा।। १।।
यत्पाठात्प्रलयं प्रयान्ति शतशः पापारिसंघः क्षणा-
द्धोमात्तर्पणसञ्चयात्सुमहतामभ्यासनात्सद्वरात्।
सोयं ब्रह्ममुखोद्गतः परतरो मन्त्रादिगर्भो महान्-
कूष्माण्डो विदधातु सौख्यनिचयमग्रेः पुरः संस्थितिम्।। २।।

(कूष्माण्डानि कूष्माणां शकुनीनामण्डस्थानाम्)

यद्देवा देवहेलनं यद्वाचानृतमूदिम।
आदित्यास्तस्मान्मुञ्चतर्तस्यर्तेन मामुत।। १।।
देवा जीवन-काम्या यद्वाचानृतमूदिम।
तस्मान्न इह मुञ्चत विश्वेदेवाः सजोषसः।। २।।
ऋतेन द्यावापृथिवी ऋतेन त्वं सरस्वति।
कृतान्नः पाह्येनसो यत्किञ्चानृतमूदिम।। ३।।
इन्द्राग्नी मित्रावरुणौ सोमो धाता बृहस्पतिः।
ते नो मुञ्चन्त्वेनसो यत्किञ्चानृतमूदिम।। ४।।
सजातशंसादुत जामिशंसाज्ज्यायसः शंसादुत वा कनीयसः।
अनाधृष्टं देवकृतं यदेनस्तस्मात्त्वमस्माज्जातवेदो मुमुग्धि।। ५।।
यदन्तरिक्षं पृथिवीमुतद्यां यत्पितरं मातरं वा जिहिंसिम।
अग्निर्नस्तस्मादेनसो गार्हपत्यः प्रमुञ्चतु चकृम यानि दुष्कृता।। ६।।
येन त्रितो अर्णवान्निर्बभूव येन सूर्यस्तमसो निर्मुमोच।
येनेन्द्रो विश्वा अजहादरातींस्तेनाहं ज्योतिषां ज्योतिरानशान आक्षि।। ७।।
यत्कुसीदमऽप्रतीतं मयीह येन यमस्य मिथुनाचरामि।

एतत्तदग्ने अनृणो भवामि जीवन्नेव प्रति तत्ते दधामि।। ८।।
यददीव्यन्नृणमहं बभूवा दित्सन्वा सञ्जगरञ्जनेभ्यः।
अग्निर्मा तस्मादिन्द्रश्च संविदानौ प्रमुञ्चताम्।। ९।।
यद्धस्ताभ्यां चकर किल्बिषाण्यक्षाणां वध्नुमुपजिघ्रमाणः।
उग्रंपश्या च राष्ट्रभृच्च तान्यप्सरस अनुदत्तामृणानि।। १०।।
उग्रंपश्ये राष्ट्रभृत्किल्बिषाणि यदक्षवृत्तमनुदत्तमेतत्।
नेन्न ऋणाद्दणवाँ इच्छमानो यमस्य लोके अधिरज्जुरायत्।। ११।।
अव ते हेळो वरुण नमोभिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः।
क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि।। १२।।
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।। १३।।
इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय।
त्वामवस्युराचके।। १४।।
तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशँस मा न आयुः प्रमोषीः।। १५।।
त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।। १६।।
स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।
अव यक्ष्व नो वरुणँ रराणो वीहि मृळीकँ सुहवो न एधि।। १७।।
सङ्कसुको विकसुको निर्ऋतो यश्च निःस्वरः।
तेऽस्मद्यक्ष्ममनागसो दूराद्दूरमचीचतन्।। १८।।
निर्यक्ष्ममचीचतन्कृत्यां निर्ऋतिं च।
तेनान्योऽस्मत्समृच्छतां तमस्मै प्रसुवामसि।। १९।।
दुःशंसानुशंसाभ्यां घनेनानुघनेन च।
तेन योऽन्योस्मत्समृच्छतां तमस्मै प्रसुवामसि।। २०।।
संवर्चसा पयसा सन्तनूभिरगन्महि मनसा संशिवेन।

त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायो नोऽनु मार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्।। २१।।
आयुस्ते विश्वतो दधदयमग्निर्वरेण्यः।
पुनस्ते प्राण आयातु परा यक्ष्मँ सुवामि ते।। २२।।
इममग्न आयुषे वर्चसे कृधि तिग्ममोजो वरुण संशिशाधि।
मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरदष्टिर्यथासत्।। २३।।
अग्न आयूँषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम्।। २४।।
अग्निर्ऋषिः पवमानः पांचजन्यः पुरोहितः।
तमीमहे महागयम्।। २५।।
अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्।
दधद्रयिं मयि पोषम्।। २६।।
अग्ने जातान्प्रणुदानः सपत्नान्प्रत्यजाताञ्जातवेदोनुदस्व।
अधि नो ब्रूहि सुमना अहेळञ्शर्म ते स्याम त्रिवरूथ उद्भौ।। २७।।
सहसा जातान्प्रणुदानः सपत्नान्प्रत्यजाताञ्जातवेदो नुदस्व।
अधिनो ब्रूहि सुमनस्यमानो वयं स्याम प्रणुदा नः सपत्नान्।। २८।।
अग्ने ये नोऽभितो वृको जनो वारो जिघांसति।
तं त्वं वृत्रहञ्जहि वस्वस्मभ्यमाकृधि।। २९।।
अग्ने योनोऽभिदासति समानो यश्च नेष्ठ्यः।
तं वयं समिधं कृत्वा तुभ्यमऽग्ने पिदध्मसि।। ३०।।
यो नः शपादऽशपतो यश्च नः शपतः शपात्।
इध्मस्येव प्रख्यायतस्तस्य मुच्छेषि किंचन।। ३१।।
संशितं मे ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम्।
संशितं क्षत्रं मे जिष्णु यस्याहमस्मि पुरोहितः।। ३२।।
उदेषां बाहू अतिरमुद्वर्चो अथो बलम्।
क्षणोमि ब्रह्मणामित्रानुन्नयामि स्वाँ अहम्।। ३३।।
पुनर्मनः पुनरायुर्म आगात्पुनश्चित्तं पुनराधीतं म आगात्,

पुनश्चक्षुः पुनःश्रोत्रं म आगात्।
वैश्वानरो अदब्धस्तनूपा अवबाधतां दुरितानि विश्वा।। ३४।।
(सौत्रामण्या निचाङ्गणस्य)।
यद्देवा देवहेळनं देवासश्चकृमा वयम्।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चन्त्वंहसः।। ३५।।
यदि दिवा यदि नक्तमेनांसि चकृमा वयम्।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चन्त्वंहसः।। ३६।।
यदि जाग्रत यदि स्वप्नमेनांसि चकृमा वयम्।
सूर्योमातस्मात् एनसो विश्वान् मुंचन्त्वहसः।। ३७।।
(प्रायश्चित्तानि सर्वान्तीयानि शिशुशैशवयोः)।।
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षिमिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः।। ३८।।
स्वति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।। ३९।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसाऽगमन्निह।। ४०।।
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। ४१।।
शेषः कोकिलस्य राजपुत्रस्य राज्येप्सोः।।
पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः।
पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा।। ४२।।
पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः।
पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै।। ४३।।
अग्न आयूँषि पवस आसुवोर्जमिषंच नः।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम्।। ४४ ।।
पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।। ४५।।
पवित्रेण पुनीहिमा शुक्रेण देव दीद्यत्।
अग्ने क्रत्वा क्रतूँरनु।। ४६।।
यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा।
ब्रह्म तेन पुनातु मा।। ४७।।
पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः।
यः पूता स पुनातु मा।। ४८।।
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च।
मां पुनीहि विश्वतः।। ४९।।
वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमास्तन्वो वीतपृष्ठाः।
तया मदन्तः सधमादेषु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। ५०।।
पुनर्मा मैत्विन्द्रियं पुनरायुः पुनर्भगः।
पुनर्ब्राह्मणमैतु मा पुनर्द्रविणमैतु माम्।। ५१।।
यन्मेऽद्य रेतः पृथिवीमस्कन्यदोषधीरध्यसरद्यदपः।
तदहं पुरराददे।। ५२।।
यन्मे रेतः प्रसिच्यते यन्म आजायते पुनः।
यद्वा मे प्रतितिष्ठति तेन माममृतं कुरु तेन सुप्रजसं कुरु।। ५३।।
(अपां यो द्रविण इति प्रजापतेः)
रथे अक्षेषु वृषभस्य वाजे वाते पर्जन्ये वरुणस्य शुष्मे।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सेयमगाद्वर्चसा संविदाना।। ५४।।
या हस्तिनि द्वीपिनि या हिरण्ये गोष्वश्वेषु पुरुषेष्वऽन्तः।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सेयमगाद्वर्चसा संविदाना।। ५५।।
सिंहे व्याघ्र उत या पृदाकौ त्विषिरग्नौ ब्राह्मणे सूर्ये या।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सेयमगाद्वर्चसा संविदाना।। ५६।।
या राजन्ये दुन्दुभावायतायामश्वस्य क्रन्दे पुरुषस्य मायौ।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सेयमगाद्वर्चसा संविदाना।। ५७।।

(हिरण्यवर्णा इति कश्यपस्य)॥

हिरण्यवर्णा शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्रः।
या अग्निं गर्भं दधिरे विरूपास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु॥ ५८॥
यासां देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति।
या अग्निं गर्भं दधिरे विरूपास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु॥ ५९॥
यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्।
या अग्निं गर्भं दधिरे विरूपास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु॥ ६०॥
अग्नये नमः, वायवे नमः, सूर्याय नमः,
ब्रह्मणे नमः, प्रजापतये नमः, कूष्मर्षिभ्यः नमः।

(इति व्रतहोमः)। (अग्ने त्वं पारयेति स्विष्टकृतम्॥)

अग्ने त्वं पारयानव्यो अस्मान्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा।
पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शंयोः॥ ६१॥

(वैश्वानरीयेण सूक्तेन प्राङ्मुखः प्राञ्जलिरुपतिष्ठते, जपेत्सूक्तानि पराञ्चि यानि वैश्वानरीयं च॥)

वैश्वानराय प्रति वेदयामो यदी मृळँ सङ्गरो देवतासु।
स एतान्पाशान्प्रमुञ्च प्रवेद स नो मुञ्चतु दुरितादवद्यात्॥ ६२॥
वैश्वानरः पावया नः पवित्रैर्यत्सङ्गरमऽभिधावाम्याशाम्।
अनाजानन्मनसा याचमानो यदत्रैनो अपतत्सुवामि॥ ६३॥
अमू ये सुभगे दिवि विचृतौ नाम तारके।
प्रेहामृतस्य यच्छतमेतद्बद्धकमोचनम्॥ ६४॥
विजिहीष्व लोकान्कृधि बन्धान्मुञ्चसि बद्धकम्।
योनेरिव प्रच्युतो गर्भः सर्वान्पथो अनुष्यात्॥ ६५॥
सुप्रजानन्प्रतिगृह्णाति विद्वान्प्रजाप्रतिः प्रथमजा ऋतस्य।
अस्माभिर्दत्तं जरसः परस्तादच्छिन्नं तन्तुमनु सन्तरेम॥ ६६॥
उत तन्तुमन्वेके सन्तरन्ति येषां दत्तं पित्र्यमायतनवत्।
अबन्ध्वेके ददतः प्रयश्छन्दातुं चेच्छक्नुवान्स स्वर्ग एषाम्॥ ६७॥

आरभेथामऽनु संरभेथां समानं पन्थामवतो घृतेन।
यद्वां पूर्तं परिविष्टं यदग्नौ तस्य गुप्त्या इह जायापती संरभेथाम्॥ ६८॥
यदन्तरिक्षं पृथिवीमुत द्यां यत्पितरं मातरं वा जिहिंसिम।
अग्निर्नस्तस्मादेनसो औपासन उन्नैनेषद्दुरिता यानि चकृम॥ ६९॥
भूमिर्मातादितिर्नो जनित्रं त्रातान्तरिक्षमाभिशस्त्या नः।
द्यौर्नः पिता पित्र्याच्छं भवाति जामिमृत्वा मावपत्सि लोकान्॥ ७०॥
यत्रासुहार्दः सुकृतो मदन्ति विहाय रोगं तन्वं स्वाम्।
अश्रोणा अङ्गैरहुताः स्वर्गेलोके तत्र पश्येम पितरं च पुत्रम्॥ ७१॥
यदन्नमद्म्यनृतेन देवा दास्यन्नदास्यन्नुत वा करिष्यन्।
यद्देवानां चक्षुष्यागो अस्ति यदेव किञ्च
प्रतिजग्राहाहमग्निर्मा तस्मादनृणं करोतु॥ ७२॥
यदन्नमद्मि बहुधा विरूपं वासो हिरण्यमुत गामजामविम्।
यद्देवानां चक्षुष्यागो अस्ति यदेव किञ्च प्रतिजग्राहाहमग्निर्मा तस्मादनृणं करोतु ॥ ७३॥

अनेन मन्त्रपाठेन। होमेन अग्निः प्रीयतामग्निः प्रीतोस्तु, वायुः प्रीयतांवायुः प्रीतोऽस्तु, सूर्यः प्रीयतांसूर्याः प्रीतोऽस्तु, ब्रह्मा प्रीयतांब्रह्माः प्रीतोऽस्तु, प्रजापतिः प्रीयतां प्रजापतिः प्रीतोऽस्तु। कूष्मर्षयः प्रीयन्तां कूष्मर्षयः प्रीताः सन्तु॥ पापान्मुक्तिः पुण्यवृद्धिरस्तु॥

॥ इति कूष्माण्डमन्त्रम्॥

॥ ॐ अथ कूष्माण्डब्राह्मणम्॥

ब्राह्मणः प्रजापतेर्युजुः॥ **वातरशना ह वा ऋषयः श्रमिण ऊर्ध्वमन्थिनो बभूवुस्तानृषयोऽर्थमायँस्ते निलायमाचरंस्तान्प्रददृशुः, कूष्माण्डानि ताँस्तेऽन्वपश्यञ्छ्रद्धया च तपसा च तानृषयोऽपृच्छन् कथानिलायं चरथेति, त ऋषीनब्रवन्नमो वोस्तु भगवन्तोऽस्मिन्धाम्नि केन वः सपर्यामेति तानृषयोऽब्रवम्पवित्रं नो ब्रूत, येनाऽरेपसो भविष्याम**

इति, त एतानि सूक्तान्यऽपश्यन् "यद्देना देवहेळनं" "यददीव्यन्नृणमहं" "आयुस्ते विश्वतो दधत्" इत्यैतैराज्यं जुहुत, तेनारेपसो भविष्यथेति, त एतैराज्यमजुहुवुस्ते वाऽरेपसोऽभवन्कर्मादिष्वेतैर्जुहुयात्पूतो देवलोकान्समश्नुते॥१॥ कृष्मा है वै नाम ऋषयो वातरशनास्ते हँसा हिरण्मया ज्योतिष्पक्षा अजिरा भूत्वाऽचरँस्ते कामयन्ताण्डेषु नः प्रजा ब्रह्म वदेयुरिति, तेषामण्डेष्वेव प्रजा ब्रह्मावादिषुस्त अण्डस्था अवदँस्तस्मात्कूष्माण्डानि कूष्माण्डैर्जुहुयाद्योऽपूत इव मन्येत यदर्वाचीनमेनो भ्रूणहैवमेष भवति योऽयोनौ रेतः सिञ्चति, यदेतैराज्यं जुहोति तैरेवात्मानं पुनीते दीक्षामुपैति दीक्षित एतैः सदधि जुहोति संवत्सर दीक्षितो भवति संवत्सरादेवात्मानं पुनीते, मासं दीक्षितो भवति, यो वै मासः स संवत्सरः, संवत्सरादेवात्मानं पुनीते, द्वादशरात्रीर्दीक्षितो भवति द्वादशमासाः संवत्सरः संवत्सरादेवात्मानं पुनीते, षड्रात्रीर्दीक्षितो भवति षड्वा ऋतवः संवत्सरः संवत्सरा-देवात्मानं पुनीते, तस्य व्रतं "न मांसमश्नीयात्, न स्त्रियमुपेयात्, नोपर्यासीत, जुगुप्सेतानृतात्, पयो ब्राह्मणस्य व्रतं, यवागू राजन्यस्य, आमिक्षा वैश्यस्य, सौम्येप्यध्वरे इत्येतद्व्रतं ब्रूयाद्यदि मन्यतोपद-स्यामीत्योदनं धानाः सक्तून् घृतमित्यनुव्रतयेदात्मनोऽनुपसादायेति॥ इति कूष्माण्डब्राह्मणम्॥

तर्पणं॥ अनेन कूष्माण्डमन्त्र होमेन महागणपतिः। कुमारः, श्रीः, सरस्वती, लक्ष्मीः, विश्वकर्मा, द्वार्देवताः प्रजापतिः ब्रह्मा, कलशदेवताः, ब्रह्मविष्णु- महेश्वरदेवताः, अग्निष्वात्तादयः पितृगणयागदेवताः। भगवान्वा-सुदेवः ८ भवोदेवः ८ विनायकः ८ क्लींकां कुमारः ८ ह्रांह्रीं सः सूर्यः ८ भगवती अमा ८ अभयंकरी देवी० इह राष्ट्राधिपतिरमुकभैरवः। इन्द्रो वज्रहस्तः, अग्निः शक्तिहस्तः, यमो दण्डहस्तः, नैर्ऋतिः खड्गहस्तः, वरुणः पाशहस्तः, वायुर्ध्वजहस्तः, कुबेरो गदाहस्तः, ईशानः त्रिशूलहस्तः, ब्रह्मा पद्महस्तः विष्णुश्चक्रहस्तः अनन्तादयोष्टौ कुलनागदेवताः प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु॥

अन्नहोम-आज्यहोम

अब पके हुए चावल का पात्र (बत बुहगुन इति कश्मीरी भाषा में) का पात्र लावे। उसमें दूध, घी, यज्ञ सामग्री मिलाइये। संकल्प कर 'गुरुपर्वनिमित्ते अन्न होमं आज्य होमं कारिष्ये'। फिर 'अन्न होम-निषुसीद गणपते०' से लेकर 'यत इन्द्र यजामहे' तक की ऋचाओं से करे।

इसके पश्चात् आज्य होम घी और यज्ञ सामग्री से 'निषुसीद गणपते०' से लेकर 'यत इन्द्र यजामहै' तक की ऋचाओं से करे।

नोट – यदि विष्णु पंचायतन (विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य और देवी) का हवन करना हो तो अन्न होम आज्यहोम के पश्चात् ही पहले संकल्प करके गणेश स्वाहाकार करे। और जब नवग्रह पाठ आरम्भ हो तो पहिले सूक्त अर्थात् अग्न्यादित्य सूक्त के बाद ही संकल्प करके सूर्य स्वाहाकार करे। बाद में अन्य सूक्तों का पाठ करे।

अब यदि कूष्माण्ड मन्त्र का भी होम करना हो तो 'अस्य श्री कूष्माण्ड मंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः' से लेकर 'पुण्यवृद्धिरस्तु इति कूष्मा पुरुष मन्त्रः' तक पहिले वह करे तो उसकी समाप्ति पर सूक्त पढ़ना। फिर 'आश्रावितं अत्याश्रावितं' से पूर्णा हुति देना । फिर 'विमुंचामि नयामि' से अग्नि के इर्द गिर्द दर्भकाण्ड छोड़ना और उठाना। फिर नौ छींटें प्रणीत पात्र से देना–'ऋतं त्वा सत्येन परिसमूह्यामि पर्युक्षामि परिषिञ्चामि' पढ़कर। नौ छींटें देने के बाद अग्निकुण्ड के पूर्व की ओर पांच दर्भकाण्ड, दक्षिण की ओर तीन, उत्तर की ओर भी तीन और पश्चिम की पांच दर्भकाण्ड छोडे।

गणेश स्वाहाकार के पश्चात् गायत्री ब्राह्मण का यवतिल होम करे। फिर 'अध्वर्युयोऽयं' से 'नमोऽस्तु सर्पेभ्यो' तक (दे० ऋचकम्) सारी ऋचायें पढ़कर नवग्रह सूक्तों का यवतिल होम आरंभ करे नवग्रह सूक्त– 'अग्नि आदित्य सूक्त' से लेकर 'षड्ऋतु सूक्त' के अन्त तक नवग्रह सूक्तों का सम्पूर्ण पाठ होता है॥ फिर उपहोम पाठ करके 'नवग्रह तर्पण संकल्पित जल से 'प्रीयन्तां प्रीता मे भवन्तु' तक यथाविधि करे।

अब विष्णु पंचक का होम (यव तिल के बिना) सम्पूर्ण यज्ञ सामग्री से करे।

विष्णु पंचक में –

(१) पुरुषसूक्त (२) बृहत्पुरुषसूक्त (३) लक्ष्मी सूक्त (४) आयुष्य सूक्त (५) महालक्ष्मी सूक्त

इन पांच वैदिक सूक्तों के होम का विधान होने से यह होम विष्णुपंचक के नाम से जाना जाता है।

इस होम के पश्चात् रुद्रपंचक का होम किया जाता है। रुद्रपंचक में–

(१) रुद्रमन्त्र (२) चमकानुवाक्यम् (३) सौमारुद्रसूक्त (४) दीक्षामन्त्र सूक्त (५) शताध्याय सूक्त

इन पांच वैदिक सूक्तों का होम किया जाता है। इसीलिए यह होम रुद्रप्रंचक के नाम से विख्यात है। स्मरण रहे कि रुद्रपंचक की आहुतियों में–

(धागे वाला मिसरी–नाबद, कपूर, गुगल, सफेद चन्दन बूरा, केसर, छोटी सब्ज इलायची, काली मिर्च, लौंग का ही प्रयोग करना चाहिये॥

रुद्रपंचक होम के पश्चात् ''देवीपंचक'' का होम किया जाता है।

देवीपंचक में

(१) अस्यवामीय दुर्गा देवीसूक्तं (२) त्रिपुरादेवी सूक्त

(३) श्री शारिका देवी सूक्त (४) श्री महाराज्ञी देवी सूक्त

(५) श्री ज्वाला देवी सूक्त

इन पांच वैदिक सूक्तों से होम करने से इसे देवीपंचक कहा जाता है। स्मरण रहे देवीपंचक के होम की सामग्री में लाल चन्दन बूरा भी डालना चाहिए। देवी पंचक के बाद रक्षोघ्नमन्त्र का होम करे।

फिर 'ऐन्द्राग्निं बहुलं' पढ़े।

फिर आयुष्य सूक्त से (काला तिल और सर्वौषधी से यजमान के अंग-प्रत्यंग की रक्षा के लिए होम करे।

फिर तर्पण करे।

फिर पुरोहित पूजा, दक्षिणा आदि।

फिर पूर्णाहुति :— सभी साधकों गणमान्य व्यक्तियों को बुलाकर यवतिल यज्ञ सामग्री मिश्रित आहुति हाथों में डालिये फिर मन्त्र 'आश्रावितं०' पढ़िये। इसके बाद 'तव च काचन न स्तुति०' भी पढ़ना फिर आहुतिप्रज्व. लित अग्नि में डालना।

आश्रावितं, अत्याश्रावितं, वषट् कृतं, अवषट् कृतं, अननूक्तं, अत्यनूक्तं च, यज्ञेतिरिक्तं कर्मणो यत् च हीनं अग्निष्टानि प्रविदन्नेतु कल्पयन् स्वाहा।

फिर यज्ञ वेदी से यथोक्त स्थानों से पीतल के चम्मच से यज्ञ भस्म को उठाकर यजमान आदि समस्त भक्तजनों को भस्म तिलक करें यह मन्त्र पढ़कर —

'त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं
यद् देवानां त्र्यायुषं तन्मे अस्तु त्र्यायुषम्॥'

फिर नौ छींटे प्रणीत पात्र से 'परिसमूह्यामि, पर्युक्षामि, परिषिञ्चामि' कहकर। फिर विमुञ्चामि, नयामि॥ फिर वैश्वदेव—'आदौ अग्नये स्वाहा०।'

फिर अन्नकण अर्थात् रोटी के टुकड़ों से 'तक्षभ्यो तक्षाय नमः' से अन्त तक अलग-अलग आस्तृत दर्भकाण्ड पर रोटी के टुकड़े रखें।

फिर अग्नि का अच्छिद्र करे। गायत्र्यै नमः (३) तत् सद्ब्रह्म० अग्निकुण्ड पूजनं गणपति अक्षोट पूजनं ज्वालालिंग पूजनं, अच्छिद्रं सम्पूर्णं अस्तु। फिर श्राद्ध से पहले 'अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा' कहकर अग्नि के ईशान कोण (North-east) में अन्न की आहुति डालकर। दोनों हाथों को धोले। फिर प्राणायाम करे। अग्नि से प्रार्थना करे (धर्मं देहि, धनं देहि०)।

।। अथ सूक्तानि ग्रहाणाम्।।

अग्नादित्याभ्यां नमः।।

तत्रादौ अग्न्यादित्यसूक्तम्।।

ॐ अग्निस्तुविश्रवस्तमं तुविब्रह्मणमुत्तमम्। अतूर्तं श्रावयत्पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे।। १।। आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

एकोऽनेकः सुसूक्ष्मः सकलजनहृदामन्तरस्थः परोक्षः
स्थूलोऽसौ पञ्चवक्त्रैः वरशुकवहनः शक्तिहस्तस्त्रिनेत्रः।
सप्तार्चिः सप्तजिह्वस्त्रिभुवनजननस्थानसंहारकारी
दीप्तः प्रत्यक्षदेवः स भवतु हुतभुक्सर्वकामप्रदो नः।।

वन्दे सूर्यं ग्रहेशं प्रतिदिनमुदितं व्योमगं दीप्तियुक्तं
दीप्तांशुं दीप्तवर्णं सकलजननुतं पद्मकान्तं वरेण्यम्।
रक्ताम्भोजौ दधानं शिवचरितधरं साक्षिणं कर्मभूमौ
मित्रं भानुं हरिरथगतं ज्योतिषां ज्योतिरूपम्।।

अग्निर्नवमधुश्छन्दा वैश्वामित्रो, वायो वायव्यैन्द्रवायव, मैत्रावरुणस्तृचा, अश्विना द्वादशा, अश्विनैन्द्रवैश्वदेवसारस्वताः सप्तैताः प्रउगदेवताः सर्वप्रकृतिनो दश॥

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्, होतारं रत्नधातमम्।। १।। अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत, स देवाँ एह वक्षति।। २।। अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे, यशसं वीरवत्तमम्।। ३।। अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि, स इद्देवेषु गच्छति।। ४।। अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः, देवो देवेभिरागमत्।। ५।। यदङ्ग दाशुषे त्वामग्ने भद्रं करिष्यसि, तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः।। ६।। उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम्, नमो भरन्त एमसि।। ७।। राजन्तमऽध्वराणां

गोपामृतस्य दीदिविम्, वर्धमानं स्वे दमे।। ८।। स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव, सचस्वा नः स्वस्तये।। ९।।
वायवा याहि दर्शते मे सोमो अरं कृताः, तेषां पाहि श्रुधी हवम्।। १०।।
वाय उक्थेभिर्जरन्ते त्वामच्छा जरितारः, सुतसोमा अहर्विदः।। ११।।
वायो तव प्रपृञ्चती धेना, जिगाति दाशुषे, ऊरूची सोमपीतये।। १२।।
इन्द्रवायू इमे सुता उपप्रयोभिरागतम्, इन्द्रवो वामुशन्ति हि।। १३।।
वायविन्द्रश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू, तावा यातमुप द्रवत्।। १४।।
वायविन्द्रश्च सुन्वत आयातमुप निष्कृतम्, मक्षिर्वत्था धिया नरा।।१५।।
मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्, धियं घृताचीं साधन्ता।। १६।।
ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा। ऋतुं बृहन्तमाशाथे।। १७।।
कवीनो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया, दक्षन्दधाते अपसम्।। १८।।
अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्पाणी शुभस्पती, पुरुभुजा चनस्यतम्।। १९।।
अश्विना पुरुदंससा नराशवीरया धिया, धिष्णयावनतङ्गिरः।। २०।।
दस्रा युवाकवा सुता नासत्या वृक्तबर्हिषा, आयातं रुद्रवर्तिनी।। २१।।
इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः, अण्वीमिस्तना पूतासः।।२२।।
इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः, उप ब्रह्माणि वाग्घतः।।२३।।
इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः, सुते दधिष्व नश्चनः।। २४।।
ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आगत, दाश्वांसो दाशुषः सुतम्।। २५।।
विश्वेदेवासो अमुरः सुतमागन्त तूर्णयः। उस्त्रा इवासुसराणि।। २६।।
विश्वे देवासो अस्त्रिध एहि मायासो अद्रुहः, मेधं जुषन्त वह्नयः।। २७।।
पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती, यज्ञं वष्टुधियां वसुः।। २८।।
चोदयत्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनां, यज्ञन्दधे सरस्वती।। २९।।
महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना, धियो विश्वा विराजति।।३०।।
इष्टां शक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुश्चै
र्दीर्घैर्दोर्भिर्धारयन्तं जपाभम्।
हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं

ध्यायेद्वह्निं वद्धमौलिं जटाभिः।।
नवकुङ्कुसन्निभं त्रिनेत्रं
रुचिराकल्पशतं भजामि वह्निम्।
स्त्रुवशक्तिवराभयानि दोर्भि
र्ददतं रक्तसरोरुहे निषण्णम्।।

''ईळे अग्निमित्याङ्गिरसाधाया आग्नेयं गायत्रम्।''

ईळे अग्निं विपश्चितं गिरा यज्ञस्य साधनम्, श्रुष्टीवानं धितावानम्। अग्ने शकेम ते वयं यमं देवस्य वाजिनः, अतिद्वेषांसि तरेम। पृथुपाजा अमर्त्यो घृतनिर्णिक्स्वाहुतः, अग्निर्यज्ञस्य हव्यवाट्। तं सबाधो यतस्त्रुच इत्था धिया यज्ञवन्तः, आ चकुरग्निमूतये। नवं नूस्तोममग्नये दिवः श्येनाय जीजनत्, वस्वः कुविद्वनाति नः। स्पार्हा यस्य श्रियो दृशे रयिर्वीरवतो यथा अग्ने यज्ञस्य चेततः। उप त्वा रण्वसन्दृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत, अग्ने ससृज्महे गिरः। उप छायामिव घृणेरगन्म शर्मते वयम्, अग्ने हिरण्यसन्दृशः। अग्ने मृळ महाँ असि य ईमा देवयुञ्जनम्, इयेथ बर्हिरासदम्। स मानुषीषु दूळभो विक्षु प्रावीरमर्त्यः, दूतो विश्वेषां भुवत्। और्वभृगवच्छुचिमप्नवानवदा हुवे, अग्निं समुद्रवाससम्। आसवं सवितुर्यथा भगस्येव भुजिं हुवे, अग्निं समुद्रवाससम्। हुवे वातस्वन कवि पर्जन्यक्रन्द्यं सहः, अग्निं समुद्रवाससम्। उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः, वायोरनीके अस्थिरन्। यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस्तस्थावसन्दिनम्, आपश्चिन्निदधा पदम्। अग्निर्मूर्धा। उदग्ने शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते, तव ज्योतींष्यर्चयः। ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वर्पतिः, स्तोता स्यां तव शर्मणि। त्वामग्ने मनीषिणस्त्वां हिन्वन्ति चित्तिभिः, त्वां वर्धन्तु नो गिरः। अदब्धस्य सुधावतो दूतस्य रेभतः सदा, अग्ने सख्यं वृणी महे। अग्निः शुचिव्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिश्छविः, शुचीरोचत आहुतः।। (इति यजुरग्निसू०॥ अथ ऋग्वेदे सूर्यसू०)

प्रत्यक्षदेवं विशदं सहस्त्रमरीचिभिः शोभितभूमिदेशम्।
सप्ताश्वगं सप्तध्वजावहस्तं देवं भजेऽहं मिहिरं हृदब्जे॥
(उदुत्यं सप्तोना सौर्यं नवाद्या गायत्र्योऽन्त्यस्तृचो रोगघ्नोऽन्त्योऽर्धचो द्विषद्वेष उपनिषत्)।
उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः, दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ १॥
अपत्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः, सूराय विश्वचक्षुसे ॥ २॥
अदृश्रन्नस्य केतवो विरश्मयो जनां अनु, भ्राजन्तो अग्नयो यथा॥ ३॥
तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य, विश्वमाभासि रोचनम्॥ ४॥
प्रत्यङ् देवानां विशः प्रत्यङुदेषि मानुषान्, प्रत्यङ्विश्वं स्वान्दृशे॥५॥
येना पावक चक्षसाभूरण्यन्तं जनाँ अनु। त्वं वरुण पश्यसि॥ ६॥
विद्यामेषि रजस्पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः, पश्यञ्जन्मानि सूर्य॥ ७॥
सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य, शोचिष्केशं विचक्षण॥ ८॥
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः, ताभिर्याति सुयुक्तिभिः॥ ९॥
उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥ १०॥ उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय॥ ११॥ शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि। अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं निदध्मसि॥ १२॥ उदगादय-मादित्यो विश्वेन सहसा सह। द्विषन्तं मह्यं रन्धयन्मो अहं द्विषते रधम्॥ १३॥ समैक्षिषोर्ध्वमहसा आदित्येन महीयसा। अहं व्यशस्विनां यशो विश्वा रूपाण्यादधे॥ १४॥ उद्यन्नद्यविनोभज पिता पुत्रेभ्यो यथा दीर्घायुत्वस्य हेषिषे तस्या नो धेहि सूर्य॥ १५॥ उद्यन्तं त्वा मित्रमह आरोहन्तं विचक्षण। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम्॥ १६॥
(इत्युग्वेदे सूर्यसू०)। अथ यजुषि। अच्छिन्नाहुतिदेया॥
उदुत्यमिति, षडर्चमादित्यस्यायं नोग्नेर्ब्रह्मणः॥
उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी

अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।। द्यां गच्छ स्वर्गच्छ रूपो वो रूपेणाभ्यागां वयसा वयस्तुथो वो विश्ववेदा विभजतु वर्षिष्ठेऽधिनाके एतत्ते अग्ने राध एति सोमच्युतं तन्मित्रस्य पथा नयर्तस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा ब्राह्मणमद्यध्यासं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेयँ सुधातुदक्षिणम्।। अयं नो अग्निर्वरिवस्कृणोत्वयं मृधः पुर एतु प्रभिन्दन्, अयं शत्रूञ्जयतु जर्हृषाणोऽयं वाजञ्जयतु वाजसातौ।। वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान वाजमर्वत्सुपयो अघ्न्यासु। हृत्सु क्रतुं वरुणो विक्ष्वग्निं दिवि सूर्यमदधात्सोममद्रौ। वि स्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैरस्मद्राता मधुमती देवत्रा गच्छ प्रदातारमाविशानवहायास्मान्देवि दक्षिणे देवयानेन पथायती सुकृताल्लोके सीदतन्नौ संस्कृतम्।। कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेयेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते, उपयामगृहीतोस्यादित्येभ्यस्त्वा।। १।। कदाचन प्रयुच्छस्युभे निपासि जन्मनी, तुरीयादित्यसवनं त इन्द्रियमातस्थावमृतं दिवि उपयामगृहीतोऽस्यादित्येभ्यस्त्वा।।२।। यज्ञो देवानां प्रत्येति सुप्रमा-दित्यासो भवता मृळयन्तः। आ वोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्त्यादँहोश्चिद्या वरिवोवित्त- रासत्, उपयामगृहीतोऽस्यादित्यभ्यस्त्वा।। ३।। विवस्वान्ना-दित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन्मन्दस्व या दिव्या वृष्टिस्तया त्वा श्रीणामि। अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वँ शिवेभिरद्य परिपाहि नो गयम्। हिरण्य-जिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नो अघशँस ईशत, उपयाम-गृहीतोऽसि देवाय त्वा सवित्रे उपयामगृहीतोसि सुशर्मासि सुप्रतिष्ठानो बृहदुक्षे नम एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः।। ॐनम आदित्याय, शिवचर्याधराय, सहस्त्रकिरणाय, कमलबान्धवाय, ग्रहाधिपतये, यजमानवरप्रदाय स्वाहा।। तर्पणम्।। उदयंस्तु महाभानु-स्तेजसा चाभयंकरः। सहस्त्ररश्मिदीप्तश्च ह्यादित्यः प्रीयतां मम।। अनेन मंत्रहोमेन आत्मनोवाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थमग्न्यादित्यौ ग्रहाधिपती सानुचरौ प्रीयेतां प्रीतौ मे भवेताम्।। इत्यग्न्यादित्यसूक्तं।।

।। अथ वरुणचन्द्रमःसूक्तम् ।।

एवा वन्दस्व वरुण वृहन्तं नमस्या धीरममृतस्य गोपाम्। स नः शर्म त्रिवरूथं वि यं सत्पातं नो द्यावापृथिवी उपस्थे।। या ते धामानि दिवि या पृथिव्यां या पर्वतेष्वोधीष्वप्सु। तेभिर्नो विश्वैः सुमना अहेळन्नाजन्सोम प्रति हव्या गृभाय।।

श्यामं सौम्यरुचिं महामुनिनुतं यादोगणैः संस्तुतं,
पाशं दण्डवरं दधानममलं दोर्भ्यां गजस्थं विभुम्।
आशापाशशतघ्नमञ्चितदृशं मानोन्नतं यादसां
राजानं प्रमदान्वितमभयदं देवं भजेऽहं सदा।।
शङ्खप्रभमेणप्रियं शशाङ्कमीशानमौलिस्थितमीड्यरूपम्।
तमीपतिमम्बुजयुग्महस्तं ध्याये हृदब्जे शशिनं ग्रहेशम्।।

स्वादो पञ्चोनाः प्रगाथः सौम्यं त्रैष्टुभं पञ्चमी जगती।। ।। स्वादोरभक्षि वयसः सुमेधाः स्वाध्यो वरिवोवित्तरस्य। विश्वेयं देवा उत मर्त्यासो मधुब्रुवन्तो अभि सञ्चरन्ति।। १।। अन्तश्च प्रागा अदितिर्भवास्यवयाता हरसो दैव्यस्य। इन्दविन्द्रस्य सख्यं जुषाणा श्रौष्टीव धुरमनु राय ऋध्याः।।२।। अपामसोमममृता अभूमागन्म ज्योतिरविदाम देवान्। किं नूनम- स्मान्कृणवदरातिः किमु धूर्तिरमृतमर्त्यस्य।।३।। शन्नोभवहृद आपीत इन्दो पितेव सोम सूनवे सुशेवः। सख्येव सख्य उरुशँस धीरः प्राण आयुर्जीवसे सोम तारीः ।। ४।। इमे मा पीता यशसा उरुष्यवो रथं न गावः सुमनाह पर्वसु। ते मा रक्षन्तु विस्त्रासश्चरित्रादुत मा स्त्रामाद्यवयन्त्विन्दवः।। ५।। अग्निर्नमा मथितं सन्दिदीपः प्रचक्षय कृण्वहि वस्यसोनः। अथा हिते मद आ सोम मन्ये रेवाँ इव प्रचरा पुष्टिमच्छा।। ६।। इषिरेण ते मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः। सोम राजन्प्राण आयूँषि तारीरहानीव सूर्यो वासराणि।। ७।। सोम राजन्मृळया नः स्वस्ति तव स्मसि व्रत्यास्तस्य विद्धि। अलर्ति दक्ष उत मन्युरिन्दो मा नो अर्यो अनुकामं परा दाः।। ८।। त्वं हि

नस्तन्वः सोम गोपा गात्रेगात्रे नृषु सत्था नृचक्षाः। यत्ते वयं प्रमिनाम व्रतानि स नो मृळ सुषखा देववस्यः॥ ९॥ ऋदूदरेण सख्या सचेय यो मा न रिष्येद्धर्यश्वपीतः। अयं यः सोमो न्यधाह्यस्मे तस्मा इन्द्रं प्रतिरमेम्यायुः॥ १०॥ अपत्या अस्थुरनिरा अमीवा निरत्रसन्तमिषीचीरभैषुः। आ सोमो अस्माँ अरुहद्विहाया अगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः॥ ११॥ यो न इन्दुः पितरो हृत्सु पीतोऽमर्त्यो मर्त्याँ आविवेश। तस्मै सोमाय हविषा विधेम मृळीके अस्य सुमतौ स्याम॥ १२॥ त्वं सोम पितृभिः संविदानोऽनु द्यावापृथिवी आततन्थ। तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ १३॥ त्रातारो देवा अधि वोचता नो मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः। वयं सोमस्य विश्वाह प्रियासः सुवीरसो विदथमा विदेम॥ १४॥ त्वं नः सोम विश्वतो वयोधास्त्वं स्वर्विदा विशा नृचक्षाः। त्वं न इन्द ऊतिभिः सजोषाः पाहि पश्चातादुतवा पुरस्तात्॥ १५॥ इत्यृचि॥ अथ यजुषि॥ (प्रवेदसे इति वेदसो वन्दारोर्वैष्णवस्य शेषस्तिस्रः पाप्मापहस्य) प्रवेदसे कवये वेद्याय वचो वन्दारु वृषभाय वृष्णे। यतोभयमभयं तन्नो अस्त्वव देवानां यजेहेड्यानि॥ समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन्हव्या जुहोतन॥ उदग्ने तव तद्घृतादर्चीरोचत आहुतम्, निंसानं जुह्वो मुखे॥ उप त्वा जुह्वो मम घृताचीर्यन्तु हर्यत, अग्नेहव्या जुषस्व नः॥ प्रजा अग्ने संवासयाशाश्च पशुभिः सह। राष्ट्राण्यस्मा आधेहि यान्यासन्सवितुः सवे॥ संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः। संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः सँसृष्टः प्राणो अस्तु वः। संय्यः वः प्रियास्तन्वः सं प्रिया हृदयाणि वः। आत्मा वो अस्तु सं प्रियः सं प्रियास्तन्वो मम॥ यो अश्वत्थः शमीगर्भ आरुरोह त्वय्यपि। तत्ते गृह्णामि यज्ञियैः केतुभिः सह॥ मयि गृह्णाम्यहमग्ने अग्निं रायस्पोषेण सह वर्चसेह देवाः। मयि प्रजां मयि पुष्टिं दधामि मदेमशतहिमाः सुवीराः॥ योनो अग्निः पितरो हृत्स्वन्तरा मर्त्यो मर्त्यां आविवेश। तमात्मनि परि गृह्णीमहे वयं मैषो अस्मानवहाय

परागान्मा वयमेतमवहाय परागम।। मही विश्पत्नी सदनी ऋतस्यार्वाची एतं धरुणी रयीणाम्। अन्तर्वती जन्यं जातवेदसमध्वराणां जनयन्तं पुरो गाम्।। उत्समुद्राँ मधुमाँ ऊर्मिरागात्साम्राज्याय प्रतरन्दधानः। अमी च ये मघवानो वयं चेषमूर्जं मधुमत्सम्भरेम।। इयत्यग्र आसीरदो देवि प्रथमाना पृथग्यत्। देवैर्नुत्ता व्यसर्पो महित्वा अद्दंहथाः शर्कराभि-स्त्रिविष्टपि।। अजयो लोकान्प्रदिशश्चतस्त्रः। उदेह्यग्रे अधि मातुः पृथिव्या विश आविश महतः सधस्थात्। आशुन्त्वाजौ दधिरे देवयन्त हव्यवाहं भुवनस्य गोपाम् यदीदं दिवो यदि वा पृथिव्याः सम्बभूव सुकृत रराणयोः। तयोः पृष्टे सीदतु जातवेदाः प्रजामस्मभ्यं जनयन्नयिं च।। चन्द्रमग्निं चन्द्ररथँ हरिवृतं वैश्वानरमप्सुषदँ स्वर्विदम्। विगाहं तूर्णिं तविषीभिरावृतं तूर्णिं देवा स इह स्वश्रियन्दधुः।। यत्पृथिव्या अनामृतँ सम्बभूवत्वे सचा। तदग्निरग्नये ददत्तस्मिन्नाधीयतामयम्।। यदन्तरिक्षस्य यद्दिवो अनामृतँ सम्बभूवत्वेसचा। तदग्निरग्नये ददत्तस्मिन्ना-धीयतामयम्।। ॐ नमः सोमाय, उमाचर्याधराय, षोडशकलाधिपतये, नक्षत्राधिपतये, कुमुदबान्धवाय, परमामृतधारिणे, यजमानवरप्रदाय स्वाहा। (तर्पणं) द्विजराजो महापुण्यस्तारापतिर्विशेषतः। ओषधीनां च यो राजा स सोमः प्रीयतां मम।। अनेन मंत्र होमेन० वरुणचन्द्रमसौ सानुचरौ प्रीयेतां प्रीतौ मे भवेताम्।। इति वरुणचन्द्रमःसूक्तम्।।

अथ कुमारभौमसूक्तम्।

तँ युवन्देवावश्विना कुमारं साहदेव्यम्। दीर्घायुषं कृणोतन।। अग्नि-र्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाँ रेताँसि जिन्वति।।

षड्वक्त्रं दीर्घबाहुं सुरवरनमितं पार्वतीनन्दनं तं।
दोर्भ्यां शक्ति वहन्तं ध्वजमपि च सदा दिव्यरूपं कुमारम्।
नृत्यन्मत्तमयूरवाहनगतं दैत्यान्तकं सिद्धिदं नानारत्नविभूषितं
हरसुतं होमे भजेऽहं सदा।।

प्रतप्तगाङ्गेयनिभं ग्रहेशं सिंहासनस्थं कमलासिहस्तम्।
सुरासुरैः पूजितपादपद्मं भौमं दयालुं हृदये स्मरामि॥

अग्निर्होता दशगायत्रं ऋषिर्बोधद्यदाभ्यां सोमकं साहदेव्यमभ्यवदत्पराभ्याम-स्याश्विनावाऽयुरयाचत॥ अग्निर्होता नो अध्वरे वाजी सन्परि णीयते, देवो देवेषु यज्ञियः॥ १॥ परि त्रिविष्ट्यध्वरं यात्यग्नी रथीरिव, आ देवेषु प्रयो दधत्॥ २॥ परि वाजः पतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्, दधद्रत्नानि दाशुषे॥ ३॥ अयं यः सृञ्जये पुरो दैववाते समिध्यते, द्युमाँ अमित्रदंभनः॥ ४॥ अस्य गा वीर ईवतोऽग्नेरीशीत मर्त्यः, तिग्मजम्भस्य मीळुषः॥ ५॥ तमर्वन्तं न सानसिमरुषं न दिवः शिशुम्, मर्मृज्यन्ते दिवे दिवे॥ ६॥ बोधद्यन्मा हरिभ्यां कुमारः साहदेव्यः, अच्छा न हूत उदरम्॥ ७॥ उत त्या यजता हरी कुमारात्साहदेव्यात्, प्रयता सद्य आदधे॥ ८॥ एष वां देवावश्विना कुमारः साहदेव्यः, दीर्घायुरस्तु सोमकः॥ ९॥ तं युवं देवावश्विना कुमारं साहदेव्यम्, दीर्घायुषं कृणोतन॥ १०॥ इति ऋग्वेदे॥ अथ यजुषि (जुष्टो दमूना इत्यनूच्यमानो ब्रह्मणः) जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुप याहि विद्वान्। विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयतामा भरा भोजनानि॥ अग्ने शर्ध महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु। सं जास्पत्यं सुयममा कृण्वषु शत्रूयतामभि तिष्ठा महाँसि॥ सँसमिद्युवसे वृषन्नग्ने वीश्वान्यर्य आ। इळस्पदे समिध्यसे सनो वसून्या भर॥ सखायः सं वः सम्यञ्चमिषँ स्तोमं चाग्नये। वर्षिष्ठाय क्षितीनामूर्जो नप्ते सरस्वते॥ अग्निस्तुविश्रवस्तमं तुवि ब्रह्माणमुत्तमम्। अतूर्तं श्रावयत्पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे। अग्निर्ददाति सत्पतिं सासाह योयुधा नृभिः। अग्निरत्यँ रघुष्यदं जेतारमपराजितम्॥ प्रद्धो अग्न इमो अग्ने॥ उत नो ब्रह्मन्नविष उक्थेषु देवहूतमः। शं नः शोचा मरुद्वृधोऽग्ने सहस्त्रं सातमः॥ नू नो रास्व सहस्त्रवत्तोकवत्पुष्टिमद्वसु। द्युमदग्ने सुवीर्यम्॥ वर्षिष्ठमनुपक्षितं त्वां चित्रः श्रवस्तमम्। त्वामग्ने हविष्मन्तो

विपाजसा।। भवानो अग्ने वितोत गोपा भवावयस्कृदुत नो वयोधाः। रास्वा च नः सुमहो हव्यदातिं त्रास्वोचनस्तन्वो अप्रयच्छन्।। हव्यवाहमभिमातिषाहँ रक्षोहनं पृतनासु जिष्णुम्। ज्योतिष्मन्तं दीद्यतं पुरन्धिमग्निं स्विष्टकृतमाहुवेम।। स्विष्टमऽग्ने अभितद्-गृणीहि विश्वाश्च देव पृतना अभिष्याः। सुगं नु पन्थां प्रदिशन्विभाहि ज्यातिष्मद्धेह्यजरं न आयुः।। सोमस्य मा तवसंवक्ष्यग्ने वह्निं चकर्थ विदथे यजद्धचै देवाँ अच्छा दीद्यद्युञ्जे अग्निं शमाये अग्ने तन्वँ जुषस्व।। श्रीणामुदारः। यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा यविष्ठाचित्तिभिश्चकृमा कश्चिदागः। कृधीष्वस्माँ अदितेरनागन्व्येनाँसि शिश्रथो विष्वगग्ने।। महश्चिदग्न एनसो अभीक ऊर्वाद्देवानामुत मर्त्यानाम्। मा ते सखायः सदमिद्रिषाम यच्छा तोकाय तनयाय शं योः।। यं त्वा देवापिः शुशुचानो अग्न आर्ष्टिषेणो मनुष्यः समीधे। विश्वेभिर्देवैरनुमद्यमानः प्र पर्जन्यमीरया वृष्टिमन्तम्।। अग्ने बाधस्व वि मृधो वि दुर्गहा-पामीवामप रक्षांसि सेध। अस्मात्समुद्राद्वृहतो दिवो नोऽपां भूमानमुप नः सृजेह।। यथा हत्यद्वसवो गोर्यं चित्पदि षिताम- मुञ्चता यजत्राः। एवो ष्वस्मन्मुञ्चता व्यँहः प्रतार्यग्ने प्रतरं न आयुः।। त्रीण्यायूँषि तव जातवेदस्तिस्त्र आजानीरुषसस्ते अग्ने। ताभिर्देवानामवो यक्षि विद्वानथा भव यजमानाथ शं योः।। पिप्रीहि देवाँ उशतो यविष्ठ विद्वाँ ऋतूँ ऋतुपते यजेह। ये दैव्या ऋत्विजस्तेभिरग्ने त्वं होतृणामस्या यजिष्ठः।। आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नुवामतदनु प्रवोढुम्। अग्निर्विद्वान्स यजात्सेदु होता सो अध्वरान्त्स ऋतून्कल्पयाति।। वि ज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृण्वते महित्वा। प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे।। स्वाध्वी मकर्देवहूतिर्नो अद्य यज्ञस्य जिह्वामविदाम गुह्याम्। स आयुरागात्सुरभिर्वसानो महीमकर्द्युम्नहूतिर्नो अद्य।। अग्निर्होता न्यसीदद्यजीयानुपस्थे मातुः सुरभा उ लोके। युवा कविः पुरुनिष्ठा ऋतावा धर्ता कृष्टीनामुत मध्य

इद्धः।। अग्निर्दूतं पुरो दधे हव्यहावमुपब्रुवे। देवाँ आसादयादिह।। अग्निर्होता पुरोहितोऽध्वरस्य विचर्षणिः। स वेद यज्ञमानुषक्।। ॐनमोऽङ्गारकाय, कुमारव्रतधारिणे, महोग्रतेजसे तीक्ष्णकिरणाय, धरासुताय, शत्रुक्षयङ्कराय, रुद्रतनूजाय, यजमानवरप्रदाय स्वाहा।। (तर्पणं) येनार्जिता जगत्कीर्तिर्भूमिपुत्रेण शाश्वती। शत्रवश्च हता येन भौमेन महितात्मना। स प्रीयतां तु भौमोऽद्य तुष्टो भूयात्सदा मम।। अनेन मंत्रहोमेन आत्मनो वाङ्मन कायोपार्जितपाप- निवारणार्थं कुमारभौमौ सानुचरौ प्रीयेतां प्रीतो मे भवेताम्

॥ इति कुमारभौमसूक्तम्॥

।। अथ विष्णुबुधसूक्तम्।।

वषट्ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्। वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। बोधा स्वमे मघवन्वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम्। इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व।।

विष्णुं सर्वजनाश्रयं सुमुकुटं हारादिभूषान्वितं
शान्तं श्यामवराननं सुरुचिरं दोर्भिश्चतुर्भिर्युतम्।
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं कौमोदकीं बिभ्रतं
देवं तं गरुडाश्रयं सुनयनं दिव्याङ्गभूषं भजे।।

सोमात्मजं हंसगतं द्विबाहुं शङ्खेन्दुरूपमसिपाशहस्तम्।
दयानिधिं भूषणभूषिताङ्गं बुधं स्मरे मानसपङ्कजेऽहम्।।

विष्णोः षड्वैष्णवं हि प्रवोजागतं त्वैन्द्रश्चाद्यस्तृचो भव पञ्चाबोधि षडाश्विनं त्वन्ते त्रिष्टुभौ।।

विष्णोर्नु कं वीर्याणिप्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः।।१।।
प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठः।

यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।। २।।
प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे।
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित्पदेभिः।।३।।
यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति।
य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्यामेको दाधार भुवनानि विश्वा।।४।।
तदस्य प्रियमभि पाथो अस्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति।
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः।।५।।
ता वाँ वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमवभाति भूरि।।६।।
प्र वः पातुमन्धसो धियायते महे शूराय विष्णवे चार्चत।
या सानूनि पर्वतानामदाभ्या महस्तस्थतुरर्वतेव साध्वना।।७।।
त्वेषमित्था समरणं शिमीवतो रिन्द्राविष्णू सुतपा वामुरुष्यति।
या मर्त्याय प्रतिधीयमानमित्कृ- शानोरस्तु रशनामुरुष्यथः।।८।।
ता ई वर्धन्ति मह्यस्य पौंस्यं नि मातरा नयति रेतसे भुजे।
दधाति पुत्रोऽवरं परं पितुर्नाम तृतीयमधि रोचने दिवः।। ९।।
तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसीनस्य त्रातुरवृकस्य मीढुषः।
यः पार्थिवानि त्रिभिरिद्विगामभिरुरुक्रमिष्टोरुरुगायाय जीवसे।। १०।।
द्वे इदस्य क्रमणे स्वर्दृशोऽभिख्याय मर्त्यो भुरण्यति।
तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति वयश्चन पतयन्तः पतत्त्रिणः।। ११।।
चतुर्भिः साकं नवतिं च नवभिश्चक्रं न वृत्तं वृतींरवीविपित्।
बृहच्छरीरो विमिमान ऋक्वभिर्युवा कुमारः प्रत्येत्याहवम्।। १२।।
भवा मित्रो न शेव्यो घृतास्वभिर्विभूतद्युम्न एवया उ सप्रथाः।
अधाते विष्णो विदुषा चिदिव्यः स्तोमो यज्ञश्च राध्यो हविष्मता।। १३।।
यः पूर्व्याय वेधसे नवीयसे सुमज्जानये विष्णवे ददाशति।
यो जातमस्य महतो महि ब्रवत्सेदु श्रवोभिर्युज्यं चिदभ्यसत्।। १४।।
तमुस्तोतारः पूर्व्यं यथा विद ऋतस्य गर्भं जनुषा पिपर्तन।

आस्यजानन्तो नाम चिद्विवक्तन महस्ते विष्णो सुमतिं भजामहे।। १५।।
तमस्य राजा वरुणस्तमश्विना क्रतुं सचन्त मारुतस्य वेधसः।
दाधार दक्षमुत्तममहर्विदं व्रजं च विष्णुः सखिवाँ अपोर्णुते।। १६।।
आ यो विवाय सचथाय दैव्य इन्द्राय विष्णुः सुकृते सुकृत्तरः।
वेधा अजिन्वस्त्रिषधस्थ आर्यमृतस्य भागे यजमानमाभजत्।। १७।।
अबोध्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यो व्यूषाश्चन्द्रा मह्यावो अर्चिषः।
आयुक्षातामश्विना यातवे रथँ प्रासायीद्देवः सविता जगत्पृथक्।। १८।।
यद्युञ्जाथे वृषणश्विना रथँ घृतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम्।
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु जिन्वतं वयं धना शूरसाता भजेमहि।। १९।।
अर्वाङ्त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः।
त्रिबन्धुरो मघव विश्वसौभगः शंन आवक्षद्द्विपदे चतुष्पदे।। २०।।
आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवं मधुमत्या नः कशया मिमिक्षतम्।
प्रायुस्तारिष्टं नीरपांसि सृक्षतं सेधतं द्विषो भवत सचाभुवा।। २१।।
युवं ह गर्भं जगतीषु धत्थो युवं विश्वेषु भुवनेष्वऽन्तः।
युवमग्निं च वृष्णावपश्च वनस्पतीं रश्विनावैरयेथाम्।। २२।।
युवं हस्थो भिषजा भेषजेभिरथो ह स्थो रथ्या रथेभिः।
अथो ह क्षत्रमधि धत्थ उग्रा यो वां हविष्मान्मनसा ददाश।। २३।।
इति ऋग्वेदे।। अथ यजुर्वेदे (रथन्तरं रथेन वैष्णवं सर्वे वाजपेयमन्त्राः देवानामार्षम्)

रथन्तरँ साम भवत्याशीय उज्जित्या इयं वै रथन्तरमस्यामेवाध्य-भिषिच्यते, वियोनिर्वै वाजपेयो निरुक्तः सम्प्राजापत्यो निरुक्तसामा तेन वियोनियोर्दनिरुक्ताः प्रातःसवास्तेन स योनिरनिरुक्ताः प्रातःसवा अनिरुक्तः प्रजापतिः प्रजापतिमेवाप्नोति, वाजवतीभिर्मध्यन्दिने स्तुवन्त्यन्नं वै वाजोन्नाद्यस्यावरुद्धचै चित्रवतीभिरार्भवे पावमाने स्वर्गस्य लोकस्य समष्टचा। आष्ट्रदंष्ट्रमुत्तममुक्तानां भवत्युत्तरे एव स्तोत्रे अभिसन्तनोति, बृहत्साम भवति यद्वा अतिरिच्यतेऽमुन्तंल्लोक-

मभ्यतिरिच्यते, बृहत्त्वा अमुँल्लोकमाप्नुमर्हतीन्द्रियं वीर्यं बृहदिन्द्रियं एव वीर्ये प्रतितिष्ठति वैष्णवीषु शिपिविष्टवतीषु, स्तुवन्त्येषा वै प्रजापतेः पशुष्टास्तनूर्या शिपिविष्टवती, तस्माच्छिपिविष्टवतीषु स्तुवन्त्यतिरिक्तं वा एतदतिरिक्तं शिपिविष्टमतिरिक्तेनैवातिरिक्तमाप्नोति॥ ॐ नमो-बुधाय, विष्णुव्रतधारिणे, रूपाधिपतये, महाबुद्धिशरीराय, सोमवंश-जाय, यजमानवरप्रदाय स्वाहा। (तर्पणम्) बुधो बुद्धिप्रदाता च सोमपुत्रो महाद्युतिः। आदित्यस्य रथे तिष्ठन्स बुधः प्रीयतां मम अनेन मंत्र होमेन० विष्णुबुधौ सानुचरौ प्रीयेतां प्रीतौ मे भवेताम्॥ इति विष्णुबुधसूक्तम्॥

॥ अथ इन्द्राबृहस्पतिसूक्तम्॥

त्रतारमिन्द्रमवितारमिन्द्रँ हवे हवे सुहवँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥ बृहस्पते अति यदर्यो अर्होद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसर्तप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

उद्यत्सूर्यायुतरुचिनिभं मौलिरत्नांशुदीप्तं
देवं पद्माशनिकरमजं नेत्रसाहस्त्ररम्यम्।
हारानर्घ्यस्फुरदुरुमणिव्याप्तवक्षःस्थलं तं
ध्याये देवैः प्रणमितपदं पूर्वदिक्पालमिन्द्रम्॥
तेजोमयं शक्तित्रिशूलहस्तं सुरेन्द्रजेष्ठस्तुतपादपद्मम्।
मेधानिधिं मत्स्यगतं द्विबाहुं गुरुं स्मरे मानसपङ्कजेऽहम्॥

बृहस्पते बृहस्पतिर्ज्ञानं तुष्टाव नवमी जगती॥

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्प्रेणा तदेषां निहित गुहाविः॥ १॥
सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि॥ २॥

यज्ञेन वाचः पदवीयमायन्तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम्।
तामाभृत्या व्यदद्युः पुरत्रा तां सप्त रेभा अभि सन्नवन्ते।। ३।।
उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणत्येनाम्।
उत त्वस्मै तन्वं विसस्त्रे जायेव पत्ये उषती सुवासाः।। ४।।
उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुर्नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु।
अधेन्वां चरति माययैष वाचं सुश्रवामफलामपुष्पाम्।। ५।।
यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति।
यदीं शृणोत्यलीकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्।। ६।।
अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेषुअसमा बभूवुः।
आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे हृदा इव स्नात्वा उ त्वे ददृशे।। ७।।
हृदा तष्टेषु मनसो जवेषु यद्ब्राह्मणाः संयजन्ते सखायः।
अत्राह त्वं विजहुर्वेद्याभिरोहब्रह्माणो विचरन्त्यु त्वे।। ८।।
इमे ये नार्वाङ्न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो नसुतेकिरासः।
त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः।। ९।।
सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः।
किल्बिषस्पृत्पितुषणिर्ह्येषामरं हितो भवति वाजिनाय।। १०।।
ऋचां त्वाः पोषमास्ते पुपुष्वान्गायत्रं त्वो गायति शक्करीषु।
ब्रह्मा त्वोवदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां विमिमीत उ त्वः।। ११।।
इति ऋग्वेदे।। अथ यजुषि (इन्द्राय वाचं वदतेन्द्रस्य जगतो, दैवी वाचं प्रत्याज्यशीर्षमानस्यासुरेभ्य, आयुर्यज्ञेन कल्पतामित्यनुवाकद्वयं यावत्पुरुषस्य नारायणस्यार्षम्)।। इन्द्राय वाचं वदतेन्द्राय वाचँ संवदतेन्द्रं वाजं जापतेन्द्रं वाजं जय। आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादा मा द्यावापृथिवी विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्।। एषा वः सा सत्या सं वागभूद्यामिन्द्रेण समदध्वम्। अजीजपत वनस्पतय इन्द्रं वाजं विमुच्यध्वम्।। वाजिनौ वाजिजितौ वाजं जित्वा बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रतां। वाजिनो वाजिजितो वाजं

जिगीवांसो बृहस्पतेर्भागे निमृजतां पत्नी।। स्वोरोहावीहि स्वोरोहावेहि स्वोरोहाव स्वोरोहाव स्वोरोहाव स्वोरोहौ।। आयुर्यज्ञेन कल्पतां, मनो यज्ञेन कल्पतां, प्राणो यज्ञेन कल्पतां, चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां, श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां, वाग्यज्ञेन कल्पतां, आत्मा यज्ञेन कल्पतां, ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां, पृष्टं यज्ञेन कल्पतां, यज्ञो यज्ञेन कल्पतां, स्वर्देवा अगन्म प्राजापतेः प्रजा अभूवन्नमृता अभूम।। वाजाय स्वाहा, प्रसवाय स्वाहा, पिजाय स्वाहा, क्रतवे स्वाहा, वाक्पतये स्वाहा, वसवे स्वाहा, स्वामौंर्ध्वाय स्वाहा, मूर्नो वैयशनाय स्वाहा, व्यश्वन आन्त्याय स्वाहा, अन्त्याय भौवनाय स्वाहा, भुवनस्य पतये स्वाहा, प्रजापतये स्वाहा, अधिपतये स्वाहा, अन्नाय त्वा, वाजाय त्वा, वाजिजित्यै त्वा।। ॐ नमो बृहस्पतये स्वाहा, ब्रह्मचर्याधराय, प्रजापालपतये, देवराजपुरोहिताय, देवगुरवे, सुरमन्त्रिणे यजमानवरप्रदाय स्वाहा।। तर्पणम्।। **मेरुमूर्ध्नि समाक्रान्तो देवराजपुरोहितः। ज्ञाता यः सर्वशास्त्राणां स गुरुः प्रीयतां मम।** अनेन मन्त्रहोमेन० इन्द्राबृहस्पती सानुचरौ प्रीयेतां प्रीतौ मे भवेताम्।। इति इन्द्राबृहस्पतिसूक्तम्।।

।। अथ सरस्वतीशुक्रसूक्तम्।।

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने। सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यान्दात्।। अन्नात्परिस्रुतो रसँ ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

उद्यच्चन्द्रसहस्रकोटिसदृशीं पद्माननां हंसगां
वाग्देवीं सुमनोहरैर्भुजयुगैर्वीणां तथा पुस्तकम्।
पद्मं चामृतपूर्णरत्नचषकं दिव्याम्बरैर्भूषितां
सन्धार्य वरदां मनोहरतनुं वाग्देवतां चिन्तये।। १।।
सन्तप्तकाञ्चननिभं द्विभुजं दयालुं पीताम्बरं धृतसरोरुहद्वन्द्वशूलम्।

क्रौञ्चासनमसुरसेवितपादपद्मं शुक्रं स्मरे द्विनयनं हृदयाम्बुजेऽहम्॥ २॥
इयं षडूना सारस्वतं त्रिजगत्यादिजगती त्रिष्टुबन्तम्॥
इयमदधाद्रभासमृणच्युतं दिवादासं वध्र्यश्वाय दाशुषे।
या शश्वन्तमाचखादावसं पणिं ताते दात्राणि तविषा सरस्वति॥ १॥
इयं शुष्मेभिर्बिसखा इवारुजत्सानु गिरीणां तविषेभिरूर्मिभिः।
पारावतघ्निमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमा विवासेम धीतिभिः॥ २॥
सरस्वति देवनिदो निवर्हय प्रजां विश्वस्य वृसयस्य मायिनः।
उत क्षितिभ्योऽवनीरविन्दो विषमेभ्यो अस्त्रवो वाजिनीवति॥ ३॥
प्रणो देवी सरस्वती वाजभिर्वाजिनीवति, धीनामवित्र्यवतु॥ ४॥
यस्त्वा देवि सरस्वत्युपब्रूते धने हिते, इन्द्रं न वृत्रतूर्ये॥ ५॥
त्वं देवि सरस्वत्यवा वाजेषु वाजिनी, रदा पूषेव नः सनिम्॥ ६॥
उत स्या नः सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनिः वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम्॥ ७॥
यस्या अनन्तो अहुतस्त्वेषश्चरिणुरर्णवः, अमश्चरति रोरुवत्॥ ८॥
सा नो विश्वा अति द्विषः स्वसृरन्या ऋतावरी, अतन्नहे व सूर्यः॥ ९॥
उत नः प्रियः प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा, सरस्वती स्तोम्याभूत्॥ १०॥
आपप्रुषी पार्थिवान्युरु रजो अन्तरिक्षम्, सरस्वती निदम्पातु॥ ११॥
त्रिषदस्था सप्तधातुः पञ्च जाता वर्धयन्ती, वाजे वाजे हव्या भूत्॥ १२॥
प्रया महिम्ना महिनासुचिकिते द्युम्नेभिरन्या अपसामपस्तसा।
रथ इव बृहती विभ्वने कृतोपस्तुत्या चिकितुषा सरस्वती॥ १३॥
सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो माप स्फरीः पयसा मा न आधक्।
जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत्क्षेत्राण्यरणानि गन्म॥ १४॥
इति ऋचि॥ अथ यजुषि॥ सोमो राज इति द्वावनुवाकौ क्रौञ्चा आङ्गिरसस्य।
सुरावन्तमिति मृत्योः सांपारायणस्य॥
सोमो राजामृतँ सुत ऋजीषेणाजहान्मृत्युम्।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियंविपानं शुक्रमन्धसइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ १॥

सोममद्भ्यो व्यपिबच्छन्दसा हंसाः शुचिषत्।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥२॥
अद्भ्यः क्षीरं व्यपिबत्कुङ्ङाङ्गिरसो धिया।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥३॥
अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रम्।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ४॥
रेतो मूत्रं विजहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम्।
गर्भो जरायुणावृत उल्बं जहाति जन्मना ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ५॥
वेदने रूपे व्यपिबत्सुतासुतौ प्रजापति ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ६॥
दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्यानृते प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ७॥
दृष्ट्वा परिस्रुतो रसं शुक्रेण शुक्रं व्यपिबत्, पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ८॥
सुरावन्तं बर्हिषदं सुवीरं यज्ञं हिन्वन्ति महिषा नमोभिः।
दधानाः सोमं दिवि देवतासु मदेमेन्द्रं यजमानाः स्वर्काः॥
यस्ते रसः सम्भृत ओषधीषु सोमस्य शुष्मः सुरया सुतस्य।
तेन जिन्व यजमानं मदेम सरस्वतीमश्विनाविन्द्रमग्निम्॥
यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय।
इमं ते शुक्रं मधुमन्तमिन्द्रं सोमं राजानमिह भक्षयामि॥
यदत्र रिप्तं रसिनः सुतस्य यदिन्द्रो अपिबच्छचीभिः।
अहं तदस्य मनसा शिवेन सोमं राजानमिह भक्षयामि॥

ॐनमः शुक्राय स्वाहा, इन्दुचर्याधराय, सप्तकिरणाय, मायाधिपतये, असुरगुरवे, यजमानवरप्रदाय स्वाहा। तर्पणम्।

सोमतुल्या प्रभा यस्य योऽसुराणां गुरुस्तथा।
जेता यः सर्वशत्रूणां स काव्यः प्रीयतां मम।। अनेन मन्त्रहोमेन सरस्वतीशुक्रौ सानुचरौप्रीयेतां प्रीतौ मे भवेताम्।

॥ इति सरस्वतीशुक्रसूक्तम्॥

॥ अथ प्रजापतिशनैश्चरसूक्तम्॥

प्रजापते न हि त्वदन्य एता विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शँ योरभि स्त्रवन्तुः।।

ब्रह्माणं रक्तवर्णं सुरवरनमितं बाहुमिर्धारयन्तं
रक्ताक्षमक्षमालाममृतपरिमितं रक्तपात्रं सुशोभम्।
गायत्र्या सन्नियुक्तं समुनिश्रुतिगणैर्वेष्टितं वामभागे
नानाभूषासुभूषं प्रहसितवदनं होमकाले भजेऽहम्।।
नीलाञ्जनाभं मिहिरेष्टपुत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजङ्गपाणिम्।
सुरासुराणां भयदं द्विबाहुं शनिं स्मरे मानसपङ्कजेऽहम्।।

शं वतीः षट्छान्तिरानुष्टुभं पञ्चम्यादि बृहतीजगत्यौ शन्न पञ्चोना शान्तिः॥

शंवतीः पारयन्त्येतेदं पृच्छस्व वचो यथा।
अभ्यारन्तं समाकेतं य एवेदमिति ब्रवत्।। १।।
जायाकेतुं परिस्त्रुतं भारती ब्रह्मवादिनी।
सञ्ज्ञानानामहीजाता य एवेदमिति ब्रवत्।। २।।
इन्द्रस्तं किं विभुं प्रभुं भानुनायं जुजोषति।
तेन सूर्यमरोचयद्येनेमे रोदसी उभे।। ३।।
जुषस्वाग्ने अङ्गिरः काण्वं मेध्यातिथिम्।
मा त्वा सोमस्य बर्बृहत्सुतस्य मधुमत्तमः।। ४।।

त्वमग्ने अङ्गिरः शोचस्व देववीतमः।
आशन्तमशन्तमाभिरभिष्टिभिः शान्तिं स्वस्तिमऽकुर्वत।। ५।।
शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षत्वोषधयः संप्रवर्धन्ताम्।
शं नो द्यावापृथिवी शं प्रजाभ्यः शंनो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।। ६।।
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रा वरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ।। ७।।
शन्नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शन्नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः।
शन्नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शंनो अर्यमा पुरुजातो अस्तु।। ८।।
शन्नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शन्न ऊरूची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शन्नो अद्रिः शन्नो देवानां सुहवानि सन्तु।। ९।।
शन्नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शन्नो मित्रावरुणावश्विना शम्।
शन्नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शन्न इषिरो अभिवातु वातः।। १०।।
शन्नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृषये नो अस्तु।
शन्न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शन्नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः।। ११।।
शन्न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः।
शन्नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शन्नस्त्वष्टाग्नाभिरिह शृणोतु।। १२।।
शन्नः सोमो भवतु ब्रह्म शन्नः शन्नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः।
शन्नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शन्नः प्रस्वः शम्वऽस्तु वेदिः।। १३।।
शन्नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शन्नश्चतस्त्रः प्रदिशो भवन्तु।
शन्नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शन्नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।। १४।।
शन्नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शन्नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः।
शन्नो विष्णुः शमु पूषाणो अस्तु शन्नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः।। १५।।
शन्नो देवः सविता त्रायमाणः शन्नो भवन्तूषसो विभातीः।
शन्नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शन्नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः।। १६।।
शन्नो देवा विश्वेदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शन्नो दिव्याः पार्थिवाः शन्नो अप्याः।। १७।।

शन्नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शन्नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शन्न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शन्नो भवन्तु पितरो हवेषु।। १८।।
शन्नो अज एकपाद्देवो अस्तु शन्नोऽहिर्बुध्न्यो शं समुद्रः।
शन्नो अपां नपात्पेरुरस्तु शन्नः पृश्निर्भवतु देवगोपाः।। १९।।
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः।
शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उतये यज्ञियासः।। २०।।
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनुर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। २१।।
इति ऋचि॥ अथ यजुषि॥ शन्नो देवीरिति ब्रह्मणः॥
शन्नो देवीरभीष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंयोरभिस्त्रवन्तु नः।। एवे द्यूने युवतयो नमन्त यदीमुशन्नुशतीरेत्यच्छ। सं जानते मनसा संचिकित्रेऽध्वर्यवो धिषणापश्च देवीः।। ओषधीरिति मातरः, या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च।। गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान्गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः। इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम्।। न ता अर्वा रेणुककटो अश्नुते न संस्कृतत्रमुप यन्ति ता अभि। उरुगायमभयं तस्य ता अनु गावो मर्तस्य विचरन्ति यजुनः।। रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः, विश्वा अधिश्रियोऽधित।। उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः, रात्रिः स्तोमं न जिग्युषे।। उदुत्यञ्चि- त्रन्देवानाम्, अन्विदनुमते त्वं मन्यासै शञ्चन-स्कृधि। इषन्तोकायनोदधः प्राण आयूँषि तारिषः।। यत्ते नामसुहवं सु प्रणीतेऽनुमतेऽनुमतँ सदा नु। तेन त्वं सुमतिं दिव्यस्मे इषं पिन्वं विश्ववारं सुवीराम्।। राकामहं सहुवाँ सुष्टती हुवे श्रृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना। सीव्यत्वपः सूच्या च्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम्।। यास्ते राके सुमतयः सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वसूनि। ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्त्रपोषं सुभगे रराणा।

सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा, जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढ नः।। या सुबाहुः स्वङ्गुरिः सुषूमा बहुसूवरी। तस्यै विश्पत्न्यै हविः सिनीवल्यै जुहोतन।। कुहूमहं सुकृतं विघ्ननापसमस्मिन्यज्ञे सुहवां जोहवीमि। यो नो ददाति द्रविणं पितृणां तस्यै ते देवि हविषा विधेम।। कुहूर्देवानाममृतस्य पत्नी हव्या नो अस्य हविषः शृणोतु। स्वसा देवानां महयन्त्यस्मे रायस्पोषं चिकितुषे दधातु।। धाता दधातु नो रयिमीशानो जगतस्पतिः, स नः पूर्णेन वावनत्।। प्रजापतिरमयतु प्रजा इह धाता दधातु सुमनस्यमानः। संवत्सर ऋतुभिश्चाक्लृपानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु।। ॐनमः शनैश्चराय स्वाहा, यमचर्याधराय स्वाहा, कालराज्याधिपतये स्वाहा, कृष्णशरीराय स्वाहा, छायासुताय स्वाहा, महामृत्युकिरणाय स्वाहा, यजमानवरप्रदाय स्वाहा।। तर्पणम्।। कृष्णवर्णः कृशाङ्गश्च कृष्णजीमूतसन्निभः। शनैश्चरः सूर्यपुत्रः स सौरः प्रीयतां मम।। अनेन मन्त्रपाठेन (होमेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित-पापनिवारणार्थं प्रजापतिशनैश्चरौ सानुचरौ प्रीयेतां प्रीतौ मे भवेताम्।। इति प्रजापति- शनैश्चरसूक्तम्।।

।। अथ गणपतिराहुसूक्तम्।।

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्। जयेष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्।। कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

ध्याये देवं गणेशं गिरितनयसुतं रक्तवर्णं त्रिनेत्रं
मालां दन्तं वहन्तं सततमपि वरैर्दक्षिणैर्बाहुभिः स्वैः।
वामैः शुभ्रं कुठारं सकलभयहरं मोदकानां च पात्रं
सिंहस्कन्धेस्थितं तं प्रथितगुणनिधिं विघ्नराजं महेशम्।।
शीतांशुमित्रान्तकमीड्यरूपं घोरं च वैडूर्यनिभमबाहुम्।
त्रैलोक्यरक्षापरमिष्टदं च राहुं ग्रहेन्द्रं हृदये भजेऽहम्।

आ याहि नव त्र्युष्णिगाद्यन्तानुष्टुप्मध्ये च सा सौरी तदादीतिहासस्तुति कर्मत्वा- दत्रिदेवह्य एव॥

आया द्रिभिः सुतं सोमं सोमपते पिब।
वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्र हन्तम॥ १॥
वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः।
वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्र हन्तम॥ २॥
वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः।
वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्र हन्तम॥ ३॥
ऋजीषी वज्री वृषभस्तुराषाट् छुष्मी राजावृत्रहा सोमपावा।
युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदर्वाङ्माध्यन्दिने सवनेमत् सत् इन्द्र॥
यत्त्वा सूर्य स्वभानु तमसा विध्यदासुरः॥४॥
अक्षेत्रविद्यथा मुग्धो भुवनान्यदीधयुः॥ ५॥
स्वर्भानोरधयदिन्द्र दिवो वर्तमान अवाहन्।
गूढं सूर्यं तमसापव्रतेन तुरीयेण ब्रह्मणाविन्ददत्रिः॥ ६॥
मा मामिमं तव सन्तमत्र इरस्या द्रुग्धो भियसानि गारीत्।
त्वं मित्रो असि सत्यराधास्तौ मेहावतं वरुणश्च राजा॥ ७॥
ग्राब्णो ब्रह्मा युयुजानः सपर्यन्कीरिणा देवान्नमसोपशिक्षन्।
अत्रिः सूर्यस्य दिवि चक्षुराधात्स्वर्भानोरप माया अधुक्षत्॥ ८॥
यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसा विध्यदासुरः।
अत्रयस्तमन्वविन्दन्नह्यन्ये अशक्नुवन्॥ ९॥

इति ऋचि॥ अथ यजुषि॥ प्रयोजज्ञेति रजनस्य कौणेयस्य॥

प्रयोजज्ञे विद्वाँ अस्य बन्धुं विश्वादेवानां जनिमा विवक्ति। ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचादुच्चा स्वधायाभि प्रतस्थौ॥ महान्मही अस्कभायद्विजातौद्यौँ द्विता पार्थिवांश्च रजः। स बुध्नादाष्ट्र जनुषाभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट्॥ गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्॥ स सुष्टुभा स ऋक्वता गणेन बलं

रुरोज फलिगं रवेण। बृहस्पतिरुस्त्रिया हव्यसूदः कनिक्रदद्वावशती-रुदाजत्।। अग्निरुक्ते पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे। ऋचायामि मरुतो ब्रह्मणस्पतिर्देवाँ अवोवरेण्यम्।। उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवायन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मारुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा।। अर्यमायातु वृषभस्तुविष्मान्यन्ता वसूनि विधत्ते तनूपाः। सहस्राक्षो गोत्रभिद्वज्र-बाहुरस्मासु देवो द्रविणं दधातु।। ये ते अर्यमन्बहवो देवयानाः पन्थानो राजन्दिव आचरन्ति। तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभीरक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव।। अस्मे इन्द्राबृहस्पती रयिं दत्ते शतग्विनम्, अश्वावन्तं सहस्त्रिणम्।। बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः। इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु।। हिरण्यगर्भो यः प्राणतः, उदुत्यञ्चित्रन्देवानाम्, तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदस्य सूर्य, विश्वमाभासि रोचनम्।। दिवो रुक्म उरुचक्षा उदेति दूरे अर्थस्तरणिर्भ्राजमानः। नूनं जनाः सूर्येण प्रसूता अयन्नर्थानि कृणवन्नपांसि। ॐनमो राहवे स्वाहा, कालचर्याधराय, अष्टसहस्त्र-किरणाय, गन्धर्वाधिपतये, सिंहकागर्भसम्भूताय, यज-मानवरप्रदाय स्वाहा।। (तर्पणम्) रक्ताक्षो धूम्रवर्णाभो विजितारिर्महाबलः। अबाहुश्चा- न्तरिक्षस्थः स राहुः प्रीयतां मम अनेन मन्त्रपाठेन (होमेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं गणपतिराहू सानुचरौ प्रीयेतां प्रीतौ मे भवेताम्।

॥ इति गणपतिराहुसूक्तम्॥

॥ अथ रुद्रकेतुसूक्तम्॥

आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः। अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृण्वध्वम्।। केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

शान्तं पद्मवरासनं शशिधरं केयूरहारान्वितं
गौरीभूषितवामभागममलं सिद्धैः सदा सेवितम्।

नागेन्द्रेण विराजितं जपवटीं शूलं कपालं वरं,
बिभ्रन्तं त्रिजगत्पतिं सुरवरं रुद्रं भजेऽहं सदा।।
लाङ्गूलयुक्तं भयदं जनानां कृष्णाम्बुभृत्सन्निभमेकवीरम्।
कृष्णाम्बरं शक्तित्रिशूलहस्तं केतुं भजे मानसपङ्कजेऽहम्।।
कद्रुद्राय नव रौद्रं तृतीया मैत्रावरुणी चान्त्यस्तृचः सौम्योन्त्यानुष्टुप्।।
कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळुष्टमाय तव्यसे, वोचेम शन्तमं हृदे।। १।।
यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे,
यथा तोकाय रुद्रियम्।। २।।
यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति,
यथा विश्वे सजोषसः।। ३।।
गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्,
तच्छंयोः सुम्नमीमहे।। ४।।
यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिवरोचते,
श्रेष्ठो देवानां वसुः।। ५।।
शन्नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये,
नृभ्यो नारिभ्यो गवे।। ६।।
अस्मे सोम श्रियमधि निधेहि शतस्य नृणाम्,
महि श्रवस्तुविनृम्णम्।। ७।।
मा नः सोम परिबाधो मारातयो जुहूरन्त,
आ न इन्दो वाजे भज।। ८।।
यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामं नृतस्य।
मूर्धा नाभा सोम येन आभूषन्तीः सोम वेदः।। ९।।
इत्यृचि। अथ यजुषि। रुद्राखुन्तेति सुभेषजस्य परायणस्य रुद्रैष अवाम्ब-पतिर्भेषेजं पुरस्ताद्बृहती त्र्यम्बकं मृत्युनाशनी अनुष्टुब्भागो भगस्य चापूपा एष भयनाशनं सर्वो रुद्रः।। **रुद्राखुं ते पशुं करोमि तेन त्वा पशुभ्यो निरवदय। एष ते रुद्र भागः सह स्वस्त्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहा।।**

अवाम्ब रुद्रमऽदिमह्यव देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात्।। भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय सुगं मेषाय मेष्यै। अथो अस्मभ्यं भेषजं सुभेषजं यथाऽसति।। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। भगस्थ भगस्य वो लप्सी यैष ते रुद्र भागस्तेनावसेन परो मूजवतोऽतीहि कृत्तिवासाः पिनाकहस्तोऽवततधन्वा। एधोऽस्येधिषी-महिसमिदसि समेधिषीमही तेजोसि तेजो मयि धेहि।। ओं नमः केतवे स्वाहा, अग्निचर्याधराय, सन्ध्यागर्भसम्भूताय, पुच्छवते, धूम्रवर्णाय, महोग्रते- जसे, यजमानवरप्रदाय स्वाहा तर्पणम्। अग्निपुत्रो महातेजाः केतुः सर्वग्रहान्तकः। क्षोभयेद्यः प्रजाः सर्वाः स केतुः प्रीयतां मम।। अनेन मन्त्रपाठेन (होमेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं रुद्रकेतू सानुचरौ प्रीयेतां प्रीतौ मे भवेताम्।

॥ इति रुद्रकेतुसूक्तम्॥

अथ ब्रह्मध्रुवसूक्तम्।।

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायुन्। आसन्निषून्हृत्स्वसो मयो भून्य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात्।। ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामयम्।।

ब्रह्माणं रक्तवस्त्रममरमुनिगणैः सेवितं हंसवाहं
दिव्यां रुद्राक्षमालां शुभकनकयुतां धारयन्तं सुरेशम्।
आस्यैर्वेदान्वदन्तममृतद्रवमुचं गायत्रीप्राणनाथं
वन्दे शान्तं सुरूपं सकलभयहरं सर्वलोकैर्नमस्यम्।।
ऋषिप्रवीरं धृतपक्षिरूपमधोदृशं त्र्यम्बकमित्रदिक्स्थम्।
महौजसं चाञ्जनवर्णप्रख्यं ध्रुवं भजे मानसपङ्कजेऽहम्।।

आ त्वा षड्ध्रुवो राज्ञः स्तुतिस्त्वानुष्टुप्॥

आ त्वाहर्षमन्तरेधि ध्रुवस्तिष्ठाऽविचाचलिः।
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत्॥ १॥
इहैवैधि माप च्योष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः।
इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्रमु धारय॥ २॥
इममिन्द्रो अदीधरद्ध्रुवं ध्रुवेण हविषा हविः।
तस्मै सोमो अधिब्रवत्तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः॥ ३॥
ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे।
ध्रुवं विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामयम्॥ ४॥
ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः।
ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्॥ ५॥
ध्रुवं ध्रुवेण हविषाभिसोमं मृशामसि।
अथोत इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत्॥ ६॥

इत्यृचि। अथ यजुषि॥ हिरण्यवर्णानां शकुनीनां समववृत्रं प्रतित्यं ज्योतिष्मतीं हंस इति प्रजापतेः, इन्द्रस्येति प्रजापतेर्वासिष्ठस्य ब्रह्मणो ध्रुवस्य॥ इन्द्रस्य वज्रोसि वाजसास्त्व- यायं वाजं सेन्मित्रावरुणयोस्त्वां प्रशास्त्रोः प्रशिषा युनज्मि विष्णोः क्रमोऽसि महतां प्रसवे जयाम्नं मनः समिन्द्रियेणैष वज्रो वाजसातमस्तेन नौ पुत्रो वाजं सेदियदस्यायुरस्यायुर्मे धेह्यूर्जस्यू-र्जम्मे धेहि युङ्ङसि वर्चोसि वर्चो मे धेहि मित्रोसि वरुणोसि संविश्वैर्देवैर्नमो मात्रे पृथिव्यै प्रतित्यं नाम राज्यमधायि स्वान्तन्वं वरुणो मुषोत्, शुचेर्मित्रस्य वत्या अभूम मन्महि महद्दतस्य नाम सर्वे व्रता वरुणस्याभूवन्नेमित्रयुररतीनतारीत्, अशूशुभन्त यज्ञिया ऋतेन नित्रितो नौ जरिमाणमानट्, स्योनासि सुषदासि स्योनामासीद सुषदामासीद॥ निषसाद धृतव्रतो वरुणः पास्त्यास्वा, साम्राज्याय सुक्रतुः, अग्नये गृहपतये स्वाहा, सोमाय वनस्पतये स्वाहा, इन्द्रस्य बलाय स्वाहा, महतामोजसे स्वाहा॥ हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष-सद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसद्दतसद्व्योमसदब्जा गोजा

ऋतजा अद्रिजा ऋतम्।। ब्रह्मँस्त्वं ब्रह्मासि सवितासि सत्यसवो, ब्रह्मँस्त्वं ब्रह्मासि मित्रोऽसि सुशेवो, ब्रह्मँस्त्वं ब्रह्मासीन्द्रोसि सत्यौजा, ब्रह्मँस्त्वं ब्रह्मासि वरुणोसि विश्वौजा, एष वज्रस्तेन मे रध्य दिशो अभ्यभूदयन्।। प्रजापते न हि त्वदन्य एता विश्वा जातानि परि ता बभूव, यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु, असौ अमुष्य पुत्रोऽमुष्यासौ पुत्रः वयं स्याम पतयो रयीणाम्।। अपां नप्त्रे स्वाहा, ऊर्जो नप्त्रे स्वाहा, अग्नये गृहपतये स्वाहा।। ॐनमो ध्रुवाय स्वाहा, नरकारिचर्या-धराय, ऋषिप्रवराय, पक्षिरूपाय, भूर्भुवः स्वर्धात्रे, उत्तराशाधिपतये, यजमानवरप्रदाय स्वाहा।। तर्पणम्॥ **ध्रुवराजो महापुण्य ऋषीणां प्रवरो दिशि। उत्तरस्यां स्थितो नित्यं स ध्रुवः प्रीयतां मम।** अनेन मन्त्रपाठेन (होमेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं ब्रह्मध्रुवौ सानुचरौ प्रीयेतां प्रीतौ मे भवेताम्॥ इति ब्रह्मध्रुवसूक्तम्॥

अथानन्तागस्त्यसूक्तम्।

आदित्यं गर्भं पयसा समञ्जन्सहस्त्रस्य प्रतिमाँ विश्वरूपम्। परिवृङ्धि हरसा माभिमंस्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः।। अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्रजामपत्यं बलमिच्छमानः। उभौ वर्णावृषिरुग्रः पुपोष सत्या देवेष्वाशिषो जगाम।।

पातालसंस्थं भुजगैः स्तुतं च
सहस्त्रशीर्षं मुदितं द्विनेत्रम्।
पीताम्बरं रत्नविभूषितं च
भजाम्यनन्तं हृदि देवदेवम्।।

दिवाकरापत्यककुब्निवासं वातापिशत्रुं विनिगीर्णवारिधिम्।
शिवाकृतिं विन्ध्यरिपुं त्वगस्त्यं ध्याये हृदब्जे घटजं ग्रहेशम्।।

पूर्वीः षड्जायांपत्योर्लोपामुद्राया अगस्त्यस्य च द्व्यृचाभ्यां रत्यर्थं संवादं श्रुत्वा अन्तेवासी ब्रह्मचार्यन्तं बृहत्याद्यमपश्यत्॥

पूर्वीरहं शरदः शश्रमाणा दोषा वस्तोरुषसो जरयन्तीः।

मिनाति श्रियं जरिमा तनूनामप्यू नु पत्नीर्वृषणो जगम्युः॥ १॥
ये चिद्धि पूर्व ऋतसाप आसन् साकं देवेभिरवदन्नृतानि।
ते चिदवासुर्नह्यन्तमापुः सम नु पत्नीर्वृषभिर्जगम्युः॥ २॥
न मृषा श्रान्तं यदवन्ति देवा विश्वा इत्स्पृधो अभ्यश्नवाव।
जयावेदत्र शतनीथमाजिं यत्सम्यञ्चा मिथुनावभ्यजाव॥ ३॥
नदस्य मा रुद्यतः काम आगन्नित आजातो अमुतः कुतश्चित्।
लोपामुद्रा वृषणं नीरिणाति धीरमधीरा धयति श्वसन्तम्॥ ४॥
इमं नु सोममन्तितो हृत्सु पीतमुपब्रुवे।
यत्सीमागश्चक्रमा तत्सु मृळतु पुलुकामो हि मर्त्यः॥ ५॥
अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्रजामपत्यं बलमिच्छमानः।
उभौ वर्णावृषिरुग्रः पुपोष सत्या देवेष्वाशिषो जगामं॥ ६॥
इत्यृचि। अथ यजुषि ॥ प्रियमिति देवर्षीणां ब्राह्मणानाम्॥
प्रियवत्यानुवाक्या श्रीवतीयाज्या यत्प्रियवती प्रियमेवैनं सजातानां करोति यच्छ्रीवती श्रियमेवैनं गमयति द्विपदानुवाक्या चतुष्पदायाज्या द्विपदश्चैव चतुष्पदश्च पशूनऽवरुन्ध ऐन्द्रमेकादशकपालं निर्वपेन्मारुतं प्रैऽय्यङ्गवं चरुं तं पश्चाच्छृतं कुर्युर्यस्मात्क्षत्रियाद्विळभ्यर्धश्चरेत्क्षत्रं वा इन्द्रो विण्मारुतः क्षत्रायैव विशमनुनियुनक्ति तमनूच्यमाने पश्चात्प्राञ्चमुदाहरन्ति विशमेवास्मै पश्चादुपदधात्यसंसर्गाय मारुतं सप्तकपालं निर्वपेदैन्द्रमेकादशकपालम्। यः कामयेत विशे च क्षत्राय च समदं कुर्यामिति क्षत्रं वा इन्द्रो विण्मारुतो भागधेय एवैभ्यः समदं करोति मारुतस्य मारुतीमनूच्यैन्द्रयायजेदैन्द्रस्यैन्द्रीमनूच्य मारुत्या यजेत्क्षत्रमेव विशः परिहायादते विट् क्षत्रस्य ते अन्यान्यान्निर्णयत उभयतः पुरोळाशस्यावद्येद्यतरान्कामयेत पराजयेरन्नित्युभयत एव विशमुपदीपयति ताजक्पराजयन्त एतामेव निर्वपेत्। यदा कामयेत कल्पेरन्निति तस्याः प्रसृतिं यजेद्भागधेयेनैवैनान्कल्पयति, मारुतं सप्तकपालं निर्वपेद्यः क्षत्रियो विशो ज्यान्या बिभीयाद्ब्राह्मणो वा

विड्वै मारुतौ भागधेयेनैवैनाञ्छमयत्यऽगस्त्यस्यैतत्सूक्तं कयाशुभीयं तस्य सामिधेनीष्वनुब्रूयात्तस्य याज्यानुवाक्ये स्यातामगस्त्यो वै मरुद्भ्यः शतमुक्ष्णः पृश्नीन्प्रौक्षत्तानिन्द्रायालभत तं मारुतः क्रुद्ध्वा वज्रमुद्धृत्याभ्यपतत्स एतत्सूक्तमऽपश्यत्तेनैनानशमयद्यदेतदनूच्य ते शान्त्यै।। ॐनमो अगस्त्याय स्वाहा, कुम्भयोनये, वातापिशत्रवे, दक्षिणाशापतये, पीतजलनिधये, विन्ध्यारये यजमानवरप्रदाय स्वाहा।। तर्पणम्।। **अगस्त्यः कलशोद्भूतो दक्षिणस्यां दिशि स्थितः। समुद्रं जीर्णवान्योऽसौ विन्ध्यारिः प्रीयतां मम।** अनेन मन्त्रपाठेन (होमेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं अनन्तागस्त्यौ सानुचरौ प्रीयेतां प्रीतौ मे भवेताम्।। इत्यनन्तागस्त्यसूक्तम्।।

।। अथ वास्तोष्पतिसूक्तम्।।

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन् सखा सुशेव एधि नः।।
श्वेताम्बरः सकलदेवसमाश्रिताङ्गः
काकालिमेचकतनुर्द्विभुजो गदाभृत्।
सद्रत्नपात्रवरभूषितबाहुदण्डो
दिश्यात्स वास्तु पुरुषो हृदयेप्सितं नः।।

वास्तोष्पत्यममीवाहाष्टौ वास्तोष्पत्यामाद्या गायत्री शिष्टाः प्रस्वापिन्य उपनिषदुपाद्यास्तिस्र उपरिष्टाद्बृहत्यः शेषमानुष्टुभम्।।

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। १।।
वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो।
अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रति नो जुषस्व।। २।।
वास्तोष्पते शग्मया शंसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या।
पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ३।।
अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशत्,
सखा सुशेव एधि नः।। ४।।

यदर्जुन सारमेतदतः पिशङ्ग यच्छसे।
वीविभ्राजन्त ऋष्टय उप स्त्रक्वेषु वप्सतो निषुस्वप॥ ५॥
स्तेनं राय सारमेय तस्करं वा पुरः सर।
स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान्दुच्छुनायसे निषुस्वप॥ ६॥
त्वं सूकरस्य दर्दृहि तव दर्दर्तु सूकरः।
स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान्दुच्छुनायसे निषुस्वप॥ ७॥
सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विश्पतिः।
ससस्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयमभितो जनः॥ ८॥
या आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः ।
तेषा संहन्मो अक्षाणि यथेदं हर्म्यं तथा॥ ९॥
सहस्त्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत्।
तेना सहस्येना वयं निजनान्स्वापयामसि॥ १०॥
प्रोष्ठेशया वह्येशया नारीर्यास्तल्पशीवरीः। स्त्रियो याः पुण्यगन्धास्ताः सर्वाः स्वापयामसि॥ ॐनमो ब्रह्मणे स्वाहा, कूर्माय, ध्रुवाय, अनन्ताय, हरये, लक्ष्म्यै, कमलायै, शिख्यादिभ्यः पञ्चचत्वारिंश-द्वास्तोष्पतिदेवताभ्यः स्वाहा॥ तर्पणम्। अधोमुखस्थितो देवः पृथिवीं यश्च व्यापकः। शम्भोश्च वल्लभो नित्यं स वास्तुः प्रीयतां मम। अनेन मन्त्रपाठेन (होमेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं। शिख्यादयः पञ्चचत्वारिंशद्वास्तोष्पतिदेवताः प्रीयन्तां प्रीता मे भवन्तु॥ इत्यृचि वास्तोष्पतिसूक्तम्॥

अथ क्षेत्रपालसूक्तम्॥

क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि। गामश्वं पोषयित्न्वा स नो मृळातीदृशे॥ क्षेत्रस्य पते मधुमन्तमूर्मिं धेनुरिव पयो अस्मासु धुक्ष्व। मधुश्चुतं घृतमिव सुपूतमृतस्य नः पतयो मृळयन्तु॥ मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम्। क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम॥

भ्राजच्चन्द्रजटाधरं त्रिनयनं नीलाद्रितुल्यप्रभं
दोर्दण्डात्तगदाकपालमरुणं स्रग्वस्त्रगन्धोज्ज्वलम्।
घण्टामेखलघर्घरध्वनिमिलज्झाङ्कारभीमं विभुं।
वन्दे संहितसर्पकुण्डलधरं श्रीक्षेत्रपालं सदा।।

क्षेत्रस्याष्टौ तिस्रः क्षेत्रपत्यः शुनायैका परा पुरउष्णिक्सान्त्या च शुनासीराभ्यामुपान्त्ये सीतायैते अनुष्टुप् भावाद्या चतुर्थी च॥

क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि।
गामश्वं पोषयित्न्वा स नो मृळातीदृशे।। १।।
क्षेत्रस्य पते मधुमन्तमूर्मिन्धेनुरिव पयो अस्मासु धुक्ष्व।
मधुश्चुतं घृतमिव सुपूतमृतस्य नः पतयो मृळयन्तु।। २।।
मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमान्नो भवत्वन्तरिक्षम्।
क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम।। ३।।
शुनं वाहा शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गुलम्।
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय।। ४।।
शुनासीराविमा वाचं जषेथां यद्दिवि चक्रुथः पयः,
तेनेमामुपसिञ्चतम्।। ५।।
अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा।
यथा नः सुभगाससि यथा नः सुफलाससि।। ६।।
इन्द्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषा नु यच्छतु।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम्।
शुनं नः फाला विकृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभियन्तु वाहैः।
शुनं पर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनासीरः शुनमस्मासु धत्तम्।।

पूर्वे हेरकाय स्वाहा, अग्नये **त्रिपुरान्तकाय,** दक्षिणे **वेतालाय,** नैर्ऋते **अग्निजिह्वाय,** पश्चिमे **करालाय,** वायवे **करालिने,** उत्तरे **एकपादाय,** ईशाने **भीमरूपिणे,** ऊर्ध्वे **तारकाख्याय,** पाताले **हाटकेश्वराय,** मध्ये **राजराजेश्वराय स्वाहा, हेरकादिभ्यो बटुकादिभ्यः इह राष्ट्राधिपति-भैरवाय समस्तक्षेत्रपालयागदेवताभ्यः स्वाहा।।** तर्पणम्। **हेरकादीनि**

चान्यानि बटुकाश्चरिकादयः। भूपातालखदिग्व्यापी क्षेत्रेशः प्रीयतां मम॥ अनेन मन्त्रपाठेन (होमेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपाप-निवारणार्थं **हेरुकादयः क्षेत्रेशाः प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु॥** इति ऋग्वेदे क्षेत्रपालसूक्तम्॥

॥ अथ उपदेवसूक्तम्॥

भूतो भूतेषु चरति प्रविष्टः सभूतानामधिपतिर्बभूव।
तस्य मृत्युश्चरति राजसूयं स राजा राज्यमनुमन्यतामिदम्॥
उर्वीरोदसी वरिवः कृणोतु क्षेत्रस्य पत्नीरधिवोचतं नः।
तौ मे द्यावापृथिवी नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चतमंहसः॥
यो विश्वचक्षुरुत यो ह वै देवान्साध्यान्वेद सिद्धत्यस्मादेमिमावलोकाः।
देवाः साध्याः सिद्धं ह्यस्यै सिद्धमस्मै सिद्धममुष्यै य एवं वेद सिद्ध चत्यस्मै॥
यो विश्वचक्षु रुत यो विश्वतो मुखो विश्वतो हस्त उत विश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यां नमते संय्यजत्रैर्द्यावापृथिवी जनयन्देव एकः॥
यस्य व्रतमुप तिष्ठन्त आपो यस्य व्रते पशवो यन्ति सर्वे।
यस्य व्रते पुष्टिपतिर्निविष्टस्तं सरस्वन्तमवसे जोहवीमि॥
गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्त्राक्षरा परमे व्योमन्॥
दिव्यँ सुपर्णं वायसं वृहन्तमपां गर्भं दर्शतमोषधीनाम्।
अभीपतो वृष्टिभिस्तर्पयन्तँ सरस्वन्तमवसे जोहवीमि॥
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।
सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वार्यं दात्॥
सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो मा पस्फरीः पयसा मा न आ धक्।
जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत्क्षेत्राण्यरणानि गन्म॥
पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः॥

चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनां।
यज्ञं दधे सरस्वती।।
महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना।
धियो विश्वा वि राजति।।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुखीय मा मृतात्।।
जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सि न्धुं दुरितात्यग्निः।।
ये के च ज्मा महिनो अहिमा या दिवो जज्ञिरे अपां सधस्थे।
ते अस्मभ्यमिषये विश्वमायुः क्षप उस्त्रा वरिवस्यन्तु देवाः।।

।। अथ सर्वदेवसूक्तम्।।

सर्वे देवा विचित्रा मुनिगणसहिता ब्राह्मणादित्यवर्णा
नागा नद्या गजेन्द्रा हयगणसहिता विश्वरूपा विहङ्गाः।
दैत्यग्राहा जलेशा ग्रहगणसहितास्तारकानेकसंख्याः
संलीना यस्य सर्वे वपुषि स भगवानसर्वदेवोऽवतान्नः।।
नानावक्त्रधरा महाकृतिधराः स्त्रक्चन्दनालंकृताः
नानाशस्त्रधराः सिताऽसितहरिद्रक्ताम्बरधारिणः।
नानाविष्टरसेविनश्च द्विचतुर्बाहून्दधानाः शुभाः
सर्वे देवगणाः फलमभिमतं सन्तु श्रियं दायकाः।।
हयोष्टौ प्रतिक्षेत्रेऽन्त्ये देवपत्न्यो द्वितीया त्रिष्टुबन्त्या च॥
हयो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि तो वहामि प्रतरणीमवस्युवम्।
नास्या वच्मि विमुचं नावृतं पुनर्विद्वान्पथः पुर एत ऋजु नेषति।। १।।
अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्रयन्त मारुतोत विष्णो।
उभा नासत्या रुद्रो अधग्राः पूषा भगा सरस्वती जुषन्त।। २।।
इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वताँ अपः।
हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं नु शंसं सवितारमूतये।। ३।।

उत नो विष्णुरुत वातो अस्त्रिधो द्रविणोदा उत सोमो मयस्करत्।
उत ऋभव उत राये नो अश्विनोत त्वष्टोत विद्वाँ नु मंसते।। ४।।
उत त्यन्नो मारुतं शर्ध आगमद्दिविक्षयं यजतं बर्हिरासदे।
बृहस्पतिः शर्म पूषोत नो यमद्वरूथ्यं वरुणो मित्रो अर्यमा।। ५।।
उत त्वेनः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्यस्त्रामणे भुवन्।
भगो विभक्ता शवसावसा गमदुरुव्यचा अदितिः श्रोतु मे हवम्।। ६।।
देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु न स्तुजये वाजसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छत।। ७।।
उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीरिन्द्राण्याग्नाय्यश्विनीराट्।
आरोदसी वरुणानी शृणोतु व्यन्तु देवीर्य ऋतुर्जनीनाम्।। ८।।
ब्राह्मादिभ्यो मातृभ्यः, गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः, ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वरदेवताभ्यः, राकादेवताभ्यः, त्रिकादेवताभ्यः, सिनीवालीदेवताभ्यः, यामीदेवताभ्यः, कुहूदेवताभ्यः, रौद्रीदेवताभ्यः ऐन्द्रीदेवताभ्यः वारुणीदेवताभ्यः ब्राहस्पत्यदेवताभ्यः, ॐ भूर्देवताभ्यः, ॐ भुवर्देवताभ्यः, ॐस्वदेवताभ्यः, ॐसरस्वत्यै, हेरुकादिभ्यो वटुकादिभ्यः अखण्डब्रह्माण्डयागदेवताभ्यः स्वाहा इत्यन्तं। तर्पणं। पृथिवीं द्यां चान्तरिक्षं समस्तभुवनानि च। अमरा येऽवतिष्ठन्ति प्रीयन्तां ते सदा मम।। मन्त्रपाठेन (होमेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपाप-निवारणार्थं सर्वे देवाः प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु॥ इति ऋग्वेदे सर्वदैवतसूक्तम्॥

।। अथ रात्रिसूक्तम्।।

शूलाब्जपाशाङ्कुशहस्तपद्मां चतुर्भुजां धूम्रनिभां त्रिनेत्राम् ।
सिंहासनस्थां धृतपीतवस्त्रां ध्याये महेशीं हृदि कालरात्रीम्।।
कालाम्बुवाहद्युतिमिन्दुवक्त्रां तारावलीशोभिपयोधराढ्याम्।
कपालपाशाङ्कुशशूलहस्तां नीलाम्बरां यामवतीं नमामि।।
रात्री कुशिकः सौभरो रात्रिर्वा भारद्वाजी रात्रिस्तवो गायत्रम्॥

रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षिभिः, विश्वा अधि श्रियोधित॥ १॥
ओर्वप्रा अमर्त्या निवतो देव्युद्वतः, ज्योतिषा बाधते तमः॥ २॥
निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती, अपेदु हासते तमः॥ ३॥
सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि, वृक्षे न वसतिं वयः॥ ४॥
नि ग्रामासो अविक्षत निपद्वन्तो नि पक्षिणः, निश्येनासश्चिदर्थिनः॥ ५॥
यावया वृक्यंवृकं यवयस्तेनमूर्म्ये, अथा नः सुतरा भव॥ ६॥
उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थितः, उष ऋणेव यातय॥ ७॥
उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः, रात्रिस्तोमं न जिग्युषे॥ ८॥
आ रात्रि पार्थिवं रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदांसि बृहती वितिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥ ९॥
ये ते रात्रीनृचक्षसो युक्तासो नवतिर्नव।
अशीतिः संत्वष्टा उतोते सप्तसप्ततीः॥ १०॥
रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वभूतनिवेशनीम्।
भद्रां भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो निशाम्॥ ११॥
संवेशिनीं संयमनीं ग्रहनक्षत्रमालिनीम्। प्रपन्नोहं शिवां रात्रीं भद्रे पारमशीमहि॥ ॐकालरात्र्यैस्वाहा, तालरात्र्यैस्वाहा, शिवरात्र्यैस्वाहा, राण्यरात्र्यैस्वाहा, महारात्र्यैस्वाहा, रौद्ररात्र्यैस्वाहा, सौख्यरात्र्यैस्वाहा, धूर्भ्यः उपर्धूभ्यः, महागायत्र्यै, सावित्र्यै, सरस्वत्यै॥ शैलपुत्र्यैस्वाहा ब्रह्मचारिण्यैस्वाहा कूष्माण्डचैस्वाहा चण्डघण्टायैस्वाहा स्कन्दमात्रे-स्वाहा सिद्धिदायैस्वाहा महागौर्यैस्वाहा कालरात्र्यैस्वाहा कात्यायन्यै स्वाहा महालक्ष्म्यैस्वाहा नवदुर्गाभगवत्यैस्वाहा तर्पणम्। भद्रा भगवती कृष्णा तारा काली च पार्वती। मङ्गला शिवरात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिताः॥ अनेन मन्त्रपाठेन (होमेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपाप-निवारणार्थं रात्रिदेव्याः प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु॥ इत्यृचि रात्रिसूक्तम्॥

।। अथ षड्ऋतुसूक्तम् ।।

चूतप्रवालरसनिर्भरमञ्जुकण्ठाः
कूजन्ति कोकिलगणा गहनेषु यत्र।
वैतालिका इव मनोभवबोधनाय
सोऽयं वसन्तसमयः सुखदोऽस्तु मह्यम्।। १।।

नानावर्णधरं वसन्तममलं ग्रीष्मं च रक्ताम्बरं
वर्षा मेघकदम्बमेचकतनुः संवर्षयन्ती सदा।
सर्वाशापरिपूरिकां च शरदं पीताम्बरां सत्फलां
हेमन्तं, शिशिरं तुषारविमलं षट्कमृतूनां भजे।। २।।

स नाऽरमत स प्राद्रवत्तस्तिन्नजुहोत्तस्या आहुत्याः पुरुषोऽजायत, स नाऽरमत स प्राद्रवत्तस्मिन्नजुहोत्तस्या आहुत्या अश्वोऽजायत, तस्मात -पुरुषश्चाश्वश्च नक्तं प्रत्यञ्चौ न सु विज्ञायेते, इव स नारमत स प्राद्रवत्तस्मिन्नजुहोत्तस्या आहुत्या गौरजायताऽविरजायताऽजाऽजायत यवोऽजायत व्रीहिरजायतैताभ्यो वै सप्तभ्य आहुतिभ्यः सप्तेमे ग्राम्याः पशवोऽसृजन्त, स नारमत स प्राद्रवत्तस्मिन्नजुहोत्तस्या आहुत्या वसन्तोऽजायत ग्रीष्मोऽजायत वर्षा अजायन्त शरदजायत हेमन्तो-ऽजायत, स त्रयोदश्यामाहुत्यामुद्यतायामबिभेत्तं प्रत्यङ्ङुपापद्यत तं पाणितः प्राविशत्तस्मात्पाण्योर्लोम नास्त्यग्निधानं ह्येतत्तस्माद्ध-स्ताभ्यामग्निर्मथ्यमानो जायते।। तस्माद्धन्यमानो हस्तौ प्रति प्रगृह्णात्यग्ना हव तंत्राणमिश्छतेऽग्निं वै पशवोनूपतिष्ठन्ति पशूनग्निः प्रैनं पशवो विशन्ति प्र पशून्विशति य एवं वेद तामाहुतिमप्सु प्रसिञ्चत्ततः शिशिरमजायत, तस्मात्तत्क्रूरतमं नहि तद्धुतान्नाहुतादजायत, साहुतिरपो दग्धुमुपाक्रामत, तत आपोग्रेय वज्रोभवँस्तस्मात्प्रोक्षन्नग्निर्न प्रापयेद्यत्प्रापयेद्धचेतेन यजते तामाहुतिमोषधीषु न्यदधात्तस्मादोष-धयोऽनभ्यक्ता रेभन्त ओषधिभ्योऽधिपशवः पशुभ्योधि प्रजास्त-देतच्छिशिर आज्यं श्यायत्यग्नये तस्माच्छिशिरे कक्ष उपादुत्याः

प्रियमेव धामाग्नये प्रादात्सोऽस्मा अन्नाद्यं प्रयच्छत्यन्नादो भवति य एवं वेद।।

ॐवसन्तेनर्तुना देवा वसवस्त्रिवृताः स्तुताः,
रथन्तरेण भेषजा हविरिन्द्रो वयो दधुः।। १।।
ग्रीष्मेण ऋतुना देवा रुद्राः पञ्चदशे स्तुताः बृहता यशसा बलँ हविरिन्द्रो वयो दधुः।। २।।
वर्षाभिर्ऋतुनादित्याः स्तोमे सप्तदशे स्तुताः,
वैरूपेण विशौजसा हविरिन्द्रो वयो दधुः।। ३।।
शारदेनर्तुना देवा एकविंश ऋभवः स्तुताः,
वैराजेन श्रिया श्रियं हविरिन्द्रो वयो दधुः।। ४।।
हेमन्तेनर्तुना देवास्त्रिणवे मारुतः स्तुताः,
बलेन शक्करीः सहो हविरिन्द्रो वयो दधुः।। ५।।
शैशिरेणर्तुना देवास्त्रयस्त्रिंशेऽमृता स्तुताः,
सत्येन रेवतीः क्षत्रँ हविरिन्द्रो वयो दधुः।। ६।। २।।

अग्नये नमो, गायत्र्यै नमस्त्रिवृते नमो, रथन्तराय नमो, वसन्ताय नमः, प्राच्यै दिशे नमः। प्राणाय नमो वसुभ्यो नमः।। १।। इन्द्राय नमस्त्रिष्टुभे नमः, पञ्चदशाय नमो, बृहते नमो, ग्रीष्माय नमो, दक्षिणायै दिशे नमो, व्यानाय नमो, रुद्रेभ्यो नमः।। २।। मरुद्भ्यो नमो, जगत्यै नमः, सप्तदशाय नमो, वैरूपाय नमो, वर्षाभ्यो नमः, प्रतीच्यै दिशे नमोऽपानाय नम, आदित्येभ्यो नमः।। ३।। विश्वभ्यो देवेभ्यो नमोऽनुष्टुभे नमः, एकविंशाय नमो, वैराजये नमः, शरदे नम, उदीच्यै दिशे नमः, समानाय नमश्चन्द्रमसे नमः।। ४।। मित्रा-वरुणाभ्यां नमः, पाङ्क्तौष्णिहाभ्यां नमस्त्रिणवत्रयस्त्रिंशभ्यां नमः, शाक्कररैवताभ्यां नमो, हेमन्तशिशिराभ्यां नम, ऊर्ध्वायै दिशे नम, उदानाय नमो, विष्णवे नमः।। ५।। पृथिव्यै नमोऽग्नये नमो, भूताय नमश्चक्षुषे नमोऽन्तरिक्षाय नमो, वायवे नमो, भव्याय नमः,

श्रोत्राय नमो, दिवे नमः, सूर्याय नमो, भविष्यते नमो, मनसे नमः।। ॐवसन्तायस्वाहा, ग्रीष्मायस्वाहा, वर्षाभ्योस्वाहा, शरदेस्वाहा, हेमन्तायस्वाहा, शिशिरायस्वाहा, षड्ऋतुभ्यः स्वाहा। तर्पणम्। वसन्तश्च तथा ग्रीष्मो वर्षाश्चैव शरत्तथा। हेमन्तः शिशिरश्चैव प्रीयन्तामृतवो मम।। अनेन मन्त्र होमेन षड्ऋतवः प्रीयन्तां०॥ इति यजुषि षड्ऋतुसूक्तम्॥

।। अथोपहोमः।।

तव श्रिये व्यजिहीत पर्वतो गवां गोत्रमुदसृजो यदङ्गिरः। इन्द्रेण युज तमसा परिवृतं बृहस्पते निरपामौजो अर्णवम्।। बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसर्तप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। बृहस्पतिः समजयद्वसूनि महो ब्रजान्गोमतो देव एषः। अपः सिषासन्त्स्वरप्रतीतो बृहस्पतिर्हन्त्यमित्रमर्कैः।। यमो दाधार पृथिवीं य्यमो द्यामुत सूर्यम्। यमाय सर्वमित्तस्थे यत्प्राणद्वायुरक्षितम्।। यथा पञ्च यथा षडचथा पञ्च दशर्षयः। यमं यो विद्यात्स ब्रूयाद्य-थैकर्षिर्विजानते।। त्रिकद्रुकेभिः पतति षडुर्वीरेकमिद्वृहत्। गायत्री त्रिष्टुप्छन्दाँसि सर्वा ता यम आहिता।। मृळा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु।। अश्याम ते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तव रुद्र मीढ्वः। सुम्ना यन्निद्विशो अस्माकमा चरारिष्टवीरा जुहवाम ते हविः।। त्वेषं वयँ रुद्रं यज्ञसाधनं वङ्कुं कविमवसे नि ह्वयामहे। आरे अस्मद्दैव्यं हेळो अस्यतु सुमतिमिद्वयमस्या वृणीमहे।। अव ते हेळो वरुण नमोभिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः। क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनाँसि शिश्रथः कृतानि।। उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रयथ। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।। इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृळय। त्वामवस्युराचके।। तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेळमानो वरुणेह

बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः।।

महाव्याहृतयः प्रजापतेः।।

ॐ भूर्लोकाय नमः।। ॐ भुवोलोकाय नमः।। ॐ स्वर्लोकाय नमः।। ॐ भूर्भुवः स्वर्लोकाय नमः।। अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेताँसि जिन्वति।। उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह मादयध्यै। उभा दाताराविषां रयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम्।। अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः। यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशे विशे।। अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः। तं जानन्नग्न आरोह ततो नो वर्धया रयिम्।।

स्तोमोदेवानाम्।।

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये।
आरे अस्मे च शृण्वते।। १।।
अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः।
पयः सहस्त्रसामृषिम्।। २।।
(आरुणेः) कदाचन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे।
उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते।। ३।।
परि ते दूळभो रथोऽस्माँ अश्नोतु विश्वतः।
येन रक्षसि दाशुषः।। ४।।
रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्टमुप यामि शर्म।
शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा सरिषः पातु नक्तम्।। ५।।
प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणीहि विश्वतः प्रति।
यातुधानस्य रक्षसो बलं वि रुज वीर्यम्।। ६।।
यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि।
मघवञ्छग्धि तव तं न ऊतिभिर्विद्विषो विमृधो जहि।। ७।।
य देवा दिव्येकादश स्थ पृथिव्यमध्येकादश।

अप्सुषदो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्।। ८।।

अब आग्नेय कोण पर जल और चावल सहित दो मिट्टी के पात्रों या दो कटोरियों में रखे दो क्षेत्रपालों को 'क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि०' इस ऋचा से लेकर 'य एवं वेद सिद्ध्यत्स्मै' तक केवल चावल (फूलरहित) डालिये।

क्षेत्रस्य पतिना वयं हितेनेव जयामसि।
गामश्वं पोषयित्वा स नो मृळातीदृशे।। ९ ।।
क्षेत्रस्य पते मधुमन्तमूर्मिं धेनुरिव पयो अस्मासु धुक्ष्व।
मधुश्च्युतं घृतमिव सु पूतमृतस्य नः पतयो मृळयन्तु।। १०।।
मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम्।
क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम।। ११।।
भूतो भूतेषु चरति प्रविष्टः स भूतानामधिपतिर्बभूव।
तस्य मृत्युश्चरति राजसूयं स राजा राज्यमनुमन्यतामिदम्।। १२।।
उर्वी रोदसी वरिवः कृणोतु क्षेत्रस्य पत्नीरधिवोचतं नः।
स्तौमि द्यावापृथिवी नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चतमंहसः।। १३।।
यो ह वै देवान्साध्यान्वेद सिध्यत्यस्मादेमिमावलोकाः।
देवाः साध्याः। सिद्धं ह्यस्यै सिद्धमस्मै सिद्धममुष्यै य एवं वेद सिद्ध्यत्यस्मै।। १४।।
यो विश्वचक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो हस्त उत विश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यां नमते संय्यजत्रैर्द्यावापृथिवी जनयन्देव एकः।।
यस्य व्रतमुप तिष्ठन्त आपो यस्य व्रते पशवो यन्ति सर्वे यस्य व्रते पुष्टिपतिर्निविष्टस्तं सरस्वन्तमवसे जोहवीमि।। १५।।
गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।। १६।।
दिव्यं सुपर्णं वायसं वृहन्तमपां गर्भं दर्शतमोषधीनाम्।
अभीपतो वृष्टिभिस्तपर्यन्तं सरस्वन्तमवसे जोहवीमि।। १७।।

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।
सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यं दात्। १८॥
सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो माप स्फरीः पयसा मा न आ धक्।
जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत्क्षेत्राण्यरणानि गन्म॥ १९॥
पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥
चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञं दधे सरस्वती॥ २०॥
महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना।
धियो विश्वा वि राजति॥ २१॥
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥ २२॥
जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ २३॥
ये के च ज्मा महिनो अहिमाया दिवो जज्ञिरे अपां सधस्थे।
ते अस्मभ्यमिषये विश्वमायुः क्षम उस्त्रा वरिवस्यन्तु देवाः॥ २४॥
मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्।
ग्राहिर्जग्राह यदि वैतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम्॥ २५॥
स सुष्टुभा स ऋक्वता गणेन बलँ रुरोज फलिगँ रवेण।
बृहस्पतिरुस्त्रिया हव्यसूदः कनिक्रदद्वावशतीरुदाजत्॥ २६॥
एवा पित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।
बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ २७॥
या ते श्वानौ यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ।
ताभ्यामेनं परि देहि राजन्त्स्वस्ति चास्मा अनमीवञ्च धेहि॥ २८॥
यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि।
तत्र हव्यानि गामय॥ २९॥
अन्विदनुमते त्वं मन्यासै शं च नस्कृधि।
इषं तोकाय नो दधः प्र ण आयूँषि तारिषः॥ ३०॥
यत्ते नाम सुहवं सु प्रणीतेऽनुमतेऽनुमतं सदा नु।

तेन त्वं सुमतिं दिव्यं मे इषं पिन्वं विश्ववारं सुवीराम्।। ३१।।
अङ्गादङ्गाल्लोम्नो लोम्नो जातं पर्वणि पर्वणि।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते।। ३२।।
ॐ भूर्भुवः स्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।। ३३।।
तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।।
तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम्।। ३४।।
ऐन्द्राग्नं वर्म बहुलं यदुग्रं विश्वे देवा नाति विध्यन्ति शूराः।
तन्नस्त्रायतां तन्वः सर्वतो महदायुष्मन्तो जरामुपगच्छेम जीवाः।।

।। तर्पणमेकत्र ग्रहाणाम्।।

अनेन मन्त्रहोमेन (पाठेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपाप-निवारणार्थं। अमुकदेवतासन्तोषणार्थं। धर्मार्थकाममोक्षफलप्राप्त्यर्थं। ग्रहपीडानिवारणार्थं। महागणपतिः कुमारः श्रीः सरस्वती लक्ष्मीः विश्वकर्मा द्वारदेवताः प्रजापतिः ब्रह्मा कलशदेवताः ब्रह्म-विष्णुमहेश्वरदेवताः चतुर्वेदेश्वराः सानुचराः मासपतिर्नारायणः दुर्गा त्र्यम्बकः वरुणः यज्ञपुरुषः अग्निष्वात्तादयः पितृगणदेवताः।।
भगवान्वासुदेवः सङ्कर्षणः प्रद्युम्नः अनिरुद्धः सत्यः पुरुषः अच्युतः माधवः गोविन्दः सहस्त्रनामा विष्णुः लक्ष्मीसहितः श्रीनारायणः।
भगवान्भवो देवः शर्वो देवः रुद्रो देवः पशुपतिः देवः उग्रो देवः भीमः देवः ईशानो देवः ईश्वरो देवः महादेवः पार्वतीसहितः परमेश्वरः।
भगवान्विनायकः एकदन्तः कृष्णपिङ्गलः गजाननः लम्बोदरः बाल. चन्द्रः हेरम्बः आखुरथः विघ्नेशः विघ्नभक्षः वल्लभासहितः श्रीमहा-गणेशः।।
भगवान् क्लींकांकुमारः षण्मुखः मयूरवाहनः पार्वतीनन्दनः सेनाधिपतिः कुमारः।

भगवान् ह्रांह्रींसः सूर्यः सप्ताश्वः अनश्वः एकाश्वः नीलाश्वः प्रत्यक्षदेवः तेजोरूपः परमार्थसारः प्रभासहितः आदित्यः।
भगवती अमा कामा चार्वङ्गी टङ्कधारिणी तारा पार्वती यक्षिणी श्रीशारिकाभगवती श्रीशारदाभगवती श्रीमहाराज्ञाभगवती श्रीज्वालाभगवती व्रीडाभगवती वैखरीभगवती जयाभगवती विजयाभगवती तोतुलाभगवती शीतलाभगवती शैलाभगवती वितस्ताभगवती गङ्गभगवती यमुनाभगवती सिद्धलक्ष्मीः महालक्ष्मीः महात्रिपुरसुन्दरी सहस्त्रनाम्नी देवी भवानी अभयङ्करी देवी भवानी क्षेमङ्करी भवानी सर्वशत्रुघातिनी इहराष्ट्राधिपतिः अमुकभैरवः।। इन्द्रः सुराधिपतिः वज्रहस्तः शचीसहितः। अग्निः तेजोऽधिपतिः शक्तिहस्तः स्वाहासहितः। यमः प्रेताधिपतिः दण्डहस्तः यामीसहितः। नैर्ऋतिः रक्षोऽधिपतिः खड्गहस्तः दितिसहितः। वरुणः जलाधिपतिः पाशहस्तः वारुणी जलाधिपतिः पाशहस्तः वारुणीसहितः वायुः जीवाधिपतिः ध्वजाहस्तः प्राणशक्ति सहितः। कुवेरः यक्षधिपतिः गदाहस्तः यक्षिणीसहितः। ईशानः सर्वाधिपतिः त्रिशूलहस्तः उमासहितः। ब्रह्मा वेदाधिपतिः पद्महस्तः गायत्रीसहितः। विष्णुः त्रैलोक्याधिपतिः चक्रहस्तः लक्ष्मीसहितः।। अनन्तादयः अष्टौ कुलनागदेवताः।

उदयंस्तु महाभानुस्तेजसा चाभयङ्करः।
सहस्त्ररश्मिदीप्तश्च ह्यादित्यः प्रीयतां मम।।
द्विजराजो महापुण्यस्तारापतिर्विशेषतः।
ओषधीनां च यो राजा स सोमः प्रीयतां मम।।
येनार्जिता जगत्कीर्तिर्भूमिपुत्रेण शाश्वती।
शत्रवश्च हता येन भौमेन महितात्मना।
स प्रीयतां तु भौमोऽद्य तुष्टो भूयात्सदा मम।।
बुधो बुद्धिप्रदाता च सोमपुत्रो महाद्युतिः।
आदित्यस्य रथे तिष्ठन्स बुधः प्रीयतां मम।।

मेरुमूर्ध्नि समाकान्तो देवराजपुरोहितः।
ज्ञाता यः सर्वशास्त्राणां स गुरुः प्रीयतां मम॥
सोमतुल्या प्रभा यस्य योऽसुराणां गुरुस्तथा।
जेता च सर्वशत्रूणां स काव्यः प्रीयतां मम॥
कृष्णवर्णः कृशाङ्गश्च कृष्णाजीमूतसन्निभः।
शनैश्चरः सूर्यपुत्रः स सौरः प्रीयतां मम॥
रक्ताक्षो धूम्रवर्णाभो विजितारिमहाबलः।
अबाहुश्चान्तरिक्षस्थः स राहुः प्रीयतां मम॥
अग्निपुत्रो महातेजाः केतुस्सर्वग्रहान्तकः।
क्षोभयेद्यः प्रजास्सर्वाः स केतुः प्रीयतां मम॥
ध्रुवराजो महापुण्य उदीच्यां दिशि यः स्थितः।
ऋषीणां प्रवरः श्रेष्ठः स ध्रुवः प्रीयतां मम॥
अगस्त्यः कलशोद्भूतो दक्षिणस्यां दिशि स्थितः।
समुद्रं जीर्णवान्योऽसौ विन्ध्यारिः प्रीयतां मम॥
अधोमुखस्थितो देवः पृथिव्यां सर्वव्यापकः।
शम्भोश्च वल्लभो नित्यं स वास्तुः प्रीयतां मम॥
हेरुकादीनि चान्यानि वटुकाश्चरकादयः।
भूपातालखदिग्व्यापी क्षेत्रेशः प्रीयतां मम॥
अमरा येऽवतिष्ठन्ति प्रीयन्तां ते सदा मम॥
भद्रा भगवती कृष्णा तारा काली च पार्वती।
मङ्गला शिवरात्री च रात्र्योऽष्टौ प्रकीर्तिताः॥
वसन्तश्च तथा ग्रीष्मो वर्षाश्चैव शरत्तथा।
हेमन्तः शिशिरश्चैव प्रीयन्तां ते ममर्तवः॥
अग्न्यादित्यौ सर्वग्रहाधिपती वरुणचन्द्रमसौ नक्षत्राधिपती कुमार-भौमौ विष्णुबुधौ इन्द्राबृहस्पती सरस्वतीशुक्रौ प्रजापतिशनैश्चरौ गणपति-राहू रुद्रकेतू ब्रह्मध्रुवौ अनन्तागस्त्यौ ब्रह्मा कूर्मः ध्रुवः अनन्तः

हरिः लक्ष्मीः कमला शिख्यादयः पञ्चचत्वारिंशद्वास्तोष्पतिदेवताः।। ब्राह्मचादयः मातरः गौर्यादयः मातरः ललितादयः मातरः दुर्गाक्षेत्र-गणेश्वरदेवताः राकादेवताः त्रिकादेवताः सिनीवालीदेवताः वारुणी-देवताः बार्हस्पत्यदेवताः। ॐ भूर्देवताः ॐ भुवर्देवताः ॐ स्वर्देवताः ॐ भूर्भुवः स्वर्देवताः अखण्डब्रह्माण्ड (याग) देवताः धूः उपधूः महागायत्री सावित्री सरस्वती हेरुकादयो वटुकादयः। चत्वारो वेदाः साङ्गाः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सानुचराः यवतिलतण्डुलहोमेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।।

अथ विष्णुपञ्चकम्।

पुरुषसूक्तम् १।

ॐनमो नारायणाय।

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसन्नि-विष्टः। केयूरवान् कनककुण्डलवान्किरीटी हारी हिरण्यमयवपु र्धृतशङ्खचक्रः।। १।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।। २।।

आनुष्टुभस्य सूक्तस्य त्रिष्टुबन्तस्य देवता।
विश्वात्मा पुरुषः साक्षादृषिर्नारायणः स्मृतः।। १।।

"पुरुषमेधः पुरुषस्य नारायण- स्याऽऽर्षम्"।।

ॐसहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यऽतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।। १।।

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उताऽमृतत्वस्येशानो यदऽन्नेनाऽतिरोहति।। २।।
एतावानऽस्य महिमाऽतोज्यायांश्च पुरुषः।
पादोऽस्या विश्वा भूतानि त्रिपादऽस्याऽमृतं दिवि।। ३।।
त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाऽभवत्पुनः।
ततो विष्वङ्- व्यक्रामत्साशनानशने अभि।। ४।।
तस्माद्विराडऽजायत विराजो अधि पुरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमऽथो पुरः।। ५।।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमऽतन्वत।
वसन्तो अस्याऽसीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।। ६।।
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमऽग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।। ७।।
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्ताँश्चके वायव्यानाऽऽरण्यान्ग्राम्याँश्च ये।। ८।।
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।। ९।।
तस्मादऽश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजाऽवयः।। १०।।
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमऽस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते।। ११।।
ब्राह्मणोऽस्य मुखमाऽऽसीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।। १२।।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत।।१३।।
नाभ्या आसीदऽन्तरिक्षं शिर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँनऽकल्पयत्॥ १४॥
सप्ताऽस्याऽसन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्॥ १५॥
"ते०" यज्ञेन यज्ञमऽयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ १६॥

अथ बृहत्पुरुषसूक्तम् २।

सहस्त्रशीर्षं दिव्यं तु विश्वाद्यं विश्वसम्भवम्।
विश्वं नारायणं देवमऽक्षरं परमं पदम्॥ १॥

"पुरुषमेधः पुरुषस्य नारायणस्य"

ॐसहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिं सर्वतः वृत्वाऽत्यऽतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥ १॥
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उताऽमृतत्वस्येशानो यदऽन्नेनाऽतिरोहति॥ २॥
एतावानऽस्य महिमाऽतो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादऽस्याऽमृतं दिवि॥ ३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाऽभवत्पुनः।
ततो भूमिं व्यक्रामत्साशनाऽनशने अभि॥ ४॥
ततो विराडऽजायत विराजो अधिपुरुषः।
स जातो अतिरिच्यत पश्चाद्भूमिमऽथो पुरः॥ ५॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्याऽसीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ ६॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमऽग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥ ७॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रिरे वायव्यानाऽऽरण्यान्ग्राम्याँश्च ये॥ ८॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।९।।
तस्मादश्वा अजायन्त ये च के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।। १०।।
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधैनमऽकल्पयत्।
मुखं किमऽस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते।। ११।।
ब्राह्मणोऽस्य मुखमाऽऽसीद्बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदऽस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।। १२।।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽधिसूर्यः।
नसो वायुश्च प्राणश्च मुखादऽग्निरऽजायत।। १३।।
नाभ्या आसीदऽन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।। १४।।
सप्ताऽस्याऽसन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्।। १५।।
वेदाऽहमेतं पुरुषं महान्तमाऽदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
सर्वाणि रूपाणि विभज्य धीरो नामानि कृत्वाऽभिवदन्यदाऽस्ते।।१६।।
धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार शक्रः प्रविद्वान्प्रदिशश्चतस्त्रः।
तमेव विदित्वाऽमृतत्वमेति नाऽन्यः पन्था अयनाय विद्यते।। १७।।
यज्ञेन यज्ञमऽयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। १८।।
"ते०" अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्या रसाद्विश्वकर्मणः समवर्तताऽधि।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवमाऽजानमऽग्रे।। १९।।

"इति पूर्वनारायणम्। अथोत्तरनारायणम्"

ॐप्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा विजायते।
तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिंस्तिष्ठन्ति भुवनानि विश्वाः।। १।।
वेदाऽहमेतं पुरुषं महान्तमाऽदित्यवर्णं तमसस्तु पारे।
तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नाऽन्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।। २।।

यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मणे।। ३।।
रुचं ब्राह्मचं जनयन्तो देवा अग्रे यदऽब्रवन्।
यस्त्वेवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा आसन्वशे।। ४।।
श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या अहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमऽश्विनो व्यात्तम्।
इष्णाम्म इषाणाऽमुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।। ५।।
तदेवाऽग्निस्तद्वायुस्तत्सूर्यस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म तदापस्तत्प्रजापतिः।। ६।।
सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादऽधि।
कलाः काष्ठा मुहूर्ताश्चाऽहोरात्राणि सर्वशः।। ७।।
अर्धमासा मासा ऋतवः परिवत्सराः।
स आपः स दुघे उभे इमे अन्तरिक्षमऽथो स्वः।। ८।।
नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्चं न मध्ये परिजग्रभ।
न तस्येशे कश्चन यस्य नाम महद्यशः।। ९।।
न सन्दृशे तिष्ठति रूपमऽस्य, न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम्।
हृदा मनीषा मनसाऽभिगुप्तो य एतद्विदुरऽमृतास्ते भवन्ति।। १०।।
ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्रिरऽजायत ततः समुद्रो अर्णवः।। ११।।
समुद्रादऽर्णवादऽधि संवत्सरो अजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी।। १२।।
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमऽकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमऽथो स्वः।। १३।।
"ते०" अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्या रसाद्विश्वकर्मणः समवर्तताऽधि।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवमाऽजानमऽग्रे।।१४।।

"सरिताङ्काश्यपीनां सरितो यज्ञकीर्तिमिच्छमानानाम्"

ॐहिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। १।।
यः प्राणतो निमिषितश्च राजा पतिर्विश्वस्य जगतो बभूव।
ईशेयो अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। २।।
य ओजोदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य च्छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ३।।
येन द्यौरुग्रा पृथिवी दृढा येन सुस्तम्भितं येन नाकम्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ४।।
य इमे द्यावापृथिवी तस्तभाने आधारयद्रोधसी रेजमाने।
यस्मिन्नधि विततः सूर एति कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ५।।
यस्येमे विश्वे गिरयो महित्वा समुद्रं यस्य रसया सहाऽहुः।
दिशो यस्य प्रदिशः पञ्चदेवी कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ६।।
आपो ह यन्महतीर्विश्वमायुर्गर्भं दधाना जनयन्तीरऽग्निम्।
ततो देवानां निरवर्तताऽसुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। ७।।
"ते०" आ नः प्रजाञ्जनयतु प्रजापतिर्धाता दधातु सुमनस्यमानः।
संवत्सर ऋतुभिश्चाक्लृपानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु।। ८।।
"आगस्त्यस्यच" वेनस्तत्पश्यद्भुवनस्य विद्वान्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।
यस्मिन्निदं सञ्च विचैति सर्वं स ओतःप्रोतश्च विभुः प्रजासु।। १।।
प्रतद्वोचेदऽमृतन्नु विद्वान्गन्धर्वो नाम निहितङ्गुहासत्।
त्रीणि पदानि निहिता गुहासु यस्तानि वेद स पितुष्पिताऽसत्।। २।।
सतो बन्धुर्जनिता संविधाता नामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमाऽनशानास्तृतीये धामन्नऽभ्यैरयन्त।। ३।।
परीत्य भूतानि परीत्य लोकान्परीत्य सर्वान्प्रदिशो दिशश्च।
प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्यात्मनात्मानमुप संविवेश।। ४।।
परिद्यावापृथिवी विततेसद्य इत्वा परिलोकान्परिदिशः परिस्वः।
ऋतस्य तन्तुं विततं विधृत्य तदपश्यत्तदभवत्तदासीत्।। ५।।
सदसस्पतिमऽद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। संनिमेधामयासिषम्।। ६।।

"ते०" यस्मादऽन्यो न परोऽस्ति जातो य आविवेश भुवनानि विश्वा।
प्रजापतिः प्रजया संविदानस्त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी॥ ७॥

अथ लक्ष्मीसूक्तम् ३।

ॐपद्मद्वयवराभीष्टयुक्तपाणिचतुष्टयाम्।
पद्मवर्णां भजे पद्मशायिनीं पद्मवासिनीम्॥ १॥
पुस्तकाक्षाभयाब्जाढ्यां सितवर्णां त्रिलोचनाम्।
महापद्मनिषण्णां तां लक्ष्मीं गजगतां नमः॥ २॥
करयुगलगृहीतं पूर्णकुम्भं दधानां
क्वचिदऽमलगजस्थां शङ्खचक्राब्जपाणिम्।
क्वचिदऽपि दयिताङ्गे चामरव्यग्रहस्तां
क्वचिदपि सृणिपाशौ बिभ्रतीं नौमि लक्ष्मीम्॥ ३॥
"हिरण्यवर्णामिकोनाश्रीर्भार्गव्या श्रीरऽलक्ष्मीघ्नं श्रैय्यमानुष्टुभे वैशक्कर्यन्तं हि साग्रेयी चतुर्थी प्रस्तारपंक्तिस्त्रिष्टुभौ पञ्चदश्युपरिष्टाद्बृहती श्रीपुत्राः परेषट्"॥
ॐहिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जादवेदो ममाऽवह॥ १॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामऽश्वं पुरुषानऽहम्॥ २॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ ३॥
कांस्यस्मितां हिरण्यप्राकारामाऽर्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ ४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि॥ ५॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मय्यऽन्तरायांश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ ६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिं वृद्धिं दधातु मे।। ७।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामऽलक्ष्मीं नाशयाम्यऽहम्।
अभूतिमऽसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।। ८।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टाङ्करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।। ९।।
मनसा काममाकूतिं वाचः सत्यमऽशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।। १०।।
कर्दमेन प्रजा भूत्वा मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।। ११।।
आपः स्त्रवन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।। १२।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टां पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममाऽवह।। १३।।
आर्द्रां पुष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह।। १४।।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमऽनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्यो विन्देयं पुरुषानऽहम्।। १५।।
य आनन्दं समाविशदुपधावन्विभावसुम्।
श्रियः सर्वा उपासिष्व चिक्लीत वस मे गृहे।। १६।।
कर्दमेन प्रजाः सृष्टा सम्भूतिङ्गमयामसि।
अदधादुपगादेषाङ्कामान्संसृज्महे।। १७।।
जातवेदः पुनीहि मां रायस्पोषञ्च धारय।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वंहसः।। १८।।
"ते०" अच्छान्नमित्रमहो देवो देवानग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः।
वीहि स्वस्ति सुक्षितिं दिवो नृन्द्विषो अहांसि दुरिता तरेम तातरेम तवावसा तरेम।। १९।।

अथ आयुष्यसूक्तम् ४।

आयुष्यं दश दाक्षायणायैकर्चाः सनकः सनन्दनः सनातनः सहसंज्ञः समः सुश्रीः सुवाक्सर्वो हिरण्यात्मस्तुतिः पञ्चम्यष्टमी नवम्यस्त्रिष्टुभः सप्तमी शक्करी आद्या चतुर्थी च।। ॐ आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोष-मौद्भिदम्। इदं हिरण्यं वर्चस्व जैत्रायाविशतादिमाम्।। १।।

उच्चैर्वाजी पूतनाषाट् सभासाहं धनञ्जयम्।
सर्वाः समग्रा ऋद्धयो हिरण्ये- ऽस्मिन्समाहिताः।। २।।

शुन महां हिरण्यस्वपितुर्नामेव जग्रभ।
तेनेमां सूर्यत्वचमऽकरं पुरुषप्रियम्।। ३।।

सम्राजञ्च विराजञ्चाभिष्टिर्यां च मे ध्रुवा।
लक्ष्मी राष्ट्रस्य या मुखे तथा मामिन्द्र संसृज।। ४।।

अग्नेः प्रजातं परि यद्धिरण्यमऽमृतं जज्ञे अधि मर्त्येषु।
य एनद्वेद स इदेन गर्हति जरा मृत्युर्भवति यो बिभर्ति।। ५।।

यद्वेद राजा वरुणो यदु देवी सरस्वती।
इन्द्रो यद्वृत्रहा वेद तन्मे वर्चस्व आयुषे।। ६।।

न तद्रक्षांसि न पिशाचाश्चरन्ति देवानामोजः प्रथमजं ह्येतत्।
यो बिभर्ति दाक्षायणा हिरण्यं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः,
स मानुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।। ७।।

यदाऽबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आबध्नामि शतशारदायाऽयुष्माञ्जरदष्टिर्यथा सत्।। ८।।

(स्मरण रहे—नअरिवन कलाई पर बांधने का मन्त्र भी यही है)

घृतादुल्लुप्तं मधुमत्सुपर्णन्धनञ्जयन्धरणन्धारयिष्णु।
मृणन्सपत्नानऽधरांश्च कृण्वदारोह मां महते सौभगाय।। ९।।

"ते०" प्रिय मां कुरु देवेषु प्रियं राजसु मां कुरु।
प्रियं विश्वेषु गोप्त्रेषु मयि देहि रुचा रुचाम्।। १०।।

अथ महालक्ष्मीसूक्तम् ५।

पीयूषामृतकल्लोलसुधास्वादसुलोलपाम्।
आनन्दवदनां देवीं सिद्धलक्ष्मीं नमाम्यहम्।

"अग्निवारुणीति वैकुण्ठस्य ब्रह्मणः। यजुः"

ॐअग्निवारुणीमानुड्वाहीमालभेतऽनाज्ञात यक्ष्मो गृहीत नाज्ञात यक्ष्मो वा, एतां वित्तो या स्त्रीसत्यानड्वाही तस्मादेनामऽनज्ञात यक्ष्म गृहीत आलभेताग्निः सर्वा देवता यदेवास्य देवताभिर्निषितं, तदग्निना मुञ्चति यद्वारुणगृहीतं तद्वरुणेन यद्वहिनी तेनाग्नीयी यत्स्त्रीसती दान्ता, तेन वरुणी तस्मादऽग्निवारुणी भवति, त्वाष्टमांसे पदमालभेत पशुकामो मिथुनो वा एष योऽसेपात्वष्टा, मिथुनस्य प्रजनयिता तमेव भागधेयेनोपधावति, सोऽस्मा एतस्मान्मिथुनात्पशून्प्रजनयति, वरुणँ श्यामशितिकण्ठमालभेत, यं व्योमानं यक्ष्मो गृह्णीयाद्वारुणो वा एतं गृह्णाति, यं व्योमानं यक्ष्मो गृह्णाति, यत् वारुणो वरुणात् एव एनं मुञ्चति, पाप्मनैष गृहीतो, य आमय्यावी श्याम इव पाप्मा यच्छयाम पाप्मानमेवापहते। यच्छितिकण्ठो वरुणपाशमेव तेन प्रमुञ्चत, आश्विनं धूम्रललाममालभेत, यो दुर्ब्राह्मणं सोमं पिपाययिषेदऽश्विनो वै देवानामऽसोमपा आस्तां तौ पच्चा सोमपीथं प्राप्नुतामऽश्विना एतस्य देवता, यः पच्चा सोमपस्ता एव भागधेयेनोपधावति, ता एनँ सोमपीथाय परिणयतः स्तायदिव यजेतस्तावदिव हि दुर्ब्राह्मणो ब्राह्मणो बभूषति धूम्र इव वा, एष यो दुर्ब्राह्मणो यद्धूम्रो धूम्रिमाण-मेवापहते। यल्ललामो मुखत एव तेन तेजो धत्ते सारस्वतीन्धेनुष्ट-रीमाऽलभेत यं भ्रातृव्यानीव श्वासयेरन्वाचा वा एत एनं निःश्वासयन्ति वाक्सरस्वती यत्सरस्वती वाचैवैषां वाचं प्रतिश्रीणाति। धेनुर्वा एषा सती न दुहे तस्माद्धेनुष्टर्युच्यते यद्धेनुष्टरी वाचमेवैर्षा स्तरीकरोति सरस्वतीं धेनुष्टरीमालभेत यमऽजघ्निवांसमऽभिशंसेयुरऽशान्ता वा एतं वा गृच्छति, यमऽजघ्निवांसमऽभिशंसन्ति वाक्सरस्वती यत्सरस्वती वाचैवैषांवाचं शमयति। ॐधेनुर्वा एषा सती न दुहे तस्माद्धेनुष्टर्युच्यते यद्धेनुष्टरी वाचमेवैषां स्तरीकरोति, सावित्रं पुनरुत्सिष्टमालभेत, यः पुरा पुण्यो भूत्वा पच्चा पापीयान् स्यात् ययावा एष देवतया पुरा

पुण्यो भवति, साहि वा एतमऽनुसृजत्यऽथैष पापीयान्भवति सविता श्रियः प्रसविता तमेव भागधेयेनोपधावति स एनं पुनः श्रिये प्रसुवति, पापो वा एष पुरा भूत्वा पश्चाच्छ्रियमाप्नोति "ते०" योऽनुड्वान्भूत्वोक्षा भवति यथैव स श्रियं प्राप्नोत्येवमेवैनं श्रियं प्रापयति॥

ॐमातर्नसामि कमले कमलायताक्षि !
श्रीविष्णुहृत्कमलावासिनि विश्वमातः।
क्षीरोदजे कमलकोमलगर्भगौरि।
लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये॥

ॐरथे अक्षेषु वृषभस्य वाजे वाते पर्जन्ये वरुणस्य शुष्मे।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सेयमऽगाद्वर्चसा संविदाना॥ १॥
या हस्तिनि द्विपिनी या हिरण्ये गोष्वऽश्वेषु पुरुषेष्वन्तः।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सेयमऽगाद्वर्चसा संविदाना॥ २॥
सिंहे व्याघ्रे उत या पृदाकौ त्विषिरग्नौ ब्रह्मणे सूर्ये या।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सेयमऽगाद्वर्चसा संविदाना॥ ३॥
"ते०" या राजन्ये दुन्दुभावायतायामऽश्वस्य क्रन्दे पुरुषस्य मायौ।
इन्द्रं या देवी सुभगा जजान सेयमऽगाद्वर्चसा संविदाना॥ ४॥

मङ्गल्यमेतत्परमं पवित्रं संसारदुः खौघविनाशकारि।
सुखप्रदं धर्मविदां नराणां मनोरथावाप्तिकरं प्रदिष्टम्॥
भगवान् देवकीपुत्रः शङ्खचक्रगदाधरः लक्ष्मीकान्तो महाबाहुः प्रीयतां केशवः सदा॥ "अनेन मंत्रपाठेन (होमेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं। भगवान्वासुदेवः। सङ्कर्षणः। प्रद्युम्नः। अनिरुद्धः। सत्यपुरुषः। अच्युतः। माधवः। गोविन्दः। अविकृतः। अनन्तः। अध्यक्षः। अचलः शान्तात्मा। यमनियमाश्रयः। परमर्द्धिप्रदः। लक्ष्मीनारायणः। सर्वलोकमयः। सर्वज्ञः। सर्वेश्वरः। न्यग्रोधशायी। सर्वव्यापी। त्रिविक्रमः। अपरिमितप्रभावः निर्लेपः। परमानन्दः। विश्वेश्वरः। मङ्गल्यरूपः। सूक्ष्मः। शेषशायीलक्ष्मीसहितोनारायणः। सपरिवारः। सानुचरः। प्रीयतां प्रीतोऽस्तु॥"

॥ इति विष्णुपञ्चकं समाप्तम्॥

रुद्रपञ्चके चमकानुवाक्यम्।

ॐ नमः शिवाय वरदाय।
प्रणतोऽस्मि महादेव प्रपन्नोऽस्मि सदाशिव।
निवारय महामृत्युं मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते॥
देवं सुधाकलशसोमकरं त्रिनेत्रं
पद्मासनं च वरदाऽभयदं सुशुभ्रम्।
शङ्खाऽभयाब्जवरभूषितया च देव्या
वामेऽङ्कितं शमनभङ्गहरं नमामि॥
शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम्।
गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥ १॥
नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्।
'व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥ २॥
कमण्डल्वक्षसूत्राभ्यामन्वितं शूलपाणिकम्।
ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखमुद्योतकारिणम्॥ ३॥
अमृतेनाप्लुतं हृष्टमुमादेहार्धधारिणम्।
दिव्यसिंहासनासीनं दिव्यभोगसमन्वितम्॥ ४॥
दिग्देवतासमायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमऽव्ययम्॥ ५॥
सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्।
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक्ततो यजनमारभेत्॥ ६॥
मृत्युञ्जय महादेव पाहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं भवबन्धनात्॥ ७॥
आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर्देवैर्महर्षिभिः।
आवाहयामि भक्त्या त्वां गृहाणार्चां महेश्वर॥ ८॥

हर शम्भो महादेव विश्वेशाऽमरवल्लभ।
शिव शङ्कर सर्वान्मन् नीलकण्ठ नमोऽस्तुते।। ९।।
इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं च त्र्यम्बकम्।। १०।।
'ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं रयिपोषणम्/पुष्टिवर्धनं/रोगनाशनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। ३।।
ॐ आ त्वा वहन्तु हरयः सचेतसः, श्वेतैरश्वैरिह केतुमद्भिर्वाता जवेन बलमद्भिर्मनोजवा यातु शीघ्रं मम रुद्राय हव्यन्देवानां च ऋषीणां चासुराणां च पूर्वजं, सहस्राक्षं, विरूपाक्षं, विश्वरूपं, महादेवं शिवमाऽवाहयाम्यहम्।।
आवाहयाम्यहं देवमीश्वरं पार्वतीपतिम्।
वृषभासनमारूढं नागाभरणभूषितम्।। १।।
प्रीयतां यजमानस्य तुष्टो भूयाज्जगत्पतिः।
शुक्लवर्णो महातेजाः शुक्लस्त्रग्दामभूषितः।
बलिः पुष्पं चरुश्चैव धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। २।।
'ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयातं।। ३।।'

।। तर्पणम् ।।

ॐशतरुद्रियंदेवानां रुद्रशमनं, भवाय, शर्वीयश्च, प्रत्युत्क्रान्तानुवाकौ, देवर्षी रुद्रदैवत्यस्त्रिष्टुप्च्छन्दश्चयने विनियोगः। नमस्ते देवा रौद्र-मानुष्टभमाद्या गायत्री, पञ्चमषष्ठ्यौ पांक्त्यान्ता महापांक्तिर्मा भैरेकपदा जगत्यनुष्टुप् त्रिष्टुप् महाबृहती यवमध्या रुद्रो देवता चरमेष्टिका, अस्य रुद्रस्य प्रश्नस्य अनुष्टुप्च्छन्दः अघोर ऋषिः सङ्कर्षणमूर्तिः सुरूपो योऽसावादित्यः परः पुरुषः सएव देवता, अग्निः क्रतुचरुमाया-मिष्टिकायां शतरुद्रे विनियोगः। सकलस्य रुद्राध्यायस्य श्रीमहारुद्रो देवता एका गायत्री छन्दस्तिस्त्रोऽनुष्टुभस्तिस्त्रः पङ्क्तयः, सप्ताऽनुष्टुभो,

द्वे जगत्यौ, परमेष्ठी ऋषिः, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपाप-निवारणार्थ सद्गुरु प्रसाद प्राप्त्यर्थे चमानुवाक सहितरुद्रमन्त्रपाठे/होमे/स्नाने/पुष्पार्चने वा विनियोगः।।

ॐ कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि।।
गात्रं भस्मसितं सितं च हसितं हस्ते कपालं सितं
खट्वाङ्गं च सितं सितं च वृषभं कर्णे सिते कुण्डले।
गङ्गाफेनसितो जटाजलसितश्चन्द्रः सितो मूर्धनि
सोऽयं सर्वसितो दधातु विभवं पापक्षयं शङ्करः।।

"आशुः शिशान इति शुक्रज्योतिष्मानंशुः प्रजननं सर्वाः प्रजाः कश्यपा इति कश्यपस्य वाजस्य प्रसवोऽग्ने"।।

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न युध्मो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः, शतं सेना अजयत्साकमिन्द्रः।। १।।
संक्रन्दनेनाऽनिमिषेण जिष्णुना, युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं, युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा।। २।।
स इषुहस्तैः स निषिङ्गिभिर्वशी संसृष्टा सयुध इन्द्रो गणेन।
संसृष्टजित्सोमपा बाहु, शर्ध्यूर्ध्वधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता।। ३।।
बृहस्पते परिधीया रथेन रक्षोहा मित्राँ अपबाधमानः।
प्रभञ्जन्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नऽस्माकमेध्यविता रथानाम्।। ४।।
बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमान उग्रः।
अभिवीरो अभिषत्वा सहोजिज्जैत्रायनो रथमाऽतिष्ठ गोवित्।। ५।।
गोत्रभिदङ्गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमऽज्मा प्रमृणन्तमोजसा।
इमं स जाता अनुवीरयध्वमिन्द्रसखायमऽनुसं व्ययध्वम्।। ६।।
अभिगोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः।
दुश्च्यवनः पृतनाषाडऽयुध्योऽस्माकं सेना अवन्तु प्रयत्सु।। ७।।
इन्द्र एषां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणो यज्ञः पुर एतु सोमः।

देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मारुतोयन्तु मध्ये॥ ८॥
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञः आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम्।
महामनसां भुवनस्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्॥ ९॥
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वऽस्माकं या इषवस्ता जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वऽस्मान्नु देवा अवता भरेष्वा॥ १०॥
आग्नेयकोण में "होम पर खड़ा होके लगातार घी की आहुति देना"॥
ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्च सत्यश्चर्त-पाश्चात्यँहा, ईदृङ्, चान्यादृङ्च, सदृङ्च, प्रतिसदृङ्च, मितश्च, संमितश्च, सभारा, ऋतश्च, सत्यश्च, ध्रुवश्च, धरणश्च, धर्ता च, विधर्ता च, विधारय, ऋतजिच्च, सत्यजिच्च, सेनाजिच्च, सुषेणश्चान्तिमित्रश्च, दूरे अमित्रश्च, गण ईदृक्षास, एतादृक्षास ऊषुणः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास एतान मितासश्च संमितासो नो अद्य सभारसो मरुतो यज्ञे, अस्मिन्निन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनु वर्त्मानो यथेन्द्रन्दैवीर्विशो मरुतोऽनु वर्त्मानोऽ-भवन्नंवमिमं यजमानं दैवीश्च विशो मानुषीश्चानु वर्त्मानो भवन्तु॥
ॐ नमः शिवाय वरदाय ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवे।
बाहुभ्यामुत ते नम उत त इषवे नमः॥ १॥
या ते रुद्र शिवा तनूरऽघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताऽभिचाकशीहि॥ २॥
यामिषुङ्गिरिशन्त ! हस्ते बिभर्ष्यऽस्तवे।
शिवां गिरित्र ताङ्कुरुः माहिंसीः पुरुषं जगत्॥ ३॥
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदऽयक्ष्मं सुमना असत्॥ ४॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भय सर्वांश्च यातुधान्योऽधराचीः परात्सुवः॥ ५॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ये चेमे।
रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्राक्षो वैषां हेड ईमहे॥ ६॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्यन्नुतैनमुदहार्यः उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः।
नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे॥ ८॥
अथो य अस्य सत्त्वानोऽहन्तेभ्योऽकरं नमः।
प्रमुञ्च धन्वनस्तमुभयो रात्र्योर्ज्याम्॥ ९॥
याश्च ते हस्त इषवः परास्ता भगवो वप।
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवानुत॥ १०॥
अनेशन्नस्येषव आभूरस्य निषङ्गथिः।
या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः॥ ११॥
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मेण परिभुज।
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः॥ १२॥
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधीहि तम्।
नमांसि त आयुधायाऽनातताय धृष्णवे॥ १३॥
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।
अवतत्य धनुष्ट्वं सहस्राक्ष शतेषुधे॥ १४॥
निशीर्य शल्यानां मुखं शिवो नः सुमना भव।
यात इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः।
शिवा शरव्या या तव तया नो मृड जीवसे॥ १५॥
मानो महान्तुमुत मानो अर्भकं मान उक्षन्तमुत मान उक्षितम्।
मानो वधीः पितरं मोत मातरं मानः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ १॥
मानस्तोके तनये मान आयौ मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः।
वीरान्मानो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ २॥
नमस्ते अस्तु भगवः, परमेश्वर, विश्वेश्वर, महादेव, शिव, सशिव, सदाशिव, त्रिकालकाल, कालाग्निरुद्र, नीलकण्ठ, अमृतेश्वरभैरव,

बहुरूप, अघोर, तत्पुरुष, महामृत्युञ्जय भट्टारक ते नमो नमः।।
(प्रत्येक स्थान पर अग्ना विष्णू मन्त्र के उच्चारण करते समय आहुति के स्थान पर फूल केवल डालना।)

अग्नाविष्णू सजोषसे इमा वर्धन्तुवां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।

वाजश्चमे, प्रसवश्चमे, प्रयतिश्चमे, प्रसृतिश्चमे धीतिश्चमे, क्रतुश्चमे, स्वरश्चमे, श्लोकश्चमे, श्रावश्चमे, श्रुतिश्चमे, ज्योतिश्चमे, स्वश्चमे, प्राणश्चमे, व्यानश्चमे, अपानश्चमे, असुश्चमे, चित्तं च म, आधीतं च मे, वाक्चमे, मनश्चमे, चक्षुश्चमे, श्रोत्रंचमे, दक्षश्चमे, बलंचम, ओजश्चमे, सहश्चम, आत्माचमे, तनूश्चमे, शर्मचमे, वर्मचमे, अङ्गानि चमे, अस्थीनी चमे, परूंषि चमे, शरीराणिचम, आयुश्चमे, जराचमे।। यज्ञेन कल्पताम्।।

ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो।
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो।।
नमः शिष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमो।
नमो बभ्लुषाय व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमो।।
नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमो।
नमो भवस्य हेत्यै जगतस्पतये नमो।।
नमो रुद्रायाऽततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमो।
नमः सूतायाऽहन्त्याय वनानांपतये नमो।।
नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो।
नमो मन्त्रिणे वाणिज्याय कक्ष्याणां पतये नमो।।
नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमः।
नम आक्रन्दाय त उच्चैर्घोषाय सत्त्वानां पतये नमो।
नमः कृत्संवीताय धावत्ते पत्तीनां पतये नमः।।

अग्नाविष्णू सजोषमा इमा वर्धन्तु वां गिरः। द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।

ॐ ज्येष्ठ्यं चम, आधिपत्यं चमे, मन्युश्चमे, भामश्चमे, अमश्चमे, अम्भश्चमे, जेमाचमे, महिमा चमे, वरिमाचमे, प्रथिमाचमे, वर्ष्मा चमे, द्राघ्वाचमे, वृद्धंचमे, वृद्धिश्चमे, सत्यंचमे, श्रद्धाचमे, जगत्चमे, धनंचमे, क्रीडाचमे, मोदश्चमे, वशश्चमे, त्विषिश्चमे, सूक्तंचमे, सुकृतंचमे, जातंचमे, जनिष्यमाणं चमे, वित्तंचमे, वेद्यंचमे, भूतंचमे, भविष्यं चमे, सुगंचमे, सुपथं चमे, ऋद्धंचम, ऋद्धिश्चमे, क्लृप्तं चमे, क्लृप्तिश्चमे, मतिश्चमे, सुमतिश्चमे।

यज्ञेन कल्पताम्।।

नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनानां पतये नमो।
नमो निषिङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो।। १।।
नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो।
नमो निचराय परिचरायाऽरण्यानां पतये नमो।। २।।
नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो।
नमः सृकायिभ्यो जिघांसद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो।। ३।।
नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यः प्रकृन्तानां पतये नमो।
नम उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो।। ४।।
नम इषुकृद्भ्यो धन्वकृद्भ्यश्चवो नमो।
नम इषुमद्भ्यो धन्वायिद्भ्यश्च वो नमो।। ५।।
नम आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो।
नम आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमो।। ६।।
नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो।
नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो।। ७।।
नमः शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो।
नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमो।। ८।।

नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमो।
नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो।। ९।।

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजैभिरावृतम्।।

ॐ शञ्चमे, मयश्चमे, प्रियश्चमे, अनुकामश्चमे, कामश्चमे, सौमनसश्चमे, भगश्चमे, द्रविणं चमे, भद्रंचमे, श्रेयश्चमे, वश्यश्चमे, यशश्चमे, यन्ताचमे, धर्ताचमे, क्षेमचमे, धृतिश्चमे, संवित्चमे, ज्ञातंचमे, विश्वञ्चमे, महश्चमे, सूश्चमे, प्रसूश्चमे, सीरंचमे, लयश्चम, ऋतञ्चमे, अमृतंचमे, अयक्ष्मंचमे, अनामयंचमे, जीवातुश्चमे, दीर्घायुत्वंचमे, अनमित्रं चमे, अभयञ्चमे, सुगंचमे, शयनंचमे, सूषाचमे, सुदिनं चमे।। यज्ञेन कल्पताम्।।

नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यद्भ्यश्च वो नमो।
नम उगणाभ्यस्तृंहतीभ्यश्च वो नमो।। १।।

नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो।
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो।। २।।

नमः कृच्छ्रेभ्यः कृच्छ्रपतिभ्यश्च वो नमो।
नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो।। ३।।

नमः सेनाभ्यः सेनानीभ्यश्च वो नमो।
नमो रथेभ्यो वरूथिभ्यश्च वो नमो।। ४।।

नमो महद्भ्योऽर्भकेभ्यश्च वो नमो।
नमो युवभ्य आशिनेभ्यश्च वो नमो।। ५।।

नमः क्षुत्तृद्भ्यः संगृहीतृभ्यश्च वो नमो।
नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो।। ६।।

नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमो।
नमः पुञ्जिष्ठेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमो।। ७।।

नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमो।
नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः।। ८।।

अग्नाविष्णू सजोषस इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।
ऊर्क्चमे, सूनृताचमे, पयश्चमे, रसश्चमे, घृतं च मे, मधुचमे, सग्धिश्चमे, सपीतिश्चमे, कृषिश्चमे, वृष्टिश्चमे, जैत्रंचम, औद्भिदंचमे, रयिश्चमे, रायश्चमे, पुष्टंचमे, पुष्टिश्चमे, विभुश्चमे, प्रभुश्चमे, पूर्णं चमे, पूर्णतरं चमे, कुयवं चमे, क्षितिं चमे, अन्नं चम, इक्षुश्चमे, व्रीहयश्चमे, यवाश्चमे, माषाश्चमे, तिलाश्चमे, नीवाराश्चमे, श्यामकाश्चमे, अणवश्चमे, प्रियङ्गवश्चमे, गोधूमाश्चमे, मसूराश्चमे, मुद्गाश्चमे, खल्वाश्चमे।। यज्ञेन कल्पताम्।।

नमो भवाय च रुद्राय च, नमः शर्वाय च पशुपतये च।
नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।। १।।

नमो व्युप्तकेशाय च कपर्दिने च।
नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च।। २।।

नमो गिरिशाय च शिपिविष्टाय च।
नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च।। ३।।

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च।
नमो बृहते च वर्षीयसे च।। ४।।

नमो वृद्धाय च संवृध्वने च।
नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च।। ५।।

नमो आशवे चाऽजिराय च।
नमः शीभाय च शीघ्राय च।। ६।।

नम ऊर्म्याय चाऽवस्वन्याय च।
नमो नाद्याय च द्वीप्याय च।। ७।।

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्यूम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।
अश्मा च मे, मृत्तिका च मे, गिरयश्चमे, पर्वताश्चमे, सिकताश्चमे, वनस्पतयश्चमे, हिरण्यञ्चमे, अयश्चमे, सीसञ्चमे, त्रपुश्चमे, श्यामंचमे, लोहितायसंचमे, अग्निश्चम, आपश्चमे, वीरुधश्चम, ओषधयश्चमे,

कृष्टपच्यञ्चमे, अकृष्टपच्यञ्चमे, ग्राम्याश्चमे, पशवः आरण्याश्चमे, वित्तंचमे, वित्तिश्चमे, भूतंचमे, भूतिश्चमे, वसुचमे, वसतिश्चमे, कर्मचमे, शक्तिश्चमे, अर्थश्चम, एमश्चम, इत्याचमे, गतिश्चमे।। यज्ञेन कल्पताम्।।

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च।
नमः पूर्वजाय चापरजाय च।। १।।
नमो मध्यमाय चाऽप्रगल्भाय च।
नमो बुध्न्याय च जघन्याय च।। २।।
नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च।
नमः आशुषेणाय चाशुरथाय च।। ३।।
नमो बिल्मिने च कवचिने च।
नमो वर्मिणे च वरूथिने च।। ४।।
नमः शूराय चावभेदिने च।
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च।। ५।।
नमो याम्याय च क्षेम्याय च।
नम उर्वर्याय च खल्याय च।। ६।।
नमः श्लोक्याय चावसान्याय च।
नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च।
नमो वन्याय च कक्ष्याय च।। ७।।

अग्निविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।

अग्निश्चम इन्द्रश्चमे, सोमश्चम इन्द्रश्चमे, सविताचम, इन्द्रश्चमे, सरस्वती चम, इन्द्रश्चमे, पूषा चम, इन्द्रश्चमे, बृहस्पतिश्चम, इन्द्रश्चमे, मित्रश्चम, इन्द्रश्चमे, वरुणश्चम, इन्द्रश्चमे, धाताचम, इन्द्रश्चमे, त्वष्टाचम, इन्द्रश्चमे, मरुतश्चम, इन्द्रश्चमे, विश्वेदेवाश्चम, इन्द्रश्चमे, पृथिवीचम, इन्द्रश्चमे, अन्तरिक्षं चम, इन्द्रश्चम, द्यौश्चम, इन्द्रश्चमे, समाश्चम, इन्द्रश्चमे, नक्षत्राणि चम, इन्द्रश्चमे, दिशश्चम, इन्द्रश्चमे।। यज्ञेन कल्पताम्।।

नमो दुन्दुभ्यायचाहनन्याय च।
नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च।।
नमो निषिङ्गिणे चेषुधिमते च।
नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च, नमः सायुधायच सुधन्वनेच।।
नमः सृत्याय च पथ्याय च।
नमः काट्याय न नीप्याय च।।
नमो नाद्याय च वैशन्ताय च।
नमः कुल्याय च सरस्याय च।।
नमः कूट्याय चावट्याय च।
नमो वर्ष्याय चाऽवर्ष्याय च।।
नमो मेध्याय च विद्युत्याय च।
नमो वीध्र्याय चातप्याय च।।
नमो वात्याय च रेष्म्याय च।
नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च।।
अग्नाविष्णू सजोषमा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।
अंशुश्चमे, रश्मिश्चमे, अदाभ्यश्चमे, अधिपतिश्चम, उपांशुश्चमे, अन्तर्यामश्चम, ऐन्द्रावायवश्चम, मैत्रावरुणश्चम, आश्विनश्चमे, प्रतिप्रस्थानश्चमे, शुक्रश्चमे, मन्थीचम, आग्रायणश्चमे, क्षुल्लकवैश्व-देवश्चमे, ध्रुवश्चमे, वैश्वानरश्चम, ऐन्द्राग्नश्चमे, वैश्वदेवश्चमे, मरुत्वती-यश्चमे, महेन्द्रीयश्चमे, सावित्रश्चमे, सारस्वतश्चमे, पत्नीवतश्चमे, हारियोजनश्चमे।। यज्ञेन कल्पताम्।।
नमः सोमाय च रुद्राय च।
नमस्ताम्राय चारुणाय च।।
नमः शङ्गवे च पशुपतये च।
नम उग्राय च भीमाय च।।

नमो हन्त्रे च हनीयसे च।
नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च।।
नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो।
नमस्ताराय।
नमः शम्भवे च मयोभवे च।
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च।।
नमः शिवाय च शिवतराय च।
नमः किंशल्याय च क्षयणाय च।।
अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।
इध्माचमे, स्त्रुचश्चमे, चमसश्चमे वायव्यानि, च मे, द्रोणकलशश्चमे, पूतभृच्चमे, अपूतभृच्चमे, ग्रावाणश्चमे, अधिषवणश्चमे, अवभृथश्चमे, स्वगाकारश्चमे।। यज्ञेन कल्पताम्।।
नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च।
नमः पुलस्तिने च कपर्दिने च।।
नमो गोष्ठ्याय च गृह्याय च।
नमस्तल्प्याय च गेह्याय च।
नमः पर्यायचावार्याय च।
नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च।।
नमस्तीर्थ्याय च कुल्याय च।
नमः फेन्याय च शिष्प्याय च।।
नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च।
नमो ह्रदव्याय च निवेष्प्याय च।।
नमः काट्याय च गह्वरेष्ठ्याय च।
नमः शुष्व्याय च हरित्याय च।।
नमो लोप्याय चोलप्याय च।

नमः पांसव्याय च रजस्याय च।।

नमः सूर्म्याय चोर्म्याय च।

नमः पर्ण्याय च पर्णशादाय च।।

नम आखिदते च प्रखिदते च।

नमोऽभिघ्नते चापगुरमानाय च।।

नमः आखिदाय च विखिदाय च।

नमो वः किरिकेभ्यो, देवानां हृदयेभ्यो।।

नमो विचिनुत्केभ्यो, नमो विक्षीणकेभ्यो, नम आनिर्हतेभ्यः।।

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।

अग्निश्चमे, घर्मश्चमे, अर्कश्चमे, सूर्यश्चमे, प्राणश्चमे, अश्वमेधश्चमे, पृथिवीचमे, दितिश्चमे अदितिश्चमे, द्यौश्चमे, शक्करीरङ्गुलयो दिशश्चमे, यज्ञेन कल्पतां, व्रतं चर्तुश्च संवत्सरश्च तपश्चाहोरात्रे, ऊर्वष्टीवे बृहद्रथन्तरश्चमे।। यज्ञेन कल्पताम्।।

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीलालोहित, आसां प्रजानामेषां पुरुषाणामेषां पशूनां माभैर्मा रुङ्मा नः किञ्चनाऽममत्, इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीरायप्रभरामहे मतीः।

यथा नः शमऽसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्। या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहभेषजीः, शिवारुद्रस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे। परिणो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्मतेरघायोः, अवस्थिरा मघवद्भ्यस्तनुषु मीढुस्तोकाय तनयाय मृड। मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव, परमेवृक्ष आयुधन्निधाय कृत्तिं वसान उच्चर पिनाकम्। बिभ्रदुच्चर विकिरिढ विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः, यास्ते सहस्त्रं हेतयोऽन्येऽस्मन्निव पान्तु ताः।।

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।।

गर्भाचमे, वत्साचमे, त्रयविच्चमे, त्रयवी चमे, दित्यवाट् चमे, दित्यौहीचमे, पञ्चाविच्चमे, पञ्चावीचमे, त्रिवत्साश्चमे, त्रिवत्सचमे,

तुर्यवाट्चमे, तुर्यौहीचमे, पष्टवाट्चमे, पष्टौहीचम, उक्षाचमे, वशाचमे, अनड्वांश्चमे, धेनुश्चम, ऋषभश्चमे, वेहश्चमे।। यज्ञेन कल्पताम्।।

सहस्त्रधा सहस्त्राणि हेतयस्तव बाह्वोः।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखाकुरु।।

असंख्याताः सहस्त्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। १।।

येऽस्मिन्महत्यऽर्णवेऽन्तरिक्षे भवा अधि।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। २।।

ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवं रुद्रां उपाश्रिताः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ३।।

ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठा शर्वा अधःक्षमाचराः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धान्वानि तन्ममि।। ४।।

ये वनेषु शिष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ५।।

येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतोजनान्।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ६।।

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वाति तन्मसि।। ७।।

ये पथीनां पथि रक्षय ऐड मृदाय व्युधः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ८।।

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषिङ्गिणः।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ९।।

य एतावन्तो वा भूयांसो वा दिशो रुद्रा वितिष्ठिरे।
तेषां सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। १०।।

ॐ नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश

दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वा स्तेभ्यो नमो अस्तु, ते नो मृडयन्तु, ते यं द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः।। १।।

ॐ नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये अन्तरिक्षे, येषां वातमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोर्ध्वा स्तेभ्यो नमो अस्तु, ते नो मृडयन्तु, ते यं द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः।। २।।

ॐ नमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां, येषामऽन्नमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमो अस्तु, नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः।। ३।।

अग्नाविष्णू सजोषसा इमा वर्धन्तु वां गिरः, द्युम्नैर्वाजेभिरावृतम्।। एकाचमे, तिस्रश्चमे, तिसृश्चमे, त्रयस्त्रिंशच्चमे, चतस्रश्चमे, अष्टौचमे, अष्टचमे, अष्टाचत्वारिंशत् चमे, वाजश्च, प्रसवश्चाऽपिजश्च क्रतुश्च वाक्पतिश्च वसुश्च स्वर्मौर्धो मूर्धावैयशनो व्यश्वाँन आन्त्योऽन्त्यो भौवनो भुवनस्य पतिः प्रजापतिरधिपतिरियन्ते, राण्मित्रो यन्तासि यमन ऊर्जेत्वा वृष्ट्यैत्वा प्रजानां त्वाऽधिपत्याय, आयुर्यज्ञेन कल्पतां, मनो यज्ञेनकल्पतां, प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेनकल्पतां, श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां, वाग्यज्ञेन कल्पतामाऽऽत्मा यज्ञेन कल्पतां, ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां, पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां, यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्।। ऋक्च सामश्च स्तोमश्च यजुश्च बृहद्रथन्तरश्च स्वर्देवा अगन्म प्रजापतेः प्रजा अभूवन्नऽमृता अभूम वेट्स्वाहा।।

।। वाजस्य नु प्रसवा इति षट्।।

ॐ विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊतीर्विश्वे भवन्त्वऽग्नयः समिद्धाः।
विश्वे मादेवा अवसा गमन्निह विश्वमस्तु द्रविणं वाजे अस्मिन्।। १।।
आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादाऽमा द्यावापृथिवी विश्वरूपे।
आ मा गन्तां पितरा मातरा चामा सोमो अमृतत्वेन गम्यात्।। २।।

वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे।
यस्यामिदं विश्वं भुवनमाविवेश तस्यां नो देवः सविता धर्म
साविषत्।। ३।।

वाजो मा सप्त प्रदिशश्चतस्त्रो वा परावतः।
वाजो मा विश्वैर्देवैर्धनसाता इहावतु।। ४।।

वाजो मे अद्य प्रसुवातिदानं वाजो देवान् हविषा वर्धयाति।
वाजस्य हि प्रसवेनान्नमिति विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयम्।। ५।।

वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवानृतुभिः कल्पयाति।
वाजस्य हि प्रसवेनान्नमेति सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयम्।। ६।।

सं मा सृजामि पयसः पृथिव्याः सं मा सृजाम्यद्भिरौषधीभिः।
सोऽहं वाजस्य नौम्यग्नेः।। ७।।

"तेजोसि" पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे
पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।। तर्पणम्।।

मद्यं पीत्वा गुरुदारांश्च गत्वा स्तेयं कृत्वा ब्रह्महत्यां विधाय।
भस्मच्छन्नो भस्मशयांशय्यानो रुद्राध्यायी मुच्यते सर्वपापैः।। १।।

नित्यं दण्डी नित्य यज्ञोपवीती नित्यं ध्याता भस्मना कर्मबन्धी।
रुद्रं दृष्ट्वा देवमीशानमुग्रं याति स्थानं तेन साकं तदीयम्।। २।।

अनेन रुद्रमन्त्रसहित चमकानुवाक् पाठेन/स्नानेन/होमेन/ पुष्पार्चनेन /आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थ सद्गुरुप्रसाद-प्राप्त्यर्थं भगवान्, भवो देवः, शर्वो देवः, रुद्रो देवः, पशुपतिर्देवः, महादेवः, ईशान देवः, शतरुद्रेश्वरः, मृत्युञ्जयभट्टारकः पार्वतीसहितः परमेश्वरः अमृतेश्वर भैरवः प्रीयतां प्रीतोऽस्तु।।

अथ सौमारुद्रसूक्तं तृतीयम्।

ॐवन्दे रुद्रमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं शशिधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे शैलसुतामनोहरतरं वन्दे शिवं शङ्करम्।।

ॐ"सौमारुद्रमिति ईश्वरो भ्रातृव्यः, ब्राह्मणानि सुमन्तोः कश्यपस्य ब्रह्मणश्च" ॐसौमारुद्रं चरुं निर्वापयेच्छुक्लानां ब्रीहीणां श्वेतायाः श्वेतवत्साया आज्यं मथितं स्यात् तस्मिन् ब्रह्मवर्चसकामः, स्वर्भानुर्वा आसुरः, सूयन्तमसाऽविध्यत्स न व्यरोचत, तस्मै देवाः प्रायश्चित्तिमैच्छँ, स्तमेतयेष्ट्या याज्यं, स्तयाऽस्मात्तमोपाघ्नस्तमसैष प्रावृतो, योऽलं ब्रह्मवर्चसाय तत्र ब्रह्मवर्चस्वी भवति, तमएवास्मादऽपहन्ति, ब्रह्म-वर्चसेनैनँ सँ सृजति, श्वेतायाः श्वेतवत्सायाः आज्यं भवति, शुक्ला व्रीहय एवमिव है, ब्रह्मवर्चसं ब्रह्मवर्चसमेव सन्ददाति।। घृतेन प्रोक्षन्ति, घृतेन मार्जयन्ति शान्त्यै शान्तिर्ह्यापोऽप्यस्य ताँ रात्रीमाऽपो गृहान्नावहरेयुः परिश्रिते यजेत, ब्रह्मवर्चसस्य परिगृहीत्यै, प्रादेशमात्रश्चरुरूर्ध्वो भवत्येवं तिर्यङ्केतावान्वै पुरुषो यावदऽस्य प्राणाँ अभि, यावानेवास्यात्मा तस्मात्तमोऽपहन्ति, साकं रश्मिभिः प्रचरन्त्यऽसा एवास्मादादित्य उद्यँस्तमोऽपहन्ति, तिष्या पौर्णमासे यजेत, तिष्यो वै रुद्रश्चन्द्रमाः सोमः सौमीरतः, प्राचीनमोषधयो रौद्रीः, प्रतीचीनमोषधयो रात्रीः प्रतीचीनं पुष्यन्ति, प्राचीनं शुष्यन्ति, प्रतीचीनं प्रत्यक्षमेवैना ऋध्नोतीश्वरो दुश्चर्मा भवितोर्य एतया यजेते तीवस्वस्मादऽपहन्ति, मनोर्ऋचः सामिधीनीष्वऽप्यऽनुब्रूयान्मनुर्वा यत्किञ्चाऽवदत्तद्भेषजमाऽऽसीद्भेषजमेवास्मै करोत्यपक्षरन्ति सिन्धवो, मयोभुव इति, नराशंस्या परिददाति, शान्त्यै षट्पदा भवन्ति, षट्वा ऋतव ऋतुष्वेव परितिष्ठति।। ईश्वरस्तु तदऽति दुर्चर्मैव भवतिस्तेजाँसि ह्येष प्रत्यारोहन्निति, सौमापौष्णञ्चरुं पशुकामोऽनुनिर्वर्पेत्सोमो वै

ब्राह्मणस्य, स्वा देवताः पशवः, पूषा स्वामेव देवतां, पशुभिर्बंहयते, त्वचमेव कुरुते, सौमारुद्रञ्चरुं निर्वपेत्कृष्णानां ब्रीहीणा-मभिचरन्सोमो वा आसां प्रजानामऽधिपती, रुद्रोऽग्निरऽधिपतिर्वध्यस्य चाऽवध्यस्य चेशेऽधिपतिमेवैनं निर्याश्य, रुद्रायाऽपिदधाति, कृष्णानां ब्रीहीणां भवति, कृष्णमिव वै तमस्तमो मृत्युर्मृत्युनैवैनं ग्राहयति, शरमयं बर्हिः शीन्यै वैभीतवा, इध्मो विभित्यै सौमारुद्रं चरुं निर्वपेत्।। भ्रातृव्यतायैवाऽद्वितीय- तायैवातस्यार्धमऽर्धं, सर्वं स्यादऽर्धं, शुक्लानां व्रीहीणाँ स्यादऽर्धं कृष्णानामऽर्धं, शरमयं बर्हिषोऽर्धं दर्भमयमऽर्धं वैभीतकमिध्यमस्याऽर्धमऽन्यस्व वृक्षस्य सोमो वै ब्राह्मणस्य स्वा देवता स्वायामेवा- ऽस्मै देवतायां द्वितीयं जनयति, यदऽर्धमऽर्धं द्वितीयत्वायैव, तत्सौमारुद्रं चरुं निर्वपेत्पयस्यामयाविनः सौम्यो वै जीवन्नाग्नेयः प्रमीतो नैव जीवो न मृतो य आमवायी, तयोरेवैनं भागधेयेन निष्क्रीणाति।। पयसि भवति पयो वै पयः पयः पुरुषः, पय एतस्याऽमयति, यस्याऽमयति, पयसैवाऽस्य पयः स्पृणोति, ग्रसितं वा एष एतं सौमारुद्रयोर्निष्खिवदति, यो होता भवति, स ईश्वरः प्रमीतो अनड्वाहं तस्मै दद्यात्तं हन्यात्तस्याश्नीयात्सैव तत्र प्रायश्चित्तिः, सौमारुद्रञ्चरुं निर्वपेत्, प्रजाकामो वा पशुकामो वा सोमो वै रेतोधा, रुद्रोऽग्निः स प्रजनयिता सोम एवास्मै रेतो दधात्यऽग्निः प्रजनयति, विन्दते प्रजां वा पशून्वा यतरस्मै कामाय निर्वपति।। "सौमारुद्रचतुष्कं भरद्वाजः सौमारुद्रः त्रिष्टुप्" ॐ सौमारुद्रा धारयेथामऽसुर्यं प्रवामिष्टयोऽरमश्नुवन्तु, दमे दमे सप्तरत्ना दधाना शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे।। १।। सौमारुद्रा विवृहतं विषूचीममीवा या नो गयमाविवेश। आरे बाधेयां निर्ऋतिं पराचैरस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु।। २।। सौमारुद्रा युवमेतान्यस्मै विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम्। अवस्यतं मुञ्चतं यन्नो अस्ति ननूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत्।। ३।। "ते०" तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सौमारुद्राविव सुमृडतं नः। प्रनो

मुञ्चतं वरुणस्य पाशाद्गोपायतं नः सुमनस्यमाना।। ४।।
"इति सौमारुद्रमंत्रसूक्तं तृतीयम्।।"

अथ दीक्षामन्त्रसूक्तं चतुर्थम्।

ॐ शान्तं पद्मासनस्थं शशधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितं साङ्कुशं वामभागे
नानालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं नौमि दक्षं महेशम्।।

"(दीक्षया त्वापरिमित्येति पञ्चैते प्राजापत्यस्य येन देवा ज्योतिष्येति, संवर्तस्याऽङ्गिरसस्य यावद्ब्राह्मणः। यजुः")

ॐ दीक्षया विराडाऽप्तव्यस्तिस्त्रोरात्रीर्दीक्षितः स्यात्त्रिपदा विराड्विराजमेवाप्नोति, षड्रात्रीर्दीक्षितः स्यात्, षड्वा ऋतवः संवत्सरः, संवत्सरो विराड्विराजमेवाप्नोति, दशरात्रीर्दीक्षितः स्याद्दशाक्षरा विराड्विराजमेवाप्नोति, द्वादशरात्रीर्दीक्षितः स्याद्द्वादशमासाः संवत्सरः संवत्सरो विराड्विराजमेवाप्नोति त्रयोदशरात्रीर्दीक्षितः स्यात्रयोदश मासाः संवत्सरः, संवत्सरो विराड्विराजमेवाप्नोति, पञ्चदशरात्रीर्दीक्षितः स्यात्पञ्चदशार्धमास्य रात्रयोऽर्धमासशः, संवत्सर आप्यते, संवत्सरो विराड्विराजमेवाप्नोति, त्रिंशतँ रात्रीर्दीक्षितः स्यात्रिंशदऽक्षरा विराड्विराजमेवाप्नोति।। मासन्दीक्षितः स्याद्यो वै मासः संवत्सरः संवत्सरो विराड्विराजमेवाप्नोति, चतुरो मासो दीक्षितः स्यच्चतुरो वा एतं मासो वसवोऽबिभरुस्ते, पृथिवीमाऽजयन्गायत्रीं च्छन्दोऽष्टौ, रुद्रास्तेऽन्तरिक्षमाऽऽजयंस्त्रिष्टुभं छन्दो द्वादशाऽदित्यास्ते दिवमाजयञ्जगतीच्छन्दस्ततो वै ते व्यावृतमाऽगच्छञ्छ्रैष्ठ्यन्देवानां तस्माद्द्वादशमासो भूत्वाग्निऽञ्चिनवीत, द्वादशमासाः संवत्सरः संवत्सरोऽग्निर्वैश्वानरस्तस्याऽहोरात्राणीष्टका आप्तेष्टकमेवैनञ्चिनुत ऋध्नोति, व्यावृतमेव गच्छति, श्रैष्ठ्यं समानानां गायत्रं पुरस्ताद्गायति, शिरो वै देवानां गायत्रं गायत्रोऽग्निस्तस्माद्गायत्रं पुरस्ताद्गायति।। आग्निपावमान्यामऽयं वा वयः

पवते, स प्राणो मुखन्देवानामऽग्निर्मुखत एव प्राणन्दधाति, तस्मान्मुखतः प्राणो, रथन्तरमुत्तराद्गायति, बृहद्दक्षिणतः पक्ष एवास्योपदधातीयं वै रथन्तरमऽसौ बृहदाभ्यामेवैनं परिगृह्णाति, यज्ञायज्ञीयम्पुच्छे गायति, श्रोण्यां वामदेव्य, माऽत्मा वै यज्ञायज्ञीयन्तनूर्वामदेव्य, मात्मानमेवैनँ, स तनूश्चिनुते, हृदयमपि कक्षे, तस्मादपि कक्षे, हृदयमऽनूचम्भवति, तस्मादानस्थकं हृदयमऽर्थ्यै, परिगायत्यऽर्को वा अग्निरऽर्कमेवार्थ्यैः परिगायति शान्त्यै।। संवत्सरो वा अन्तरतमः, स्वर्गं लोकं ज्योतिष्मतीरेताः साहस्त्रीरिष्टका, यद्धिरण्यशुल्कैः प्रोक्षति, ज्योतिष्यैवास्मै संवत्सरं विवासयति, सहस्त्रस्य प्रमासि, सहस्त्रस्य प्रतिमासीति, सहस्त्रसंमिता हीमे लोका घ्नन्ति वा एतदग्नेर्यदस्याऽत्र न क्रियते, यन्न चीयतेऽमृतं हिरण्यं यद्धिरण्यशुल्कैः प्रोक्षत्यमृतेनैवास्य तन्वम्पृणन्ती, मा मे अग्रे इष्टका धेनवः सन्त्विति, धेनूरेवैनाः कुरुते, ता एनं कामदुधा अमुष्मिल्लोके उपतिष्ठन्ते, रुद्रं वै देवा यज्ञान्निरभजन्, स देवानायतयाऽभिपर्यावर्तत, ते देवा एतच्छतरुद्रियमऽपश्यं स्तेनैनमऽशमयन्, यच्छतरुद्रियञ्जुहोति तेनैवैनं शमयति।। जानुदघ्नेऽग्रे जुहोत्यस्या एव रुद्रमऽवयजतेऽथ नाभिदघ्नेऽन्तरिक्षादेव रुद्रमवजयतेऽथ पुरुषमात्रेऽमुष्या एव रुद्रमऽवयजत, इत एवोर्ध्वं रुद्रमऽवयजतेऽथ पुरुषमात्रेऽथ नाभिदघ्नेऽथ जानुदघ्नेऽमुत एवार्वाञ्चं रुद्रमऽवयजते तत्षट् सम्पद्यते, षट्वा ऋतुभ्य एव रुद्रन्निरवयजते, गवीधुकासक्तुभिर्वा जर्तिलैर्वा मृगक्षीरेण वा जुहोति यद्ग्राम्येण जुहुयाद्ग्राम्यावचारिणँ रुद्रं कुर्यादारण्यैनैवारण्यमऽभिरुद्रं निरवयजते।। अर्कपर्णेन जुहोत्यर्कोवाऽग्निरऽर्केनैवैनमर्कादऽधि निरवयजत उत्तरस्य पक्षस्य या चरमेष्टका तस्यां जुहोत्येषा वै रुद्रस्य दिक्स्वायामेव दिशि रुद्रं प्रतिगृह्याऽवयजते, पशुर्वा अग्निरेतर्हि वा एष जायते, यर्हि चीयते, यथा वत्सो जातं स्तनं प्रेप्सत्येवं वा एष एतर्हि भागधेयं प्रेप्सति, सयजमानं चैवाऽध्वर्युं च ध्यायति, यच्छतरुद्रियं जुहोति भागधेयेनैवैनं

शमयति।। अङ्गिरसो वै स्वर्ग लोकं यन्तस्तेजायां घर्मं प्रासिञ्चत्सा शोचन्ती पर्णं परामृशत्सोऽर्कोऽभवत्तदऽर्कस्याऽर्कत्वं यदऽर्कपर्णेन जुहोति सयो-नित्वाय यन्द्विष्यात्तस्य सञ्चरे पशूनां न्यसेद्यः प्रथमा पशुराक्रामति त आर्त्तिमार्च्छन्ति, या उत्तमास्ता यजमानं वाचयेदेता वै देवताः स्वर्ग्या-स्ताभिरेव स्वर्गलोकमित्येता वै देवता अभिचरण ीया यन्द्विष्यात्तं ब्रूयादऽमुं वो जम्भे दधामीत्येताभ्य एवैनं "ते०" देवताभ्य आवृश्चति, ताजक् प्रप्रधन्वति। "इति दीक्षामन्त्रसूक्तं चतुर्थम्॥

अथ शताध्यायसूक्तं पञ्चमम्।।

चन्द्रार्काग्निविलोचनं स्मितमुखं पद्मद्वयान्तःस्थितं
मुद्रापाश सुधाक्षसूत्रविलसत्पाणिं हिमांशुप्रभम्।
कोटीरेन्दुगलत्सुधाप्लुततनुं हारादिभूषोज्ज्वलं
कान्त्या विश्वविमोहनं पशुपतिं मृत्युञ्जयं भावये।।

("इमा रुद्रैकादश वासिष्ठैकादश देवता भूर्भुवः स्वश्चक्षुषा रूपाणि वयमित्या-ङ्गिरसस्यैशानाः")

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः,
यथा नः शमऽसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।। १।।
मृडा नो रुद्रो तनो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते,
यच्छञ्चयोश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु।। २।।
अश्याम ते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तव रुद्र मीढ्वः,
सुम्नायन्निद्विषो अस्माकमाऽचरारिष्टिवीरा जुहुवाम ते हविः।। ३।।
त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञं साधनमऽङ्कुङ्कविमऽवसे निह्वयामहे।
आरे अस्मद्दैव्यँ हेडो अस्यतु सुमतिमिद्वयमऽस्या वृणीमहे।। ४।।
दिवो वराहमरुषङ्कपर्दिनं त्वेषँ रूपं नमसा निह्वयामहे,
हस्ते बिभ्रद्भेषजा वार्याणि शर्म वर्म च्छर्दिरस्मभ्यं यं सत्।। ५।।
इदं पित्रे मरुतामुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम्,

रास्वाच नो अमृत मर्त्यभोजनं त्मने तोकाय तनयाय मृड॥ ६॥
मृड त्वमऽस्मभ्यँ रुद्रैतदऽस्तु हुतं तव,
पशूनऽस्माकं माहिंसीरेतदाऽस्मा असद्भुतम्॥ ७॥
मानो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्,
मानो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः,
वीरान्मानो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ ९॥
उप ते स्तोमन्पशुपा इवाऽकरं रास्वा पितर्महताँसुम्नमऽस्मे;
भद्रा हि ते सुमतिर्मृडयत्तमाथाऽवयमव इत्ते वृणीमहे॥ १०॥
आरे ते गोघ्नमुत पूरुषघ्नं क्षयद्वीर सुम्नमस्म ते अस्तु,
मृडा च नो अधि च ब्रूहि देवाधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ ११॥
अवोचाम नमो अस्मा अवस्यवः शृण्वन्तु नोहव्यं रुद्रो मरुत्वान्,
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामऽदितिः सिन्धुः पृथिवीरुत द्यौः॥ १२॥
"यजुः" त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्वं शर्धो मारुतं प्रख्या यशसे,
त्वं वातैराऽरुणैर्यस्ते शङ्गयस्त्वं पूषा विदत्ता पासि न त्मनः, देवा
देवेषु श्रयन्तां प्रथमा द्वितीयेषु श्रयन्तां, द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयन्तां,
तृतीयाश्चतुर्थेषु श्रयन्तां, चतुर्था पञ्चमेषु श्रयन्तां, पञ्चमा षष्ठेषु
श्रयन्तां, षष्ठाः सप्तमेषु श्रयन्तां, सप्तमा अष्टमेषु श्रयन्तां, अष्टमा
नवमेषु श्रयन्तां, नवमा दशमेषु श्रयन्तां, दशमा एकादशेषु श्रयन्तां,
देवास्त्रिरेकादशा स्त्रयस्त्रिंशाः उत्तरे भवथोत्तरे सत्वानो उत्तरवर्त्मान
उत्तर लक्ष्माणो यङ्कामयेदं जुहोमि स मे कामः समृद्ध्यतां वयं
स्याम पतयो रयीणाम्॥ ॐभूर्भुवः स्व क्षुच्च शुक् च उष्णाचोग्रा
च भीमा च राष्ट्रा च बीभत्सा च वैशन्ता च शार्दूराका चानिराका
चामीवाचा नाहुतिश्च निर्ऋतिरेतास्ते अग्निवर्तिमतिस्तन्वस्ताभिस्तं गच्छ,
योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तम- ऽर्पय॥ भवा शर्वा मृडतमा वियातं
पशुपती भूतपती नमो वाम्। प्रतिहितामयातामाविस्त्रष्टं मानो हिंसिष्टं
द्विपदो मा चतुष्पदः। शुने क्रोष्ट्रे मा शरीराणि कर्तमारिक्रवेभ्यो गृद्द्रेभ्यो
ये च कृष्णा अवस्यवः, मक्षिकः पशुपति वयांसि विघसे मा विदन्ते।

क्रन्दाय ते प्राणाय ते याश्चते भव हेतयः, नमस्ते उग्रकर्मः, सहस्राक्ष मर्त्य पुरस्तात्ते नमः। कूर्मोधरागुत्तरादनु, अमी वर्गाद्दिवस्पर्यन्तरिक्षाय ते नमः। मुखानि ते पशुपते यानि चक्षूंषि ते नमः। त्वचे रूपाय सन्दृशे प्रतीचीनाय ते नमः, अङ्गेभ्यस्त उदराय जिह्वायै द्भ्यो गन्धाय घ्राणाय ते नमः, अहोरात्राणि विदधत्प्रतीचीनाय ते नमः। अस्त्रा-नीलकपर्दिने सहस्राक्षेण वाजिनः, शर्वेणाऽध्वगगातिना तेन मासमरामसि। भवा ईश द्विपदो भव ईश चतुष्पदः, भवो विश्वस्य भुवनस्य राजति भवाय गाव ओषधीरजीगुर्भवाय द्यावापृथिवी नमेते। मानो रुद्रा परणिो वृणक्तु, हेत्याप इवाग्निः परिणो वृणक्तु, मानोभिमाँस्त नमो अस्त्वस्मे, चतुर्नमोष्टकृत्वो भवाय दशकृत्वा पशुपते नमस्ते। योऽभियातो निलयते त्वं रुद्र निचकीर्षति, यो नः पश्चदऽति प्रयुङ्क्ते तं विद्ध्यस्व पदवीरिव। नमः सायं नमः प्रातः नमो रात्र्या नमो दिवः, भवाय च शर्वाय चोभाभ्यामऽकरं नमः॥

॥ ॐ अथ वायोरेकादश पुरुषस्यैकादशस्त्रीकस्य॥

प्रभ्राजमानानाँ रुद्राणाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, व्यवजातानाँ रुद्राणाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, वासुकिवैद्युतानाँ रुद्राणाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, रजतानाँ रुद्राणाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, पुरुषाणाँ रुद्राणाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, श्यामानाँ रुद्राणाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, कपिलानाँ रुद्राणाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, अतिलोहितानाँ रुद्राणाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, ऊर्ध्वानाँ रुद्राणाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, अवपतन्तानाँ रुद्राणाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, वैद्युतानाँ रुद्राणाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, "ॐ भूर्भुवः स्वः रूपाणि वो मिथुनं मा वो मिथुनं रीढ्वम्" ॐप्रभ्राजमानानाँ रुद्राणीनाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, व्यवजातानां रुद्राणीनाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, वासुकिवैद्युतीनां रुद्राणीनाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, रजतानाँ रुद्राणीनाँ स्थाने

स्वतेजसा भानि, पुरुषाणाँ रुद्राणीनाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, श्यामानाँ रुद्राणीनाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, कपिलानाँ रुद्राणीनाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, अतिलोहितानाँ रुद्राणीनाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, ऊर्ध्वानाँ रुद्राणीनाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, अवपतन्तीनाँ रुद्राणीनाँ स्थाने स्वतेजसा भानि, वैद्युतीनाँ रुद्राणीनाँ स्थाने स्वतेजसा भानि,

"ॐभूभुर्वः स्व स्त्रियो वो मिथुनं मा वो मिथुनं रीढ्वम्"

ॐवयमऽग्रे धनवन्तः स्यामलं यज्ञयेत दक्षिणा यै,
ग्रावावदेदभि सोमस्याशु मिन्द्रं सिक्षिमिन्दुना सुतेन॥
रायस्पोषं नो देहि जातवेद ऊर्जो भागं मधुमत्स्यां धृतावत्,
दधान यज्ञँ सुनवाम सोमं यज्ञेन त्वामुप शिक्षेम शक्र॥
ईशानं त्वा शुश्रुमा वयं धनानां धनपते गोमदऽग्रे,
अश्ववद्भूरि पुष्टँ हिरणवद्धनवद्धेहि मह्यम्॥
दुहान्ते द्यौः पृथिवी पयोऽजगरस्त्वा सोदको विसर्पतु,
प्रजापतिनाऽत्मानमाऽप्रीणेऽरिक्तो म आत्मा॥
"ते०" यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु,
यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः॥

अथ तर्पणम्—मद्यं पीत्वा गुरुदारांश्च गत्वा स्तेयं कृत्वा ब्रह्महत्यां विधाय। भस्मच्छन्नो भस्मशय्यां शयानो रुद्राध्यायी मुच्यते सर्वपापैः॥ नित्यं दण्डी नित्ययज्ञोपवीती नित्यं ध्याता भस्मना कर्मबन्धी। रुद्रं दृष्ट्वा देवमीशानमुग्रं याति स्थानं तेन साकं तदीयम्॥

अनेन मन्त्रपाठेन (होमेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपाप-निवारणार्थं। श्रीमहारुद्रदेवता सन्तोषणार्थं। भगवान् अघोरः, तत्पुरुषः, सद्योजातः, वामदेवः, असुरबलहः, ईशानः, बहुरूपः, विश्वरूपः, त्र्यम्बकः, त्रिनेत्रः, त्रिशूलहस्तः, महामृत्युञ्जभट्टारकः, शतरुद्रेश्वरः, वृषभवाहनः अनेकरुद्रः, सानुचरः, सपरिवारः भवो देवः ८ पार्वतीसहितः परमेश्वरः प्रीयेतां प्रीतोऽस्तु॥ इति रुद्रपञ्चकम्॥

ॐअथ देवीपञ्चके अस्यवामाख्यं दुर्गादेवीसूक्तं प्रथमम्।

ॐआरक्ताभां त्रिनेत्रां मणिमुकुटवतीं रत्नताटङ्करम्यां
हस्ताम्भोजैः सपाशाङ्कुशमदनधनुःसायकैर्विस्फुरन्तीम्।
आपीनोत्तुङ्गवक्षोरुहतटविलुठत्तारहारोज्ज्वलाङ्गीं
ध्यायाभ्यऽम्भोरुहस्थामऽरुणनिवसनामीश्वरीमीश्वराणाम्॥

("ॐ अस्य द्विपञ्चाशदऽल्पस्तवन्त्वेतत्संशयोत्थापनप्रश्नप्रतिवाक्यान्यत्र प्रायेण ज्ञानमोक्षाक्षरप्रशंसा च 'दीर्घतमाऋषिः, पञ्चपादं साकञ्जानां यद्गायत्रेयं स शिङ्के सप्तार्धगर्भा गौरीरिति जगत्य एतदन्तं च वैश्वदेवं, तस्याः समुद्रा इति वाचः समुद्रा आपोक्षरं, सा प्रस्तारपङ्क्तिः, शकमयमिति शकधूम उक्षाणं, पृश्निमिति सोमस्त्रयः केशिन इत्यग्निवायुसूर्याश्च केशिनः चत्वारिवाग्वाचः, इन्द्रं मित्रं सौर्ये द्वादशेति संवत्सरसंस्थं कालचक्रवर्णनं, यस्ते सारस्वत्यं यज्ञेन साध्येभ्यः, परानुष्टुप् सौरी पर्जन्याग्निदेवता वाऽन्त्या सूर्यस्य वा शिष्टास्त्रिष्टुभः"॥)

ॐअस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्नः।
तृतीयो भ्राता घृतपृष्ठो अस्यात्रापश्यं विश्पतिं सप्तपुत्रम्॥ १॥
सप्तयुञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनाभा।
त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनाधितस्थुः॥ २॥
इमं रथमऽधि ये सप्ततस्थः सप्तचक्रं सप्त वहन्ति अश्वाः।
सप्त स्वसारो अभि सन्नवन्ते यत्र गवान्निहिता सप्तनाम॥ ३॥
को ददर्श प्रथमञ्जायमानमऽस्थन्वन्तं यदऽनस्था विभर्ति।
भूम्या असुरऽसृगात्मा क्वस्वित्को विद्वाँसमुपगात्प्रष्टुमेतत्॥ ४॥
पाकः पृच्छामि मनसाऽविजानन्देवानामेना निहिता पदानि।
वत्से बष्कयेऽधि सप्ततन्तून्वितत्निरे कवय ओत वा ॥ ५॥

अचिकित्वाञ्चिकितुषश्चिदऽत्र कवीन्पृच्छामि विद्मनेन विद्वान्।
वि यस्तस्तम्भ षडिमा रजाँस्यजस्य रूपे किमपि स्विदेकम्॥ ६॥
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेदाऽस्यवामस्य निहितं पदं वेः।
शीर्ष्णः क्षीरं दुहते गावो अस्य वव्रिं वसाना उदकं पदापुः॥ ७॥
माता पितरमृत आबभाज धीत्यग्रे मनसा सं हि जग्मे।
सा बीभत्सुर्गर्भरसा निविद्धा नमस्वन्त इदुपवाकमीयुः॥ ८॥
युक्ता माताऽसीद्धुरि दक्षिणाया अतिष्ठद्गर्भो वृजनीष्वऽन्तः।
अमीमेद्वत्सो अनु गामऽपश्यद्विश्वरूप्यं त्रिषु योजनेषु॥ ९॥
तिस्रो मातॄस्त्रीन्पितॄन्बिभ्रदेक ऊर्ध्वस्तस्थौ नेमऽवग्लापयन्ति।
मन्त्रयन्ते दिवो अमुष्य पृष्ठे विश्वविदं वाचमऽविश्वमिन्वाम्॥ १०॥
द्वादशारन्न हि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य ।
आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्तशतानि विंशतिश्च तस्थुः॥ ११॥
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिन्दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम्।
अथेमे अन्य उपरि विचक्षणं सप्तचक्रे षडर आहुरर्पितम्॥ १२॥
पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने तस्मिन्ना, तस्थुर्भुवनानि विश्वा।
तस्य नाऽक्षस्तप्यते भूरिभारः सनादेव न शीर्यते सनाभिः॥ १३॥
सनेमि चक्रमजरं वि वावृत उत्तानायां दश युक्ता वहन्ति।
सूर्यस्य चक्षूरजसैत्वाऽवृतं तस्मिन्नार्पिता भुवनानि विश्वा॥ १४॥
साकञ्जानां सप्तथमाहुरेकजं षडिद्यमा ऋषयो देवजा इति।
तेषामिष्टानि विहितानि धामशः स्थात्रे रेजन्ते विकृतानि रूपशः॥ १५॥
स्त्रियः सतीस्ताँ उ मे पुंस आहुः पश्यदऽक्षण्वान्न वि चेतदऽन्धः।
कविर्यः पुत्र स ईमा चिकेत यस्ता विजानात्स पितुष्पिताऽसत्॥ १६॥
अवः परेण पर एना वरेण पदा वत्सं बिभ्रती गौरुदस्थात्।
सा कद्रीची कंस्विदऽर्धं परागात्कः स्वित्सूते नहि यूथे अन्तः॥ १७॥
अवः परेण पितरं यो अस्यानुवेद पर एना वरेण।
कवीयमानः क इह प्रवोचद्देवं मनः कुतो अधि प्रजातम्॥ १८॥

ये अर्वाञ्चस्ताँ उ पराच आहुर्ये पराञ्चस्ता न उ अर्वाच आहुः।
इन्द्रश्च या चक्रथुः सोम तानि धुरा न युक्ता रजसो वहन्ति।। १९।।
द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनऽश्नन्नऽन्यो अभि चाकशीति।। २०।।
यत्रासुपर्णा अमृतस्य भागमऽनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति।
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमऽत्राऽविवेश।। २१।।
यस्मिन्वृक्षे मध्वऽदः सुपर्णा निविशन्ते सुवते चाधि विश्वे।
तस्येदाहुः पिप्पलं स्वाद्वऽग्रे तन्नो नशद्यः पितरन्न वेद।। २२।।
यद्गायत्रे अधि गायत्रमाऽहितं त्रैष्टुभाद्वा त्रैष्टुभं निरतक्षत।
यद्वा जगज्जगत्याऽहितं पदं य इत्तद्विदुस्ते अमृतत्वमाऽऽनशुः।। २३।।
गायत्रेण प्रति मिमीते अर्कमऽर्केण साम त्रैष्टुभेन वाकम्।
वाक्येन वाकं द्विपदा चतुष्पदाऽक्षरेण मिमते सप्त वाणीः।। २४।।
जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद्रथन्तरे सूर्यं पर्यपश्यत्।
गायत्रस्य समिधस्तिस्र आहुस्ततो मह्नाप्ररिरिचे महित्वा।। २५।।
उपह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम्।
श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदुषु प्रवोचम्।। २६।।
हिंकृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाऽभ्यागात्।
दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय।। २७।।
गौरमीमेदऽनु वत्सं मिषन्तं मूर्धानं हिङ्कृणोन्मात वा उ।
सृक्वाणङ्घर्ममऽभि वावशाना मिमाति मायुं पयते पयोभिः।। २८।।
अयं स शिङ्क्ते येन गौरभीवृता मिमाति मायुं ध्वसनावऽधिश्रिता।
सा चित्तिभिर्निहि चकार मर्त्यं विद्युद्भवन्ती प्रति वव्रिमौहत।। २९।।
अनच्छये तुरगा तु जीवमेजद्ध्रुवं मध्य आ पस्त्यानाम्।
जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिऽमर्त्यो मर्त्येनासयोनिः।। ३०।।
अपश्यङ्गोपामऽनिपद्यमानमाऽऽच परा च पथिभिश्चरन्तम्।
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरिवर्ति भुवनेष्वऽन्तः।। ३१।।
य ईं चकार न सो अस्य वेद य ईं ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात्।

स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निर्ऋतिमाऽविवेश।। ३२।।
द्यौर्मे पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम्।
उत्तानयोश्चम्वोर्योनिरन्तरत्रार्पिता दुहितुर्गर्भमाधात्।। ३३।।
पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम।। ३४।।
इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्याः अयं यज्ञो भुवनस्व नाभिः।
अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम।। ३५।।
सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतो विष्णोस्तिष्ठन्ति प्रदिशा विधर्मणि।
ते धीतिभिर्मनसा ते विपश्चितः परि भुवः परि भवन्ति विश्वतः।। ३६।।
न विजानामि यदि वेदमस्मि निण्यः सन्नद्धो मनसा चरामि।
यदा मागन्प्रथमजा ऋजस्यादिद्वाचो अश्नुवे भागमऽस्याः।। ३७।।
अप्राङ् प्राङेति स्वधया गृभीतोऽमर्त्यो मर्त्येना स योनिः।
ताः शश्वन्ता विषूचीना वियन्तान्यून्यं चिक्युर्न नि चिवयुरऽन्यम्।। ३८।।
ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।। ३९।।
सूयवसाद्भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती।। ४०।।
गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।। ४१।।
तस्याः समुद्रा अधि विक्षरन्ति तेन जीवंति प्रदिशश्चतस्त्रः।
ततः क्षरत्यक्षरं तद्विश्वमुप जीवति।। ४२।।
शकमयं धूममारादऽपश्यं विषूवता पर एना वरेण।
उक्षाणं पृश्निमपचन्त वीरास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।। ४३।।
त्रयः केशिन ऋतुथा विचक्षते संवत्सरे वपत एक एषाम्।
विश्वमेको अधि चष्टे शचीभिर्ध्राजिरेकस्य ददृशे न रूपम्।। ४४।।
चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।

गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति।। ४५।।
इन्द्रं मित्रं वरुणमऽग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यऽग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।। ४६।।
कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति।
त आववृत्रत्सदनादृतस्यादिद्धृतेन पृथिवी व्युद्यते।। ४७।।
द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नाभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन्साकं त्रिशता न शङ्कवोऽर्पिताः षष्टिर्न चला चलासः।। ४८।।
यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि।
यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः सरस्वति तमिह धातवे कः।। ४९।।
यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवाःस्तानि धर्माणि प्रथमानि आसन्।
ते ह नाकं महिमानं सचन्त यत्र पूर्वे साध्या सन्ति देवाः।। ५०।।
समानमेतदुदकमुच्चैत्यव चाहभिः।
भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति दिवं जिन्वन्त्यग्नयः।। ५१।।
"ते०" दिव्यं सुपर्णं वायसं बृहन्तमऽपां गर्भं दर्शतमोषधीनाम्।
अभीपतो वृष्टिभिस्तर्पयन्तं सरस्वन्तमऽवसे जोहवीमि।। ५२।।
इति अस्यवामाख्यदुर्गादेवीसूक्तं प्रथमम्॥

अथ त्रिपुरादेवीसूक्तं द्वितीयम्।

ॐ गणेशवटुकस्तुता रतिसहायकामान्विता
स्मरारिवरविष्टरा कुसुमबाणबाणैर्युता।
अनङ्गकुसुमादिभिः परिवृताच सिद्धैस्त्रिभिः
कदम्बवनमध्यगा त्रिपुरसुन्दरी पातु नः।।

("कया पञ्चोनः संवादस्तृतीयाद्ययुजो मरुतां वाक्यमन्त्यस्तृचोऽगस्त्यस्य शिष्टा इन्द्रस्यैकादशी च महतां त्विन्द्रो देवता")

ॐ कया शुभा सवयसः सनीडाः समान्या मरुतः सं मिमिक्षुः।
कया मती कुत एतास एतेऽर्चन्ति शुष्मं वृष्णो वसूया।। १।।
कस्य ब्रह्माणि जुजुषुर्युवानः को अधरे मारुत आववर्त।

श्येनाँ इव व्रजतो अन्तरिक्षे केन महामनसा रीरमाम॥ २॥
कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं त इत्था।
सं पृच्छसे समराणः शुभाणैर्वोचेस्तन्नो हरिवो यत्तेअस्मे॥ ३॥
ब्रह्माणि मे मतयः शँ सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः।
आशासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्तानो अच्छ॥ ४॥
अतो वयमऽन्तमेभिर्युजानाः स्वक्षत्रेभिस्तन्वः शुम्भमानाः।
महाभिरेताँ उप युज्महे निन्द्र स्वधामनु हि नो बभूव॥ ५॥
क्व स्यावो मरुतः स्वधासीद्यन्मामेकँ समधत्ताहिहत्यै।
अहं ह्युग्रस्तविषस्तुविष्मान्विश्वस्य शत्रोरनसं वदस्नैः॥ ६॥
भूरि चकर्थ युज्येभिरस्मै समानेभिर्वृषभ पांस्येभिः।
भूरिणि हि कृणवामा शविष्ठेन्द्र कृत्वा मरुतो यद्वशाम॥ ७॥
वधीं वृत्रं मरुत इन्द्रियेण स्वेन भामेन तविषो बभूवान्।
अहमेता मनवे विश्वश्चन्द्राः सुगा अपश्चकार वज्रबाहुः॥ ८॥
अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ अस्ति देवता विदानः।
न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध॥ ९॥
एकस्य चिन्मे विश्वस्त्वोजो या नु दधृष्वान्कृणवै मनीषा।
अहं ह्युग्रो मरुतो विदानो यानि च्यवमिन्द्र इदीश एषाम्॥ १०॥
अमन्दन्मा महतः स्तोभो अत्र यन्मे नरः श्रुत्यं ब्रह्म चक्र।
इन्द्राय वृष्णे सुमखाय मह्यं सख्ये सखायस्तन्वे तनूभिः॥ ११॥
एवेदेते प्रति मा रोचमाना अनेद्यः श्रव एषो दधानाः।
सञ्चक्ष्या मरुतश्चन्द्रवर्णा अच्छान्त मे छदयाथा च नूनम्॥ १२॥
कोन्वऽत्र मरुतो मामहे वः प्रयातन सखीरँच्छा सखायः।
मन्मानि चित्रा अपि वातयन्त एषां भूत न वेदाम ऋतानाम्॥ १३॥
आ यद्दुवस्यादवसे न कारुरस्माञ्चके मान्यस्य मेधा।
ओ षु वर्त महतो विप्रमच्छेमा ब्रह्माणि जरिता वो अर्चत्॥ १४॥
"ते०" एष वः स्तोमो महत इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः।

एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजिनं जीरदानुम्।। १५।।
इति त्रिपुरादेवीसूक्तं द्वितीयम्॥

अथ शारिकादेवीसूक्तं तृतीयम्।

ॐबीजैः सप्तभिरुज्ज्वलाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः
सप्तर्षिप्रणताङ्घ्रिपङ्कजयुगा या सप्तलोकार्तिहृत्
कश्मीरप्रवरेशमध्यनगरे प्रद्युम्नपीठे स्थिता
देवीसप्तकसंयुता भगवती श्रीशारिका पातु नः।।

(ॐ अहमष्टौ वागश्विनी तुष्टावाऽत्मानं त्रिष्टुप् द्वितीया जगती")

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यऽहमादित्यैरुत विश्वेदेवैः। अहं मित्रावरुणोभा विभर्म्यऽहमिन्द्राग्नी अहमऽश्विनोभा।। १।।
अहं सोममाहनसं बिभर्म्यऽहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते।। २।।
अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।। ३।।
मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।। ४।।
अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।। ५।।
अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यऽहं द्यावापृथिवी आविवेश।। ६।।
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वऽन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवना नु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि।। ७।।
"ते०" अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यै तावती महिना सम्बभूव।। ८।।

"इति शारिकादेवीसूक्तं तृतीयम्॥"

अथ राज्ञीदेवीसूक्तं चतुर्थम्।

ॐ उद्यद्दिवाकरसहस्त्ररुचिं त्रिनेत्रां
पद्मासनोपरिगतामुरगोपवीताम्।
खड्गाम्बुजाङ्चकलशामृतपात्रहस्तां
राज्ञीं भजामि विकसद्वदनारविन्दाम्।।

।। इंद्रं मित्रं सप्त त्रिष्टुबन्तम्।।

ॐ इंद्रं मित्रं वरुणमग्निमूतये मारुतं शर्धो अदितिं हवामहे।
रथं न दुर्गाद्वसवः सदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ।। १।।
त आदित्या आगता सर्वतातये भूत देवा वृत्रतूर्येषु शम्भुवः।।
रथं न दुर्गाद्वसवः सदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन।। २।।
अवन्तुः नः पितरः सुप्रवाचना उत देवी देवपुत्रे ऋतावृधा।
रथं न दुर्गाद्वसवः सदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन।। ३।।
नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे।
रथं न दुर्गाद्वसवः सदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन।। ४।।
बृहस्पते सदमिन्नः सुगं कृधि शं योर्यत्ते मनुर्हितं तदीमहे।
रथं न दुर्गाद्वसवः सदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन।। ५।।
इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं शचीपतिं काटे निबाढ ऋषिराह्वदूतये।
रथं न दुर्गाद्वसवः सदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन।। ६।।
"ते०" देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामऽप्रयुच्छन्।
तन्नो भित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिंधुः पृथिवी उत द्यौः।। ७।।
।। इति राज्ञीदेवीसूक्तं चतुर्थम्।।

अथ ज्वालादेवीसूक्तं पञ्चमम्।

ॐ ज्वालापर्वतसंस्थितां त्रिनयनां पीठत्रयान्तःस्थितां
ज्वालाडम्बरभूषितां सुवदनां नित्यंत्वदृश्यां जनैः।

षट्चक्राम्बुजमध्यगां वरगदाम्भोजाभयान्बिभ्रतीं
चिद्रूपां सकलार्थदीपनकरीं ज्वालामुखीं नौम्यहम्।।

"इदमपि च ॐतामग्निवर्णा सौभरिर्दुर्गा त्रिष्टुप्"

ॐतामऽग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गा देवीं शरणमऽहं प्रपद्ये सुतरसितरसे नमः।। १।।
अग्ने त्वं पारयानव्यो अस्मान्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा।
पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी भवा तोकाय तनयाय शं योः।। २।।
विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरितातिपर्षि।
अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानोऽस्माकं बोद्ध्यविता तनूनाम्।। ३।।
पृतनाजितं सहमानमुग्रमऽग्निँ हुवेम परमात्सधस्थात्।
स नः पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा क्षामाद्देवो अति दुरितात्यग्निः।। ४।।
प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि।
त्वां चाग्ने तन्वं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभगमा यजस्व।। ५।।

"यजुः" अग्न आयूंष्यग्ने पवस्वाग्ने पावक रोचिषा, स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ इहावह, उपयज्ञं हविश्चनः, अग्निः शुचिव्रततम उदग्ने शुचयस्तव, सुत्रामणं महीमूषु, तँहि शश्वन्त ईडते शुचा देवँ घृतश्च्युता, अग्निँहव्याय वोहवे, अग्निं दूतं पुरो दधे, स हव्यवाडमर्त्य, उशिग्दूतश्च नो हितः, अग्निर्धिया समृण्वति, अग्निँ स्तोमेन बोधय, समिधानो अमर्त्यम्, हव्या देवेषु नो दधत्, प्रेद्धो अग्न इमो अग्ने, पीपिवांसं सरस्वतः स्तनं यो विश्वदर्शतः, धुक्षीमहि प्रजामिषं, ये ते सरस्वन्नूर्मयो, मधुमन्तो घृतश्च्युतः, तेभिर्नोऽविता भव, दिव्यं सुपर्णं वायसं बृहन्तमऽपाँ पतिं वृषभमोषधीनाम्। अभीपतो वृष्टिभिस्तर्पयन्तं सरस्वन्तमवसे जोहवीमि, यस्य व्रतमुपतिष्ठन्तआपो यस्य व्रते पशवो यन्ति सर्वे। यस्य व्रते पुष्टिपतिर्निविष्टस्तं सरस्वन्तमऽवसे जोहवीमि।। "मयोभूर्वातो इत्यादि गयस्य त्रितस्य काक्षीवतः शम्बरो गौस्त्रिष्टुप्।।" मयोभूर्वातो अभि वातेस्त्रा ऊर्जस्वतीरोषधीराविशन्ताम्।

पीवस्वतीर्जीवधन्याः पिबन्त्य, वसाय पद्वते रुद्र नो मृड॥ १॥
याः सरूपा विरूपा एकरूपा यासामऽग्निरिष्ठ्या नामानि वेद।
या अङ्गिरसस्तपसेह चक्रुस्ताभ्यः पर्जन्य महि शर्म यच्छ॥ २॥
या देवीषु तन्वमैरयन्त यासां सोमो विश्वा रूपाणि वेद।
ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः प्रजावतीरिन्द्र गोष्ठे रिरीहि॥ ३॥
प्रजापतिर्मह्यमेता रराणो विश्वैर्देवैर्यज्ञियैः संविदानः।
वह्नीर्भवन्तीरुप नो गोष्ठमागुस्तासां वयं प्रजया सँसदेम॥ ४॥
इह धृतिः स्वाहेह विधृतिः स्वाहेह रन्तिः स्वाहेह रमतिः स्वाहा महीमूषु
सुत्रामाणम्, "कास्विदेकाकीत्यादि दीर्घतमस आङ्गिरसस्यात्रेयस्य"
कास्विदेकाकी चरति क उ स्विज्जायते पुनः।
किं स्विद्धिमस्य भेषजं किं स्विदावपनं महत्॥ १॥
सूर्य एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः।
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्॥ २॥
का स्विदासीत्पूर्वं चित्तिः किं स्विदासीद्बृहद्वयः।
का स्विदासीत्पिलम्पिला कास्विदासीत्पिशङ्गिला॥ ३॥
द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरश्व आसीबृहद्वयः।
अविरासीत्पिलम्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिला॥ ४॥
पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।
पृच्छामि त्वावृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम॥ ५॥
वेदिमाहुः परमन्तं पृथिव्या यज्ञमाहुर्भुवनस्य नाभिम्।
सोममाहुर्वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मैव वाचः परमं व्योम॥ ६॥

॥ अम्बे अम्बालीति वृषातकिः॥

अम्बे अम्बाल्यम्बिके न मानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः॥ १॥
सुभगे काम्पीलवासिनी, स्वर्गे लोके संप्रोर्णुवाथा माहमजामि गर्भध,
मात्वमजामि गर्भधं, तौ सह चतुरः पादाः संप्रसारयवहै, वृषा वां

रेतोधा, रेतो दधातूत्सक्थ्यो, गृदं धेह्यञ्जिमुदञ्जिमन्वज, यः स्त्रीणां जीवभोजनो, य आसां बिलधावनः, प्रियः स्त्रीणामऽपीच्यो य आसां कृष्णो लक्ष्माणि, सन्धिगृधिं परावधीत्, अम्बे अम्बाल्यम्बिके न मानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः॥ २॥

ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रयता, द्वैणुभारं गिराइव, अधास्या मध्यमेधताँ शीते वाते पुनन्निव, अम्बे अम्बाल्यम्बिके न मानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः॥ ३॥

यद्धरिणी यवमऽति,न पुष्टं पशु मन्यते, शूद्रा यदर्यजारा,न पोषाय धनायति, अम्बे अम्बाल्यम्बिके न मानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः॥४॥

इयं यका शकुन्ती,काहलमिति वञ्चति, आहतं गभे पसो,निजल्गालूति धानिका, अम्बे अम्बाल्यम्बिके न मानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः॥५॥

माता च ते पिता च ते,ऽग्रं वृक्षस्य रोहतः, प्रसुलामिति ते पिता, गभे पुष्टिमतँ स यत्॥ ६॥ दधि क्राब्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभिन मुखा करत् प्रण आयूंषि तारिषत्॥ ६॥

आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जेदधातन महेरणाय चक्षसे। उशतीरिव मातरः तस्मा अरगमाम वो यस्यक्षयाय जिन्वथ ॥

यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा। चतस्र ऊर्जं दुहुहे पयांसि क्व स्विदस्याः परमं जगाम॥ १॥

देवीं वाचमऽजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु॥ २॥
प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। धीनामवित्र्यवतु॥ ३॥
ॐगायत्र्यै नमः ॐभुर्भुवः स्व० ३॥ ४॥
तेजोऽसि। जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो नि दहाति वेदः।
स नः पर्षदऽति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥ ५॥

॥ इति देवीपञ्चकं समाप्तम्॥

॥ अथ तर्पणम्॥

स्तेयं कृत्वा द्विजो मोहादहोरात्रोषितः शुचिः। सूक्तं जप्त्वास्यवामीयं

सद्यो मुच्येत किल्विषात्।। ज्ञातिपुत्रसुहृन्मित्रैर्यस्तु राज्यं चिकीर्षति। नित्यं तु नियतो भूत्वा सूक्तं च मनसा जपेत्।। कया शुभेति च जपञ्ज्ञातिश्रैष्ट्यमवाप्नुयात्। अहं रुद्रेभिरिति च वाग्मी भवति मानवः।। कया शुभेति पैशुन्यं कृत्वा चाभक्ष्यभक्षणम्। श्रुत्वा परं रहस्यं च मुच्यते त्वाह कौशिकः। जातवेदस एतस्यां पूर्णं ब्रह्म परं स्थितम्।। सिसाधयिषुरित्थं च प्रस्थाने मनसा जपेत्। सिद्धार्थः स्वस्तिमाप्नोति प्रीमीयेत न चाध्वनि।। कृतार्थश्च गृहान्गच्छन्नेतामेव सदाभ्यसेत्। उदिते सवितर्येतां जपेदस्तं गते तथा।। अहः स्वस्त्ययनं प्रातः रात्रौ स्वस्त्ययनं निशि। व्युष्टं यो हि जपेन्नित्यमेतद्दुःस्वप्ननाशनम्।। त्रिस्सप्तदश कृत्वो य ऋचमन्तर्जले जपेत्। जातवेदस इत्येतां सर्वपापैः प्रमुच्यते।। अनेनैवोदकं प्रातरभिमन्त्र्य दिने दिने। पिवेन्मेधामवाप्नोति पठन्विप्रो न संशयः।। अग्न आयूंष्यग्ने पावस्वग्ने पावकरोचिषः। एतां जप्त्वा नरो धीमान्सद्यो मुच्येत किल्विषात्।। मयोभूर्वातो इत्येतां जप्त्वा ध्यात्वा सुरेश्वरि। स याति भवनं देव्या यत्र गत्वा न शोचति।। कः स्विदेकाकीति ऋचं जप्त्वा हि तन्मयो भवेत्।। अम्बे अम्बाल्यम्बिकेति देवीमाराध्य सर्वतः।। गमिष्यन्दूर-मध्वानमुपतिष्ठेद्दिवाकरम्। सहस्त्रकृत्वोऽनेनैव शतकृत्वोऽथ वा पुनः।। स गत्वा क्षेममध्वानं कृतार्थश्च निवर्तते। सर्वस्वं वा एकतश्च वाचः सूक्तानि चैव हि। समग्रमथ ऋग्वेदं जातवेदस्तथैकतः। सर्ववेदाभिगमनं सर्वतीर्थावगाहनम्।। जातवेदस इत्येतत्समं वास्यान्नवासमम्। जपेत नित्यं यत्नेन कुर्यात्कर्माण्यतन्द्रितः।। स ब्रह्मभूतो भवति वायुभूतः खमूर्तिमान्।।

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी।। शक्तिः शङ्करवल्लभा

त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यासि।।

अनेन मन्त्रपाठेन (होमेन) आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपाप-निवारणार्थं श्री दुर्गा देवीप्रीत्यर्थं सकलकामनासिद्ध्यर्थं भगवती अमा कामा श्रीशारिका भगवती, श्रीशारदा भगवती, श्रीमहाराज्ञी भगवती, श्रीज्वाला भगवती, श्रीब्रीडा भगवती, वैखरी भगवती, वितस्ता भगवती, गङ्गा भगवती, यमुना भगवती, शिवा भगवती, सन्ध्या भगवती, शीतला भगवती, तोतुला भगवती, जया भगवती, विजया भगवती, मङ्गला भगवती, कालिका भगवती, सिद्ध लक्ष्मी भगवती, महालक्ष्मी भगवती, महागायत्री सावित्री सरस्वती महात्रिपुरसुन्दरी सहस्त्रनाम्नी भवानी सर्वरूपा श्रीदुर्गा भगवती कृत्स्नांहोहन्त्री सपरिवारा शक्तिरूपा विश्वजननी पूर्वोक्तगुणरूपा परा पररहस्या सर्वानन्दमयी चक्रेश्वरी वाग्देवी सरस्वती परंब्रह्मस्वरूपा परामृतशक्तिः सर्वपीठेश्वरी सर्ववीरेश्वरी सर्वमन्त्रेश्वरी सर्वसिद्धीश्वरी सर्ववेदेश्वरी सर्वबुद्धीश्वरी मधुकैटभविद्राविणी महिषासुरसैन्यघ्नी महिषासुरघातिनी धूम्रलोचन नाशिनी चण्ड-मुण्ड-रक्तबीज-शम्भु-निशम्भुहारिणी जगदुत्पत्तिकारिणी मातृकाचक्रासनदेवता अजा अमा प्रमा अमोघदृक्ससिद्धा सायुधा सवाहना सानुचरा परापरसपर्यया सर्वोपचारैः पूजिता तृप्ता प्रीता मे भवतु।।

लक्ष्मीर्मेधा धरा पुष्टिगौरी तुष्टिः प्रभा मतिः अमा कामा च चार्वाङ्गी इत्याद्याः प्रीयतां मम अनेकदेव्याः प्रीयन्तां प्रीता भवन्तु।।

।। इति तर्पणम्।।

अथ रक्षोघ्नमन्त्राख्यं महौषधिसूक्तम्॥

"ॐ या ओषधय इत्युनुवाको भिषगस्याथर्वणस्य॥"

या ओषधयः प्रथमजा देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा।
मने नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च॥ १॥
शतं वो अम्ब धामानि सहस्त्रमुत वो रुहः।
अधा शतक्रतवो यूयमिमं मे अगदंकृत॥ २॥
पुष्पवतीः प्रसुमतीः फलिनीरफला उत।
अश्वा इव स जित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥ ३॥
ओषधीरिति मातरस्तदु मातरस्तुदु देवीरुपब्रुवे।
अपांसि विघ्नतीरिव रक्षाश्च तयमाना॥ ४॥
अश्वत्थवो निवेदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषः॥ ५॥
अश्वावतीं सोमवतीमूर्जयन्तीमुदोजसा।
आवित्सि सर्वा ओषधीरस्मा आरिष्टतातये॥ ६॥
यदोषधयः समज्माता राजानः समिता इव।
विप्रः स उच्यते भिषग्रक्षोहामीवचातनः॥ ७॥
उच्छुष्मा ओषधीनां गावो गोष्ठादिवेरते।
धनं सनिष्यन्तीनामात्मानं तव पूरुषः॥ ८॥
अति विश्वाः प्रतिष्ठाःस्तेन इव व्रजमक्रमुः।
ओषधयः प्रचुच्यवुर्यत्किञ्चित्तन्चोरपः॥ ९॥
यास्त आतस्थुरात्मानमाविविशुःपरुष्परुः।
तास्मे यक्ष्मं विबाधन्तामुग्रो मध्यमशीरिव॥ १०॥
यदहं वाजन्निमा ओषधीर्हस्त आददे।
आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीवगृभो यथा॥ ११॥
निष्कृतिर्नाम वोमाताथो त्वमसि निष्कृतिः।

सराः पतत्रिणीः स्था यदामयति निष्कृत।। १२।।
साकं यक्ष्म प्रपत चाषेण किकिदीविना।
साकं वातस्य, ध्राज्या साकं नश्यन्निहाकया।। १३।।
अन्यावो अन्याभवत्यन्यान्यस्या उपावत।
ताः सर्वाः संविदाना इदं मे प्रावता वचः।। १४।।
अवपतन्तीरवदन्दिवन्तेभ्यस्परिपरि।
यज्जीवमश्रवामहै न सरिष्याति पूरुषः।। १५।।
याः फलिनीर्या अफला अकोशाः कोशिनीश्च याः।
बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चत्वंहसः।। १६।।
याश्चेदमुपशृण्वन्ति याश्च दूरं परागताः।
वृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चत्वंहसः।। १७।।
याः सोमराज्ञी वरुणस्य राज्ञो यासां विश्वेदेवा अतिपतयश्च सर्वे।
या अन्तरिक्षे दिवि याः पृथिव्यां ता नः स्तुता ओषधीः पारयन्तु।।१८।।
ॐ सहस्त्रधा रेवतीसमस्वरन्देवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः।
तस्य स्पृशो न निमिषन्ति तूर्णयः पदे पदे पशवः सन्ति सेतवः।।१९।।
मलिम्लुचो नामासि त्रयोदश मासाः।
इन्द्रस्य शर्मासीन्द्रस्य वर्मासि इन्द्रस्य वरूथमसि।। २०।।
तन्त्वा प्रपद्ये सगुः साश्वः सपूरुषः सह यन्मे स्थितेन।
स मे शर्म च वर्म च भवा गायत्री लोमभिः प्रविशामि।। २१।।
त्रैष्टुभं त्वचा प्रविशामि जगती मांसेन प्रविशामि।
अनुष्टुभमस्थ्ना प्रविशामि पाङ्क्तं मज्जा प्रविशामि।। २२।।
ऐन्द्राग्नं वर्म बहुलं यदुग्रं विश्वेदेवा नातिविध्यन्ति शूराः।
तन्नस्त्रायतां तन्वः सर्वतो महदायुष्मन्तो जरामुपगच्छेम जीवाः।। २३।।
("अनेन मन्त्र० आत्मनो० अमुकराश्या ग्रहपीडानिवारणार्थं दिव्यन्तरिक्षभौमो-पद्रवनिवारणार्थं महौषधिगणा रक्षोघ्नमन्त्राः प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु।।
इति महौषधिसूक्तम्।।"

पक्षयाग विधि का शेष भाग

अग्नये स्वाहा, वसन्ताय स्वाहा। इन्द्राय स्वाहा, ग्रीष्माय, मरुद्भ्यः, वर्षाभ्यः। विश्वेभ्यो देवेभ्यः शरदे, मित्राय, हेमन्ताय, मित्रा-वरुणाभ्यां हेमन्तशिशराभ्यां, ब्रह्मणे प्रतिपदे, त्वष्ट्रे द्वितीयायै, जनार्दनाय तृतीयायै, यमाय चतुर्थ्यै, सोमाय पंचम्यै, कुमाराय षष्ट्यै, मनुभ्यः सप्तभ्यै, वसुभ्यः अष्टभ्यै, पिशाचेभ्यः नवभ्यै, धर्माय दशम्यै, रुद्रेभ्यः एकादश्यै, रविभ्यः द्वादश्यै, कामाय त्रयोदश्यै, भूतेभ्यः चतुर्दश्यै, पितृभ्यः अमावस्यायै। विश्वेभ्यो देवेभ्यः पूर्णपञ्चदश्यै स्वाहा। अग्नये स्वाहा कृतिकाभ्यः, प्रजापतये रोहिण्यै, मरुद्भ्यः इन्वकाभ्यः, रुद्राय बाहवे, अदितये पुनर्वसवे, बृहस्पतये तिष्याय, सर्पेभ्यः अश्लेषाभ्यः, पितृभ्यः मघाय, पूर्वाभ्यः फल्गुनीभ्यः, अर्यम्णे उत्तराभ्यः फल्गुनीभ्यः स्वाहा, सवित्रे हस्ताय, त्वष्ट्रे चित्राय। वायवे निष्ठायै, इन्द्राग्निभ्यां विशाखाय, मित्रायै अनुराधाभ्यः, इन्द्राय ज्येष्ठायै, निर्ऋतये मूलाय, अद्भ्यः पूर्वाभ्य, आषाढाभ्यः विश्वेभ्यो देवभ्यः उत्तराभ्य आषाढाभ्यः, ब्रह्मणे अभिजिते, विष्णवे अश्वत्थाय वसुभ्यः श्रविष्ठाभ्यः, वरुणाय शतिभिषजे, अजैकपदे पूर्वाभ्यः प्रोष्ठपदाभ्यः, अहिबुध्न्याय उत्तराभ्यः प्रोष्ठपदाभ्यः, पूष्णे रेवत्यै, अश्विभ्यां अश्वयुभ्यां, यमाय अपभरणीभ्यः स्वाहा।

इह गावः प्रजायध्व मिहाश्वा इह पूरुषाः। इहो सहस्त्रदक्षिणो रायस्पोषः प्रजायताम्। (त्रिष्टुप्) अयं यज्ञो वर्धतां गोभिरश्वैरियं वेदिः सुपत्या सुवीरा। इदं बर्हिरतिबर्हीष्यन्येमं यज्ञं विश्वे अवन्तु देवाः स्वाहा। (आन इति नारायणस्य त्रिष्टुप्) आ नः प्रजां जनयतु प्रजापतिर्धाता दधातु सुमनस्यमानः। संवत्सर ऋतुभिश्चाक्लृपानो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु स्वाहा।

(इन्द्रस्याग्नेयमैन्द्रमग्नेर्गायत्री)।

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतासि जिन्वति स्वाहा। उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह मादयध्यै। उभा

दातारा इषां रयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वां स्वाहा। (अनुष्टुप्) अयमिह प्रथमोऽधायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः। यमप्लवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशे विशे स्वाहा। अयन्ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः। तज्जानन्नग्न आरोह ततो नो वर्धया रयिम् स्वाहा। (स्तोमो देवानां हे गायत्र्यौ)। उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते स्वाहा। अस्य प्रत्नामनुद्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः। पयः सहस्रसामृषिं स्वाहा। (अरुणेः वृहती गायत्र्यौ) कदाचनस्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नुते दानन्देवस्य पृच्यते स्वाहा।

परि ते दूळभो रथो अस्मां अश्नोतु विश्वतः। येन रक्षसि दाशुषः स्वाहा। (प्राक् स्विष्टकृतो देवतायै बलिमुपहरेत्।) सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसाविष्णोः बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां आदधे अग्नये अग्नीषोमाभ्यां। अग्नये इंद्राग्निभ्यां वा पर्वतन्त्रयागदेवताभ्यो नैवेद्यं निवेदयामि नमः। (इळामग्ने इति विश्वामित्रस्य त्रिष्टुप्)

कटोरी में रखी हुई चावल के पिण्ड को अग्नि में डलना—तेजोसि

इळामग्ने पुरुदंसं सनिङ्गोः शश्वत्तमां हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे स्वाहा। (त्वन्नो अग्ने इत्यादि मनोज्योतिः सप्तांतं द्वाविंशतिमाज्याहुतीर्जुहुयात्) शिशुशैशवयोरार्षम् (तिस्रस्त्रिष्टुभः)।

अब दूसरे के चावल के पिण्ड को नीचे का मंत्र पढ़कर अग्नि में डालें

त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।

एक और चावल के पिण्ड को नीचे का मंत्र पढ़कर अग्नि में डालें

स त्वन्नो अग्नेवसो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व णो वरुणं रराणो वीहि मृळाकं सहवो न एधि स्वाहा। अयाश्चाग्नेऽस्य-नभिशास्तश्च सत्यमित्त्वमया असि। अयासा मनसा कृतोऽयाः सन्हव्यमूहिषेऽया नो धेहि भेषजं स्वाहा। (चतस्रो) महाव्याहृतयः

प्रजापतेः। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

घी से तर्पण करे अग्नि में–

त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेण्ठोवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमु मुग्ध्यस्मत् स्वाहा। स त्वन्नो अग्नेवमो भवोति नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टो अवयक्ष्वणो वरुणं रराणो ब्रीहि मृळाकं सहवो न एधि स्वाहा।। अतिरिक्तं न्यूने जहोमि स्वाहा। समं समे जुहोमि स्वाहा। ब्रह्मणः यजुः। द्वे अनुष्टुभौ। न्यूनमतिरिक्ते जुहोमि स्वाहा। अनाज्ञातं यदा ज्ञातं यद्यज्ञे क्रियते मिथो। सर्वं तदग्ने कल्पय त्वं हि वेत्थ यथायथं स्वाहा। स्विष्टिश्च दुरिष्टिश्च ये यज्ञमभिरक्षतः। प्रयाजानन्या नः पातु यज्ञमन्याभिरक्षतु स्वाहा।

यज्ञेति रिक्तं कर्मणो यच्चहीनं अग्निष्टानि प्रविदन्नेतु कल्पयन् स्वाहा।। (ततो मनोज्योतिरिति सप्त प्रायश्चित्तानि च मनोज्योतिः त्रयस्त्रिंशत् त्रिष्टुप्) मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यस्यारिष्टं यज्ञं समि-मन्तनोतु। इमं यज्ञं सप्ततन्तु ततन्न आ देवा यन्तु सुमनस्य मानाः स्वाहा। त्रयस्त्रिंशत्तन्तवो यान्वितन्वत इमं यज्ञं स्वधया ये ददन्ति। तेषां छिद्रं प्रतिदध्मो यदत्र स्वाहायं यज्ञो अप्येतु देवान् स्वाहा। (यन्मे मनस अनुष्टुप्) यन्मे मनसश्छिद्रं यद्वाचो यच्च मे हृदः। अयं देवो बृहस्पतिः सं तत्सिञ्चतु राधसा स्वाहा। त्रिष्टुप्। विश्वकर्मा हविरिदञ्जुषाणः सन्तानैर्यज्ञं समिमन्तनोतु। या व्युष्टा उषसो याश्च निम्रुचस्ताः सन्दाधातु हविषा धृतेन स्वाहा। अयाश्चाग्नेस्य नभिशास्तश्च सत्यमित्व मया असि। अयासा मनसा कृतोऽयाः सन्हव्यमूहिषेऽया नो धेहि भेषज स्वाहा। त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेल्डोवयासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत स्वाहा। सत्वन्नो अग्नेवयो भवोति

नेदिष्ठो अस्या उषसो व्यष्टौ। अवयक्ष्वणो वरुणं रराणो वीहि मृढाकं सहवो न एधि स्वाहा। (आज्यशेषं स्रुच्याऽऽसिच्य दर्भानग्नौ प्रास्य)

अब अच्छिद्र करना—चावल और फूल हाथ में लेकर

गायत्र्यैनमः ॐ भूर्भुवः स्वः० ३।

पुरोहित की पूजा—

अद्यतावत्० अग्नेर्यविष्ठस्य सानुचरस्य आदित्यस्य अध्वर्योः ब्रह्म-विष्णुमहेश्वरदेवतानां आत्मनो० पर्वतन्त्रनिमित्तं अग्नियविष्ठ-ब्राह्मणपूजनमहंकरिष्ये ॐ कुरुष्व (पवित्रं निवार्य) अग्नये यविष्ठाय समालभनं गन्धो नमः एवमेव अर्घपुष्पादि-दक्षिणान्तं तावत्, अच्छिद्रं पूर्ववत्। एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदकतर्पणं नमः। यज्ञेतिरिक्तं कर्मणो यच्चहीनं अग्निष्टानि प्रविदन्नेतु कल्पयन् स्वाहा। (पूर्णाहुतिः)

अब सारे साधकों को 'अथ्यफुल' अर्थात् यवतिल की अंजलि देना देवी स्तोत्र पढ़ना फिर—यह मंत्र पढ़ना—**ॐ आश्रा-वितं अत्या-श्रावितं वषट्कृतं अवषट्कृतं अन नूक्तं अत्यनूक्तं च। यज्ञेतिरिक्तं कर्मणो यच्चहीनं अग्निष्टानि प्रविदन्नेतु कल्पयन् स्वाहा।।** जल से **(देवागातुविद इति श्रोत्रियाः) तर्पणम्** जल से। **देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित मनसस्पत इमं देवयज्ञं स्वाहाऽवाचे स्वाहा वातेधाः। सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्तर्षयः सप्तधाम प्रियाणि। सप्त होत्रा अनुविद्वान्सप्त- योनीरापृणस्व घृतेन। पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणोऽव सुनीथ यज्ञैः। घृतेन ते तनुं वर्धयामि सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः। सर्वेभ्यः कामेभ्यो ब्राह्मणो यद्वै किञ्च विन्दते तद्वस्वग्निर्देवानां वसुमांस्तमेव भागधेयेनोपधावति सोऽस्मै सर्वान्कामान्प्रयच्छति।** अग्नि के ईशान कोण से भस्म निकालते हुए त्र्यायुषं के लिए ..... **मानस्तोकेति भस्मना ललाटमनुलिप्य) कुत्सस्य रुद्रो जगती ॐ मा न स्तोके तनये मा न आयौ मा नो**

गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः वीरान्मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते।।

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं यद्देवानां त्र्यायुषं तन्ते अस्तु त्र्यायुषम् सारे साधकों व भक्तों को अग्निभस्म का टीका करे। अब अग्नि का विसर्जन करना। अग्नि के इर्द-गिर्द छोड़ेगये दर्भ के तिनकों को उठाकर अग्नि में डालें।

अग्निंविमुच्य। यज्ञस्य सन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै नयामि। (इति परिस्तरणानि नीत्वा अग्नौ प्रहरेन्नानुग्रहरेदित्येके) पुनः परिसमुह्य पर्युक्ष्य परिषिच्य ९ चातुष्कोष्ठैः स्तरैः परिस्तीर्य ४ (अग्नये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। सूर्याय स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। इत्थं ततोग्निं विमुच्य नयामि परिस्तरणानि नीत्वाग्नौ प्रास्येत्) ततो पुनः परि समुह्य तीन बार **पर्युक्ष्य** तीन बार)।

वैश्वदेवम्

अब श्राद्ध से पहले अन्नकण रखने हैं- रोटी के 36 टुकड़े पहले ही काट कर तैयार रखे फिर दर्भ के तीन तिनके अग्नि के पास दाईं ओर भूमि पर बिछा कर नीचे वर्णित विधि के अनुसार अन्नकणों को नं० एक से रखना आरंभ करें।

1. तक्षाय नमः
2. उपतक्षाय नमः
3. अम्बा नामासि नमस्ते
4. दुला नामासि नमस्ते
5. नितंत्री नामासि नमस्ते
6. चुपनीका नामासि नमस्ते
7. अभ्रयन्ती नामासि नमस्ते
8. मेघयन्ती नामासि नमस्ते
9. वर्षयन्ती नामासि नमस्ते
10. नन्दिनी नमस्ते
11. सुभसे नमस्ते
12. सुमङ्गलि नमस्ते
13. भद्रङ्करि नमस्ते
14. श्रियै हिरण्यकेश्यै नमः

15. वनस्पतिभ्यो नमः
16. धर्माय नमः
17. अधर्माय नमः
18. मृत्यवे नमः
19. मरुत्भ्यो नमः
20. वरुणाय नमः
21. विष्णवे नमः
22. वैश्रवणायराज्ञे नमः
23. भूतेभ्यो नमः
24. इन्द्राय नमः
25. इन्द्रपुरुषेभ्यो नमः
26. यमाय नमः
27. यमपुरुषेभ्यो नमः
28. सोमाय नमः
29. सोमपुरुषेभ्यो नमः
30. वरुणाय नमः
31. वरुणपुरुषेभ्यो नमः
32. ब्रह्मणे नमः
33. ब्रह्म पुरुषेभ्यो नमः
34. ऊर्ध्वं आकाशाय नमः
35. स्थण्डिले दिवञ्चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः
36. नक्तं चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः।

तक्षादिभ्यो षट्त्रिंशद् देवताभ्यः आचमनीयं नमः।

अब पितरों के नाम अन्नकण रखने हैं। बायां जन्यू रखकर देव अन्न-कणों के नीचे दाईं ओर दर्भ के चार तिनके जिनका सिर दक्षिण की ओर हो भूमि पर बिछावे पर तिल और पानी छिड़कें।

श्राद्ध विधिः

मिट्टी से श्राद्ध स्थान का चौरस लेपन करे। उसपर चावल के आटे की चौकोर तीन तीन रखायें दुहरी लेपित भूमि पर खींचिये। यजमान के दाहिने भाग में उच्छिष्टपिण्ड के लिए अलग साथ ही में रेखा डालिये। लेपित भूमि पर रेखाओं के अन्दर अन्दर थाली रखे। एक प्याला (खासू/कटोरी) बड़ी उसमें रखिये। पण्डित जी उत्तर की ओर मुँह करें और यजमान दक्षिण की ओर।श्राद्ध के पश्चात् कलश का अच्छिद्र करे। अन्त में बहुरूपगर्भ का पाठ करे॥

तिलोदकेन

अवनेजनं स्वधा

रोटियों के टुकड़ों पर दूध, दही, तिल, पानी, शहद और घी मिलायें, फिर बायें घुटने को जमीन पर रखकर एक टुकड़ा दाएं हाथ में रखें और अपने पितरों के नाम गोत्र सहित लें।

अपसव्येन॥

दक्षिणाग्रान्दर्भानास्तीर्य॥

समस्तमातापितृभ्यो द्वादशदैवतेभ्यः पितृभ्यो भूपृष्ठे दर्भास्तरणे तिलोदकेनाऽवनेजनं स्वधा॥

उसपर अंगूठाफिरवाना।

उशन्तस्त्वा हवामह उशन्तः समिधीमहि।
उशन्नुशत आवह पितृन्हविषे अत्तवे॥
तिलास्तोयं तथा क्षीरं दीपधूपौ अन्नंतथा।
मधुसर्पिःसमायुक्तमष्टाङ्गमन्नसम्भवम्॥
देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एवच।
नमः स्वधा च स्वाहा च नित्यमेव भवन्त्विह॥
नमः स्वधा च स्वाहा च नित्यमेव भवत्विह॥
नमः स्वधा च स्वाहा च नित्यमेव भवत्विह॥

सव्येन॥

तत्सद्ब्रह्म अद्यतावत्तिथौ आश्विनमासस्य कृष्णपक्षस्य चतुर्थ्यां अमुकवासरान्वितायां आत्मनोवाद्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मण-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं एतत्तेऽन्नं येच त्वाऽनु॥ परमगुरवे श्रीमहताबकाक शर्मणगोष्यवात्स्यायन एतत्तेऽन्नं येच त्वाऽनु॥ परमेष्ठिनेगुरवे शैवाचार्य रामदेव स्वामिन भूतउपमन्यु एतत्तेऽन्नं येच त्वाऽनु॥

सव्येन।

श्रीमद्श्रीगुरवे समालभनं गन्धो नमः।

(गन्धलेपं निवारयेत्।) अर्घो नमः। धूपो नमः। दीपो नमः।

भक्ष्यभोज्यफलमूलनैवेद्यामाऽहारादि अन्नं नमः।

तिलमधुमिश्रमुदकपात्रमाचमनीयं जलं नमः।

हिमपानं नमः। उदकतर्पणं नमः मधुपानं नमः।

तिलोदकं नमः। उदकतर्पणं नमः। हिमंहिमं रजतं रजतम्॥

तर्पणम्।

वसन्ताय नमः ग्रीष्माय नमः वर्षाभ्यो नमः शरदे नमः हेमन्ताय नमः शिशिरायनमः षड्ऋतुभ्यो नमः॥

कण्ठोपवीती॥

हन्तमनुष्येभ्यः सनकादिभ्य ऋषिभ्योऽन्नं नमः।

सनकादिभ्य ऋषिभ्यो आचमनीयं नमः॥

सव्येन॥

ॐतत्सद्ब्रह्म अद्यतावत्तथौ अश्विनमासस्य कृष्णपक्षस्य चतुर्थ्यां अमुकवासरान्वितायां आत्मनोवाद्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीमद्श्रीगुरो ईश्वरस्वरूप लक्ष्मण-स्वामिन-गौतमस्य सांवत्सरिक

श्राद्ध-निमित्तं

तथा अदरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं ब्राह्मणपूजनमर्चाहं करिष्ये।

ॐकुरुष्व।।

विश्वेशान्देवानामिदमासनंनमः।

विश्वेभ्यो देवेभ्यो ब्राह्मणं त्वा भोजयामि ॐभोजय।

विश्वन्देवानावाहयिष्यामि। ॐअवावाहय।।

यवान्विकीर्य।। (जौ दाने फेंक कर)

आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा वरप्रदाः।

ये येऽत्र विहिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते।।

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शँ योरभिस्त्रवन्तु नः।।

लाजाश्च कुंकुमं चैव सर्वौषधिसमन्वितम्।

दर्भांकुरं जलं चैव पञ्चांगं पाद्यलक्षणम्।।

भगवन्तः पाद्यं।।२।।

विश्वेभ्यो देवेभ्यः पाद्यंनमः। शेषं निवार्य।।

पुनः। शन्नो देवीरभिष्टय०।।

आपः क्षीरं कुशाग्राणि घृतं च दधि तण्डुलाः।

यवा सिद्धार्थकाश्चैवमर्घ्यमष्टांगमुच्यते।।

भगवन्तोऽर्घ्यम्।।२।।

विश्वेदेवा इदंवोऽर्घ्यं नमः। विश्वेभ्यो देवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

गन्धलेपं निवार्येत्। विश्वेभ्यो देवेभ्यः अर्घो नमः। पुष्पं नमः।

विश्वेभ्यो देवेभ्यः धूपो नमः। विश्वेभ्यो देवेभ्यः दीपो नमः।

विश्वेभ्यो देवेभ्यः वासो नमः।

विश्वेषां देवानांमर्घ्यदानाद्यर्चनविधिः सर्वः परिपूर्णोस्तु।।

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वेदेवास आगत। दाश्वासो दाशुषः सुतम्।।

उपयाम गृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः।

विश्वेदेवास आगत श्रृण्वताम इमे हवम्। इदं बर्हिनिर्षीदत।।
श्रीमद्श्रीगुरोः ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिन-गौतमस्य सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपर पाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं इदमासनं नमः।।
श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिन-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिके कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं भोजयामि। ॐभोजय।।
श्रीमद्श्रीगुरुं ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिन गौतमं सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिके कन्यार्कगत श्राद्धे आवाहयिष्यामि। ॐआवाहय।।

तिलान्विकीर्य।।

अमृता वागमृता आपोग्निर्वाचोऽमृतं तत्त्रिवृदेकधाम ताभिर्मत्प्रत्ताभिः स्वधया मदध्वमिहास्मभ्यं वसीयोऽस्तु देवा यन्मे।। श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिन-गौतमस्य सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं वृङ्क्तां माभूरन्योऽवपद्यताम्।।

अथ पाद्यम्।

लाजाश्चं कुकुमं चैव सर्वौषधिसमन्वितम्।
दर्भांकुरं जलं चैव पञ्चांगं पाद्यलक्षणम्।।
भगवन्तः पाद्यम्।।२।।
श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिके कन्यार्कगत श्राद्धे पाद्यं नमः।। पाद्यशेषं निवार्य।
आचम्य।
श्रीमद्श्रीगुरो ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिन-गौतम सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिके कन्यार्कगत श्राद्धेनिमित्तं इदं वोऽर्घ्यं नमः।।
श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिके कन्यार्कगते श्राद्धेनिमित्तं समालभनं गन्धो नमः।

गन्धलेपं निवार्य।। श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे अपरपाक्षिके कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं अर्घोनमः पुष्पं नमः।।

श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा कन्यार्कगत श्राद्धे वासो नमः।।

दक्षिणाग्रान्दर्भानास्तीर्य।

शुन्धन्तां लोकाः नेत्रस्पर्शम्।

इदमन्नमिदं देवेभ्यः श्रृतं चरुमभिघार्य।

प्रक्षाल्य तण्डुलान्पवित्रान्तर्हित नावपति।

प्रक्षाल्य मूलतो मेक्षणमवदधाति।।

अब चावल के पात्र को अग्निपर चढ़ा कर फिर नीचे उतारें-

अग्रावधिश्रित्य, तत्र चाभिघार्य, दक्षिणत उद्वास्य पुरश्चाभिघार्य।

चावल के पात्र को गन्ध लगाये **श्रियै सोमवत्यै अन्नपूर्णाभगवत्यै समालभनं गन्धो नमः।**

अर्घोनमः पुष्पंनमः।।

पात्र से अन्न निकालकर दो बार अग्नि में डाले और पढ़े **सोमाय विष्णवे स्वधा नमः। अग्नये हव्यवाहनाय स्वधानमः।।**

तूष्णीं पात्रेषु निक्षिपेत्।।

थोड़ा सा अन्न पात्रों से निकालकर हाथ से **वैश्वदेवहविषि पिन्वमानं विश्वेषु भूतेषु पृथाग्निविष्टं क्षीरं घृतंवासिच्य।।**

विश्वेभ्यो देवेभ्योऽन्नंनमः अन्नंनमः।।

इस अन्न को अंगूठे से शहद लगा दे **अन्नं मधुमधु पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखेऽमृतं जुहोमि**

ऊर्गऽस्योर्जोदा ऊर्जं मे देहि ऊर्जमयि धेहि अन्नं मे देह्यऽन्नंमयि धेहि अक्षतिरसि मा मे क्षिष्ठाअमुत्राऽमुष्मिंल्लोक इह च।।

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्य पांसुरे।।

विष्णो हव्यं रक्षस्व।।

विश्वेभ्यो देवेभ्यो यथोपस्थितं दत्तं दास्यमानेन सह सव्यञ्जनममृतमन्नं नमः।

नमो देवेभ्यः।।

ॐ तत्सद्ब्र अद्यदिनेऽद्ययथा संकल्पात्सिद्धिरस्तु।

शन्नो देवी०। विश्वेभ्यो देवेभ्योऽपोशानं नमः आचमनीयं नमः।।

ॐ भूर्भूवःस्वस्तत्सवितुः० ३।।

नारायणस्यार्षम्।।

(पुरुषसूक्तम्।।)

दोनों हाथ हिला-हिलाके पढ़ना।

नोट - विष्णु पंचक का पहला सूक्त वहां से देखें।

मधु वात ऋतायते मधु क्षिरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वौषधीः।।
मधु नक्तमुतोषसा मधुमत्पार्थिवं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमानऽस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।
ॐ मधु ३।। अन्तश्चरसि०। ब्रह्मार्पणं०।। अमृतोपस्तृरणमसि स्वाहा।।

(श्रीमद्भगवद्गीता अष्टम अध्याय और पंचदश अध्याय का पाठ भक्त जन करें।

दक्षिणाग्रान्दर्भानास्तीर्य।।

वामजानुं भूमौ निधाय।।

नोट - श्री गुरु पिण्ड के साथ आगे मूल पुरुष का पिण्ड रखना न भूलिये। तथा उस पिण्ड पर भी लेप गन्ध अर्घ पुष्प दीप धूप, आचमनीय का प्रयोग करे।

अद्य तावत्० श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं पृथिवीर्दर्विरक्षिता तृप्तिः स्वधाऽनुपदस्तां तां पृथिवीमुपजीव। श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिक श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं एष ते पिण्डः एष ते लेपः। श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय

सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक श्राद्धे वासांसि नमः
श्रीमद्श्रीबुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं समालभनं गन्धो नमः।। गन्धलेपं निवारयेत्। श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा कन्यार्कगत श्राद्धे अर्घोः नमः पुष्पं नमः।। श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिन-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा कन्यार्कगत श्राद्धे दीपः नमः धूपः नमः। श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिके कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं भक्षभोज्यफलमूलनैवेद्यमाहाराद्यऽन्नं नमः।। श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिने-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिके कन्यार्कगत श्राद्धेनिमित्तं तिलमधुमिश्र-मुदकपात्र-माचमनीयं नमः।। हिमं हिमं रजतं रजतम्।।

पवित्र निकालकर आचम्य।।

वसन्तायनमः, ग्रीष्माय नमः। वर्षाभ्यो नमः। शरदे नमः। हेमन्ताय नमः। शिशिराय नमः। षड्ऋतुभ्यः नमः।।

पुनः पवित्र लगाये थोड़ा सा अन्न विश्वेभ्यः देवेभ्यः पात्र में रखें

मा मे क्षेष्ठा बहु मे पूतमस्तु ब्राह्मणो मे जुषतामन्नमन्नम्। सहस्त्रधारममृतोदकं मे पूतमस्त्वेतत्परमे व्योमन्।।

देवतायै बलिमुपहरेत्।। (मूली नैवेद्य रखना)

सावित्राणि महागणपतेय० पितृगणदेवताभ्यो नमो नैवेद्यं निवेदयामिनमः।।

असोमपाश्च ये जीवा यज्ञभागविवर्जिता।
तेषामन्नं प्रदास्यामि विकिरं वैश्वदेवके।।

तृप्तानाचम्य।

विश्वेभ्योदेवेभ्य आचनीयं नमः।।
शन्नो देवी०।।

श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिन-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं एताभ्यो देवताभ्यः दक्षिणायै तिलहिरण्यरजतनिष्कर्णं ददानि।।

श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मणदेव-स्वामिन-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिके कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं सर्वे देवाः प्रीयन्तां प्रीता सन्तु।।

दो दर्भकाण्ड अर्घयुक्त हाथमें रखके अग्नि, कलश तथा अन्य देवों को विसर्जन (रुकसथ) करना।।

वाजे वाजे इति कुशाविसर्जनम्।।

वाजे वाजे वत वाजिने नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।
अस्य मधु पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवानैः।।
ॐभूः पुरुषं विसर्जयामि नमः। ॐभुवः पुरुषं विसर्जयामिनमः।
ॐस्वः पुरुषं विसर्जयामिनमः। ॐभूर्भुवः स्वःपुरुषं विसर्जयामिनमः।
ॐभूर्भुवःस्वस्तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयादों।।३।।

महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्व-कर्मणे द्वार्देवताभ्यः।। प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय।। (आश्वियुजे) प्राकाम्यासहिताय, योगीश्वराय, धीसहिताय, पद्मनाभाय।। दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगणयागदेवताभ्यः।। भगवते वासुदेवाय सङ्कर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय सहस्त्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय।। भवाय देवाय शर्वाय देवाय रुद्राय देवाय पशुपतये देवाय उग्राय देवाय भीमाय देवाय महादेवाय ईशानाय देवाय

ईश्वराय देवाय उमासहिताय शिवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय।। विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिङ्गलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय।। क्लींकांकुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय।। ह्रींह्रींसः सूर्याय सप्ताश्वाय अनाश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय।। भगवत्यै अमायै कामार्य चार्वङ्गचै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै श्रीज्वालाभगवत्यै व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गङ्गाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दयै वितस्ताभगवत्यै गङ्गाभगवत्ये यमुनाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्त्र-नाम्नचै दैव्यै भवान्यै इष्टदेवी श्रीज्वालामुखीभगवत्यै अभयङ्करीदेव्यै क्षेमङ्ककीभवान्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये अमुकभैरवाय इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैर्ऋतये खड्गहस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुबेराय गदाहस्ताय ईशानाय त्रिशूलहस्ताय ब्रह्मणे पद्महस्ताय विष्णवे चक्रहस्ताय अनन्तादिभ्यः अष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः।। अग्न्यादित्याभ्याम्। वरुणचन्द्रमोभ्याम्। कुमारभौमाभ्याम् विष्णुबुधाभ्याम्। इन्द्रबृहस्पतिभ्याम्। सरस्वतीशुक्राभ्याम्। प्रजापतिशनैश्चराभ्याम्। गणपतिराहुभ्याम्। रुद्रकेतुभ्याम्। ब्रह्म्यादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वरदेवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिकादेवताभ्यः सिनीवाली देवताभ्यः यामीदेवताभ्यः रौद्रीदेवताभ्यः ऐन्द्रीदेवताभ्यः वारुणीदेवताभ्यः ॐ भूर्भुवःस्वर्देवताभ्यः अखण्डब्रह्माण्डयागदेवताभ्यः।। धूर्भ्यः उपधूर्भ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो

वटुकादिभ्यः आत्मनोवाङ्मनःकायोपार्जितपापनिवार्णार्थं श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूपाय लक्ष्मणदेव-स्वामिन-गौतमाय सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिके कन्यार्कगत श्राद्धनिमित्तं यागपूजनमच्छिद्रं सम्पूर्णमस्तु।। एवमस्तु।।

यवोदक छोड़ना।।

एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकंनम उदकतर्पणंनमः।

अब अग्नि को तीन छीटें देना। फिर

अग्निं विमुञ्चामि। विमुञ्चामि। विमुञ्चामि। नयामि तीन बार पढ़कर।।

अग्नि को अब नौ छीटें दे **परिसमूहामि, पर्युक्षामि, परिषिंचामि परिसमूह्य संस्तृणामि।**

फिर चारों तरफ अग्नि के दर्भ तीलें डाले संस्तृणामि संस्तृणामि पढ़कर **विमुञ्चामि।। ३।। नयामि** तीन बार।।

ततो गोग्रासादि।। अब "चुट्" को हाथ से पकड़ कर पढ़े

याकाचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा।
खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा।।
आकाशमातृभ्योऽन्नंनमः। आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धोनमः। अर्घोनमः पुष्पनमः।।

गोभ्योऽन्नंनमः।।

अब अन्न कणों के पास बचा हुआ अन्न छोड़े -

सौरभेयाः स्वर्गहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः।
ऐन्द्रवरुणवायव्या याम्या नैर्ऋतिकाश्च ये।
वायसाः प्रतिगृह्णन्तु इमं पिण्डं मयोद्धृतम्।

काकेभ्योऽन्नंनमः।।

श्वानौ दौ शावशवलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ।
ताभ्यां पिण्डं प्रदास्यामि स्यातामेतावहिंसकौ।।

श्वभ्योऽन्नं नमः॥

अपसव्येन।

रौरवाधीनसत्त्वानां प्रेतद्वारनिवासिनाम्।
अर्थिना याचमानानामक्षय्यमुपतिष्ठतु॥

सव्येन।

शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम्।
वायसानां क्रिमीनां च शनकैर्निक्षिपेद्भुवि॥
देवा मनुश्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसङ्घाः।
प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्॥
पिपीलिकाकीटपतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः कर्मणि बद्धबद्धाः।
प्रयान्तु ते तृप्तिमिदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु॥
येषां न माता न पिता न बन्धुर्नैवान्नसिद्धिर्नतथान्नमस्ति।
तत्तृप्तयेऽन्नं भुवि दत्तमेतत्ते यान्तु तृप्तिं मुदिता भवन्तु॥
भूतानि सर्वाणि तथान्नमेतदहं च विष्णुर्न ततोऽन्यदस्ति।
तस्मादहं भूतनिकायभूतमन्नं प्रयच्छामि भवाय तेषाम्॥
चतुर्दशो भूतगणो य एष तत्र स्थिता ये खलु भूतसङ्घाः।
तृप्त्यर्थमन्नं हि मया विसृष्टं तेषामिदं ते मुदिता भवन्तु॥
इत्युच्चार्य नारे दद्यादन्नं श्रद्धासमन्विताः।
भुवि भूतोपकराय गृही सर्वाश्रयो यतः॥

अपसव्येन।

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च।
वैवस्वताय कालाय सर्वप्राणहराय च॥
औदुम्बराय नीलाय ब्रध्नाय परमेष्ठिने।
वृकोदराय भीमाय चित्रगुप्ताय वै नमः।
पाशहस्तकृतान्ताय प्रेताधिपतये नमः॥
श्री यमराज धर्मराज चित्रगुप्त तृप्तयेऽस्तु।

सव्येन। अब क्षेत्रपालों में अन्न डाले -

ये विश्वभाविनो भूता ये च तेष्वनुयायिनः।
आहरन्तु बलिं तुष्टाः प्रयच्छन्तु शुभं मम।।
योऽस्मिन्निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालः सकिङ्करः।
तस्मै निवेदयाम्यद्य बलिं पानीयसंयुतम्।।
क्षां क्षेत्राधिपतयेऽन्नं नमः रां राष्ट्रधिपतये अन्नं नमः
सर्वाभयवरप्रद मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु।।
गायत्र्यै नम ॐभूर्भुवःस्वस्त० ३।।
अग्नेः वायोः सूर्यस्य ब्राह्मणः वासुदेवस्य०
आत्मनो० श्रीमद्श्रीगुरवे ईश्वरस्वरूप लक्ष्मण-स्वामिन-गौतमास्य सांवत्सरिके श्राद्धे तथा अपरपाक्षिक कन्यार्कगत श्राद्धनिमितं कलशपूजनं क्षेत्रेश्वरपूजनं अच्छिद्रं सम्पूर्णमस्तु। एवमस्तु।।

तर्पण करना एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदकतर्पणं नमः।

अब कलश पर फूल चढ़ाये -

आज्ञां मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे।
शरीरयात्रासिद्ध्यर्थं भगवन्क्षन्तुमर्हसि।।
आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा।
भगवस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्।।
ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् कनककुण्डलवान्किरीटी
हारी हिरण्यवपुर्धृतशङ्खचक्रः।।

गुरुपूजा-आरती

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुःसाक्षान्महेश्वरः।
गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्।
शिरसा योग पीठस्थं धर्मकाकार्थ सिद्धये।।
श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दाम्यानन्दविग्रहम्।
यस्य सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते परम्।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्।
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्।।
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
शास्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपाः।।
यो गुरुः स शिवः प्रोक्तो यः शिवः स गुरुः स्मृतः।
उभयोरन्तरं नास्ति गुरोरपि शिवस्य च।।
ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।
घोर संसारकान्तार समुत्तारैकहेतवे।
नमस्ते चित्स्वरूपाय शिवाय गुरवे नमः।।
यस्य स्मरणमात्रेण ज्ञानमुत्पद्यते स्वयम्।
स एव सर्वसंपत्तिस्तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
नमस्ते गुरवे तस्मै इष्टदेवस्वरूपिणे।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम्।।
विनाशिताशेषविकल्पबुद्ध्य-
हंरूपमन्त्रार्थविकासिकाभ्याम्।
देहद्यहंकारनिवर्तिकाभ्यां

नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्।।
उद्घाटिताद्वैतमहेक्षणाभ्यां
निमीलितद्वैतविलोचनाभ्याम्।
मोहान्धकारेऽपि विरोचनाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्।।
उदीर्णरागप्रतिरोधिकाभ्यां
विलीनबोधप्रतिबोधिकाभ्याम्।
अनादिमायामलवारिकाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्।
अम्बादिरौद्रयन्तमरीचिकाभ्यां
वर्णादिसर्वाध्वविवर्त्तिकाभ्याम्।
इच्छादिदेवीततचन्द्रिकाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्।।
संसारदावानलघोरताप-
शान्त्यर्थपीयूषमहाह्रदाभ्याम्।
आप्यायितस्मर्तृ जनव्रजाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्।।
समस्तविद्योदधिसारदाभ्यां
श्रीशारिकास्वान्तसुसेविताभ्याम्।
सच्छिष्यवृन्दौः परिपूजिताभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्।।
प्रभाप्रकाशर्थधृतव्रताभ्यां
तिरस्कृतानादिमनस्तमोभ्याम्।
मुक्तिप्रदाभ्यां विभवप्रदाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्।।
दौर्भाग्यदावाग्निशिवाम्बुदाभ्यां
दूरीकृताशेषविपत्ततिभ्याम्।
कृपाकृतार्थीकृतमादृश्याभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्।।

आरती

व्याप्तचराचरभावविशेषं चिन्मयमेकमनन्तमनादिम्।
भैरवनाथमनाथशरण्यं त्वन्मयचित्ततया हृदि वंदे।।
त्वन्मयमेतदशेषमिदानीं भाति मम त्वदनुग्रहशक्त्या
त्वं च महेश! सदैव ममात्मा स्वात्ममयं मम तेन समस्तम्।।
स्वात्मनि विश्वगते त्वयि नाथे तेन न संसृतिभीतिः कथाऽस्ति।
सत्स्वपि दुर्धरदुःखविमोहत्रासाविधायिषु कर्मगणेषु।।
अन्तक! मां प्रति मा दृशमेनां क्रोधकरालतमां विदधीहि।
शङ्करसेवनचिन्तनधीरो भीषणभैरवशक्तिमयोऽस्मि।।
इत्थमुपोढभवन्मयसंविद्दीधितिदारितभूरितमिस्त्रः।
मृत्युर्यमान्तककर्मपिशाचैर्नाथ! नमोऽस्तु न जातु बिभेमि।।
प्रोदितसत्यविबोधमरीचिप्रोक्षितविश्वपदार्थसतत्त्वः।
भावपरामृतनिर्भरपूर्णे त्वय्यऽहमात्मनि निर्वृतिमेमि।।
मानसगोचरमेति यदैव क्लेशदशातनुतापविधात्री।
नाथ! तदैव मम त्वदभेदस्तोत्रपराऽमृतवृष्टिरुदेति।।
शङ्कर! सत्यमिदं व्रतदानस्नानतपो भवतापविनाशि।
तावकशास्त्रपराऽमृतचिन्ता स्यन्दयति चेतसि निर्वृतिधाराः।।
नृत्यति गायति हृष्यति गाढं संविदियं मम भैरवनाथ!
त्वां प्रियमाप्य सुदर्शनमेकं दुर्लभमन्यजनैः समयज्ञम्।।
वसुरसपौषे कृष्णदशम्यामभिनवगुप्तः स्तवमिममकरोत्।
येन विभुर्भवमरुसन्तापं शमयति झटिति जनस्य दयालुः।।
हरिरेव जगज्जगदेव हरिः हरितो जगतो नहि भिन्नमणुः।
इति यस्यमतिः परमार्थगतिः स नरो भवसागरमुत्तरति।।
अदावन्ते चिद्रस रूपं मध्येचिद्रस बुद्धद्रूपम्।
भातं भातं भारूपं स्यात् नो भातं चिन्नितरां न स्यात्।।

अस्त्यस्मिन्महसा महानिधिरसौ देवो विवस्वान् महान्
यस्मिञ्जाग्रति जाग्रतीव रजनीसुप्ता इमे जन्मिनः।
किन्त्वेका महती ततो विजयते श्रीदैशिकाङ्घ्रिद्युति-
र्यद्भासाच्छुरितं चिरन्तनतमो हित्वैव जागर्ति सत्।।

श्री गुरु आरती - जय गुरुदेव हरे जय जय गुरुदेव हरे०

ॐ अमृतेश्वरभैरवं स्वच्छन्दनाथं
श्रीकण्ठनाथं ऋषि दुर्वाससम्।
मानसपुत्रं त्र्यम्बकनाथं
आमर्दकनाथं श्रीनाथम्।
मानसपुत्रीं अर्धत्र्यम्बकाख्यां
त्र्यम्बकादित्यं सङ्गमादित्यम्।
वर्षादित्यं वरुणादित्यं
आनन्दं सोमानन्दं
उत्पलदेवं आचार्यवरं श्रीशम्भुनाथम्।
लक्ष्मणगुप्तमभिनवगुप्तं
क्षेमराजं योगराजं च।
श्रीगुरु मनकाकं शैवाचार्यं रामं
तत् शिष्यं श्रीमहताबकाकम्।
गुरु सन्ततिरूपे अवतारितं
शैव शम्भुं ईश्वरस्वरूपं च।
भैरवं रुद्रं शिवतन्त्रं आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत् पादं शङ्करं लोक शङ्करम्।
शङ्करं शङ्कराचार्यं महान्तमभिनवगुप्तम्।
शैव शङ्कर अवतारितं
ईश्वरस्वरूपं पुनः पुनः नमामि
ईश्वरस्वरूपं पुनः पुनः नमामि

ईश्वरस्वरूपं पुनः पुनः नमामि।।
उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा चोरसा
मनसा वचसा च नमस्कारं करोमि नमः।।

नमो ब्रह्मणे इति तर्पणम्।।

नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः।
नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते कृणोमि।।
इत्यतासामेव देवतानां सार्ष्टिं सायुज्यं सामीप्यं सलोकतामाप्नोति।
य एवं विद्वान् स्वाध्यायमधीते।।

अपसव्येन।

पात्राणि चालयेच्छ्राद्धे स्वयं शिष्योऽथवा सुतः न स्त्रियो नच
बालाश्च नान्यजात्यः कदाचन।।
सव्येनाचम्य।।

अथ उदकलशम्॥

अब कलश का घट अग्निकुण्ड के सामने लाकर नीचे दिये स्तोत्र का पाठ करने के बाद बहुरूपगर्भ का पाठ कलशलव देते-देते करें।

(उदकलशमुपनिधाय स्वस्त्ययनं वाचयति), **उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते! देवयन्तस्त्वेमहि उपप्रयन्तु मारुतः, सदानव इन्द्र प्राशून्भवासचा, अर्यमा यातु वृषभस्तुविष्मान्, यन्ता वसूनि विधत्ते तनूपाः सहस्राक्षो गोत्रभिद्वज्रबाहुः, अस्मासु देवो द्रविणं ददातु, येते अर्यमन्बहवो देवयानाः पन्थानो राजन्! दिव आचरन्ति, तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव।** (राष्ट्रभृतान्देवानामार्षम्) **बोधश्च मा प्रतिबोधश्च पुरस्ताद्गोपायतामऽस्वप्नश्च मानवद्राणश्च दक्षिणतो गोपायतां, गोपायमानश्च मा रक्षमाणश्च पश्चाद्गोपायतां जागृविश्च मारुन्धती चोत्तराद्गोपायतां, अनमित्रन्नो अधरागनमित्रमुदङ्कृधि, इन्द्रानमित्रन्न पश्चादऽनमित्रं पुरस्कृधि, अनमित्रैरहोभिः सचेमहि विश्वदेवा अनमित्रा न उषसः सन्तु निम्रुचः याः षडुर्वीः पञ्च प्रदिशस्ता नः पान्तु मित्रधानो मित्रे दधाता अभयं नो अस्तु, ये रात्रीमऽनुतिष्ठथ ये च भूतेषु जागृथ पशून्ये सर्वान्रक्षथ तेन आत्मसु जागृत, बोधप्रतीबोधा स्वप्नानवद्राण गोपायमान रक्षमाण जागृवेऽरुन्धतीति, ये देवास्तनूपाः स्थ ते म इह तन्वं पात बोधप्रतीबोधेत्यसौ वा आदित्यो बोधोऽग्निः, प्रतीबोधो स्वप्नानवद्राणेति चन्द्रमा वा अस्वप्नोऽयं यः पवते सो नवद्राणो गोपायमान रक्षमाणेत्यहर्वै गोपायमानो रात्री रक्षमाणो जागृव्ये, अरुन्धतीति यज्ञो वै जागृविर्दक्षिणा रुन्धत्येते वै देवा राष्ट्रभृतास्तानेवेष्टे आत्मने गोपीथाय॥ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव। मार्कण्डेयमुनेः स्वर्गवैद्ययोः स्वर्पतेस्तथा। आयुरारोग्यमैश्वयमेतन्त्रितयमस्तु ते। जीव त्वं शरदः। शतम्॥**

॥इति उदकलशस्वस्त्ययनम्॥

जय गुरुदेव!

ईश्वर आश्रम ट्रस्ट
निशात-श्रीनगर • जम्मू • दिल्ली • मुम्बई